



राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर  
( राजस्थान ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट )  
द्वारा प्रकाशित



प्रधान संपादक

पुरातत्त्वाचार्य, मुनि जिनविजय

[ सम्मान्य संचालक — राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर ]

•

प्रकाशनकर्ता

संचालक — राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर  
जयपुर ( राजस्थान )

# राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

\*

## राजस्थान सरकार द्वारा प्रस्थापित राजस्थानमें प्राचीन साहित्यके संग्रह, संरक्षण, संशोधन और प्रकाशन कार्यका महत् प्रतिष्ठान

\*

राजस्थानका सुविशाल प्रदेश, अनेकानेक शताब्दियोंसे भारतका एक हृदयस्वरूप स्थान बना हुआ होनेसे विभिन्न जनपदीय संस्कृतियोंका यह एक केन्द्रीय एवं समन्वय भूमि सा संस्थान बना हुआ है। प्राचीनतम आदिकालीन वनवासी भिल्लादि जातियोंके साथ, इतिहासयुगीन आर्य जातिके भिन्न भिन्न जनसमूहोंका यह प्रिय प्रदेश बना हुआ है। वैदिक, जैन, बौद्ध, शैव, भागवत एवं शाक्त आदि नाना प्रकारके धार्मिक तथा दार्शनिक संप्रदायोंके अनुयायी जनोंका यहां स्वस्थ और सहिष्णुतापूर्ण सन्निवेश हुआ है। कालक्रमानुसार मौर्य, शक, क्षत्रप, गुप्त, हूण, प्रतिहार, गुहिलोत, परमार, चालुक्य, चाहमान, राष्ट्रकूट आदि भिन्न भिन्न राजवंशोंकी राज्यसत्ताएं इस प्रदेशमें स्थापित होती गईं और उनके शासनकालमें यहांकी जनसंस्कृति और राष्ट्रसम्पत्ति यथेष्ट रूपमें विकसित और समुन्नत बनती रही। लोगोंकी सुख-समृद्धिके साथ विद्यावानोंकी विद्योपासना भी वैसी ही प्रगतिशील बनी रही, जिसके परिणाममें, समयानुसार, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और देश्य भाषाओंमें असंख्य ग्रन्थोंकी रचनारूप साहित्यिक समृद्धि भी इस प्रदेशमें विपुल प्रमाणमें निर्मित होती गई।

इस प्रदेशमें रहनेवाली जनताका सांस्कृतिक और आध्यात्मिक अनुराग अद्भुत रहा है, और इसके कारण राजस्थानके गांव-गांवमें आज भी नाना प्रकारके पुरातन देवस्थानों और धर्मस्थानोंका गौरवोत्पादक अस्तित्व हमें दृष्टिगोचर हो रहा है। राजस्थानीय जनताके इस प्रकारके उत्तम सांस्कृतिक-आध्यात्मिक अनुरागके कारण विद्योपासक वर्गद्वारा स्थान-स्थान पर विद्यामठों, उपाश्रयों, आश्रमों और देवमन्दिरोंमें वाङ्मयात्मक साहित्यके संग्रहरूप ज्ञानभण्डार-सरस्वतीभण्डार भी यथेष्ट परिमाणमें स्थापित थे। ऐतिहासिक उल्लेखोंके आधारसे ज्ञात होता है कि राजस्थानके अनेकानेक प्राचीन नगर-जैसे आघाट, भिन्नमाल, जाबालिपुर, सत्यपुर, सीरोही, बाहडमेर, नागौर, मेडता, जैसलमेर, सोजत, पाली, फलोदी, जोधपुर, बीकानेर, सुजानगढ, भटिंडा, रणथंभोर, मांडल, चित्तौड़, अजमेर, नराना, आभेर, मांगानेर, किसनगढ, चूरु, फतेहपुर, सीकर आदि सैकड़ों स्थानोंमें, अच्छे अच्छे ग्रन्थभण्डार विद्यमान थे। इन भण्डारोंमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और देश्य भाषाओंमें रचे गये हजारों ग्रन्थोंकी हस्तलिखित मूल्यवान् पोथियां संगृहीत थीं। इनमें से अब केवल जैसलमेर जैसे कुछ-एक स्थानोंके ग्रन्थभण्डार ही किसी प्रकार सुरक्षित रह पाये हैं। मुसलमानों और इंग्रेजों जैसे विदेशीय राज्यलोलुपोंके संहारात्मक आक्रमणोंके कारण, हमारी वह प्राचीन साहित्य-सम्पत्ति बहुत कुछ नष्ट हो गई। जो कुछ बची-खुची थी वह भी पिछले १००-१५० वर्षोंके अन्दर, राजस्थानसे बहार-काशी, कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, बंगलोर, पूना, वडोदा, अहमदाबाद आदि स्थानोंमें स्थापित नूतन साहित्यिक संस्थाओंके संप्रहोंमें बड़ी तादादमें जाती रही है। और तदुपरान्त युरोप एवं अमेरिकाके भिन्न भिन्न ग्रन्थालयोंमें भी हजारों ग्रन्थ राजस्थानसे पहुंचते रहे हैं। इस प्रकार यद्यपि राजस्थानका प्राचीन साहित्य भण्डार एक प्रकारसे अब खाली हो गया है; तथापि, खोज करने पर, अब भी हजारों ग्रन्थ यत्रतत्र उपलब्ध हो रहे हैं जो राजस्थानके लिये नितान्त अमूल्य निधि स्वरूप हो कर अत्यन्त ही सुरक्षणीय एवं संप्रहणीय हैं।

हर्ष और सन्तोषका विषय है कि राजस्थान सरकारने हमारी विनम्र प्रेरणासे प्रेरित हो कर, इस राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर ( राजस्थान ओरिएण्टल रिमर्च इन्स्टीट्यूट ) की स्थापना की है और इसके द्वारा राजस्थानके अवशिष्ट प्राचीन ज्ञानभण्डारकी सुरक्षा करनेका समुचित कार्य प्रारंभ किया है। इस कार्यालय द्वारा राजस्थानके गांव-गांवमें ज्ञात होने वाले ग्रंथोंकी खोज की जा रही है और जहां कहींने एवं जिस किसीके पास उपयोगी ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं उनको खरीद कर सुरक्षित रखनेका प्रबन्ध किया जा रहा है। सन् १९५० में इस प्रतिष्ठानकी प्रायोगिक स्थापना की गई थी, और अब पिछले वर्ष, १९५६ के प्रारंभसे, सरकारने इसको स्थायी रूप दे दिया है और इसका कार्यक्षेत्र भी कुछ विस्तृत बनाया गया है। अब तकके प्रायोगिक कार्यके परिणाममें भी इस प्रतिष्ठानमें प्रायः १०००० जितने पुरातन हस्तलिखित ग्रन्थोंका एक अच्छा मूल्यवान् संग्रह संचित हो चुका है। आशा है कि भविष्यमें यह कार्य और भी अधिक वेग धारण करता जायगा और दिन-प्रति-दिन अधिकाधिक उन्नति करता जायगा।

\*

जिस प्रकार उक्त रूपसे इस प्रतिष्ठानके प्रस्थापित करनेका एक उद्देश्य राजस्थानकी प्राचीन साहित्यिक संपत्तिका संरक्षण करनेका है वैसा ही अन्य उद्देश्य इस साहित्यनिधिके बहुमूल्य रत्नस्वरूप ग्रन्थोंको प्रकाशमें लानेका भी है। राजस्थानमें उक्त रूपमें जो प्राचीन ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं, उनमें सैंकड़ों ग्रन्थ तो ऐसे हैं जो अभी तक प्रकाशमें नहीं आये हैं; और सैंकड़ों ही ऐसे हैं जिनके नाम तक भी अभी तक विद्वानोंको ज्ञात नहीं है। यह सब कोई जानते हैं कि इन ग्रन्थोंमें हमारे राष्ट्रके प्राचीन सांस्कृतिक इतिहासकी विपुल साधन-सामग्री छिपी पड़ी है। हमारे पूर्वज हजारों वर्षों तक जो ज्ञानार्जन करते रहे उसका निष्कर्ष और नवनीत नीकाल नीकाल कर, वे अपनी भावी सन्ततिके उपयोगके लिये इन ग्रन्थात्मक कृतियोंमें संचित करते गये। व्याकरण, कोष, काव्य, नाटक, अलंकार, छन्द, ज्योतिष, वैद्यक, कामविज्ञान, अर्थशास्त्र, शिल्पकला आदि लौकिक विद्याओंके ज्ञानके साथ श्रुति, स्मृति, पुराण, धर्मसूत्र, न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, जैन, बौद्ध, शाक्त, तंत्र, मंत्र आदि धार्मिक, दार्शनिक एवं आध्यात्मिक विद्याओंके रहस्य भी इन ग्रन्थोंमें नाना स्वरूपोंमें ग्रथित किये हुए हैं। इसी प्रकार, युग-युगमें होने वाले अनेक शूर-वीर, दानी-ज्ञानी, सन्त-महन्त, त्यागी-वैरागी, भक्त-विरक्त आदि गुण-विशिष्ट नर-नारी जनोंके जीवन और कार्योंके विविध वर्णन - चित्रण भी इन्हीं ग्रन्थोंमें अन्तर्निहित हैं। अर्थात् हमारे राष्ट्रकी सर्व प्रकारकी गौरव-गरिमाविषयक कथा-गाथाकी रक्षा करने वाला हमारा यही एकमात्र प्राचीन साहित्यसंग्रह है। इसीके प्रकाशसे संसारमें भारतका गुरुपद ज्ञात हुआ और स्थापित हुआ है। यद्यपि आज तक इनमेंसे हजारों ही प्राचीन ग्रन्थ, प्रकाशमें आ चुके हैं, फिर भी हजारों ही ऐसे ग्रन्थ और बाकी हैं जो अन्धकारके तलघरमें दटे पड़े हैं। इनका उद्धार करना और इन्हें प्रकाशमें रखना यह अब इस नूतन जीवन प्राप्त नव्य भारतके प्रत्येक व्यक्ति और संस्थाका परम कर्तव्य है। इसी कर्तव्यको लक्ष्य कर, इस संस्था द्वारा 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' के प्रकाशनका आयोजन भी किया गया है। इसके द्वारा संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और देश्य भाषाओंमें निबद्ध विविध विषयोंके प्राचीन ग्रन्थ, तज्ज्ञ एवं सुयोग्य विद्वानोंसे संशोधित और संपादित हो कर प्रकाशित किये जा रहे हैं। अब तक कोई छोटे बड़े २० ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं और प्रायः ३० से अधिक ग्रन्थ प्रेसोंमें छप रहे हैं। राजस्थान सरकार वर्तमानमें, इस कार्यके लिये प्रतिवर्ष २०००० रुपये खर्च कर रही है - पर हमारी कामना है कि भविष्यमें यह रकम बढ़ाई जाय और तदनुसार अधिक संख्यामें इन प्राचीन ग्रन्थोंका समुद्धार और प्रकाशन कार्य किया जाय।

साहित्यका प्रकाश ही प्रजाके अज्ञानान्धकारको नष्ट कर, उसे दिव्यताका दर्शन कराता है।

माघ शुक्ला १४, वि० सं० २०१३. }  
( जीवनके ७० वें वर्षका प्रथम दिन ) }

मुनि जिन विजय

## प्रकाशित ग्रन्थ

### संस्कृत

- १ प्रमाण मञ्जरी - तार्किक चूडामणि सर्वदेवाचार्य प्रणीत। तीन व्याख्याओंसे समलंकृत।
- २ यन्त्रराजरचना - जयपुर नरेश महाराज सवाई जयसिंह समारचित।
- ३ महर्षिकुलवैभवम् - विद्यावाचस्पति स्व० श्रीमधुसूदन ओझाविरचित।
- ४ तर्कसंग्रह-फक्किता - पं० क्षमाकल्याणकृत।
- ५ कारकसंबन्धोद्योत - पं० रमसनन्दिकृत।
- ६ वृत्तिदीपिका - पं० मौलिकृष्णभट्ट कृत।
- ७ शब्दरत्नप्रदीप - संक्षिप्त संस्कृत शब्दकोप।
- ८ कृष्णगीति - कवि सोमनाथकृत गीतिकाव्य।
- ९ शृंगारहारावलि - हर्षकवि विरचित।
- १० चक्रपाणिविजयमहाकाव्य - पं० लक्ष्मीधरभट्ट रचित।
- ११ राजविनोद काव्य - कवि उदयराम रचित।
- १२ नृत्तसंग्रह - नाट्यविषयक पठनीय ग्रन्थ।
- १३ नृत्यरत्नकोश - महाराणा कुम्भकर्ण प्रणीत।
- १४ उक्तिरत्नाकर - पण्डित साधुसुन्दरगणी कृत।
- १५ कविदर्पण - प्राकृत छन्दोरचनात्मक ग्रन्थ।
- १६ वृत्तजातिसमुच्चय - विरहाङ्क कवि कृत।
- १७ ईश्वरविलास महाकाव्य - पं० कृष्णभट्ट-कविकृत।

### राजस्थानी भाषा ग्रन्थ

- १ कान्हड दे प्रबन्ध - कवि पद्मनाभ रचित।
- २ क्यामखां रासा - मुस्लिम कवि जानकृत।
- ३ लावारासा - चारणकविया गोपालदानकृत।

### प्रेसोंमें छप रहे ग्रन्थ

#### (क) संस्कृत ग्रन्थ

- १ त्रिपुराभारती - लघुपण्डित
- २ शकुनप्रदीप - लावण्य शर्मा

- ३ करुणामृतप्रपा - ठकुर सोमेश्वर
- ४ बालशिक्षाव्याकरण - ठकुर संग्रामसिंह
- ५ पदार्थरत्नमञ्जूषा - पं० कृष्णमिश्र
- ६ काव्यप्रकाश, संकेत - भट्ट सोमेश्वर
- ७ वसन्तविलास - फागु काव्य
- ८ नृत्यरत्नकोश - राजाधिराज कुम्भकर्ण देव
- ९ नन्दोपाख्यान - संस्कृत और राजस्थानी
- १० रत्नकोश - विविधवस्तुसंग्रह विचारात्मक
- ११ चान्द्रव्याकरणम् - आचार्य चन्द्रगोमि
- १२ स्वयंभू छंद - स्वयंभू कवि
- १३ प्राकृतानन्द - कवि रघुनाथ
- १४ मुग्धावबोध आदि औक्तिक संग्रह
- १५ कविकौस्तुभ - पं० रघुनाथ मनोहर
- १६ दुर्गापुष्पांजलि - पं० दुर्गाप्रसादजी
- १७ दशकण्ठवधम् - "
- १८ कर्णकुतूहल नाटक
- १९ कृष्णलीलामृत काव्य

### राजस्थानी भाषाग्रन्थ

- १ बांकीदासरी बातें - चारणकवि बांकीदास
- २ मुंहता नैणसीरी ख्यात - जोधपुरके मुंहता नैणसी लिखित
- ३ गोरा बादल-पदमिणी चउपई - जैन यति कवि हेमरतन कृत
- ४ राठोड वंशरी विगत - राठोडोंके इतिहासकी कथाएं।
- ५ राजस्थानी साहित्य संग्रह - राजस्थानी भाषा में लिखित विविध वृत्तान्त।
- ६ दाढाला एकल गिडरी बात - राजस्थानी भाषाकी एक सरस प्रहसनात्मक रचना।
- ७ सुजान खंवत - कवि उदयराम रचित
- ८ चन्द्रवंशावलि - कवि मतिराम कृत
- ९ राजस्थानी दूहा संग्रह

इन ग्रन्थोंके अतिरिक्त अनेकानेक संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन राजस्थानी - हिन्दी भाषामें रचे गये ग्रन्थोंका संशोधन-संपादन आदि कार्य किया जा रहा है।

\*

इसी तरह राष्ट्र - भाषा हिन्दीमें भी उच्च कोटिके ग्रन्थोंके प्रकाशनका आयोजन चल रहा है।



# राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान संपादक—पुरातत्त्वाचार्य, जिनविजय मुनि

[ सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर ]

\*

साधुसुन्दर गणी विरचित

## उक्ति रत्नाकर

ॐ

\*\*\*\*\* प्रकाशक \*\*\*\*\*

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

जयपुर (राजस्थान)

## उक्तिरत्नाकर - अनुक्रम

१ उक्तिरत्नाकर	पृ. १-४५
२ अज्ञात विद्वत्कर्तृक उक्तीयक	” ४६-५८
३ अज्ञात विद्वत्संगृहीतानि पुरातन औक्तिक पदानि	” ५९-८२
४ उक्तिरत्नाकरादि अन्तर्गत शब्दानुक्रम	” ८३-११८



## प्रस्तावना

४

स्व-संपादित 'सिंधी जैन ग्रन्थमाला'में हमने एक 'उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण' नामक ग्रन्थ प्रकाशित किया है, जिसकी भूमिकामें निम्न प्रकारका उल्लेख किया है — "महात्मा गांधीजीके मुख्य नेतृत्वमें स्थापित अहमदावादके राष्ट्रीय गुजरात विद्यापीठके 'पुरातत्त्व मन्दिर' नामक विशिष्ट विभागके आचार्यपद पर, सर्व प्रथम, जब मेरी विशिष्ट नियुक्ति हुई, तभीसे मैंने औक्तिक प्रकारके साहित्यका संकलन करना निश्चित किया था और यथाशक्य उसको प्रकाशमें लानेका प्रयत्न चलाया था। ई. स. १९२३-२४ के अरसेमें, मैं एक बार पाटण गया और वहाँसे कुछ अन्यान्य औक्तिक प्रकरणोंके प्राचीन आदर्श प्राप्त किये। उक्त गुजरात पुरातत्त्व मन्दिर के तत्त्वावधानमें. संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश आदि भारतीय प्राचीन भाषाओंके, उच्चकोटीय अध्ययनके साथ, गुजराती भाषाके प्राचीन इतिहास और साहित्यके अध्ययनकी भी विशेष व्यवस्था की गई थी। उसके पाठ्यक्रममें आवश्यक ऐसे एक सन्दर्भ ग्रन्थका संकलन करनेकी दृष्टिसे 'प्राचीन गुजराती गद्य संदर्भ' के नामसे एक संग्रहात्मक ग्रन्थ मैंने तैयार करना प्रारंभ किया, जिसमें वि. सं. १३०० से ले कर १६०० तकके ३०० वर्षोंमें लिखे गये, प्राचीन गुजराती ( अर्थात् पश्चिमी-राजस्थानी ) भाषाके चुने हुए उद्धरणोंका एक अच्छा प्रमाणभूत संग्रह संकलित करनेका उद्देश्य रखा था। इसके लिये मैंने बहुत कुछ आधारभूत सामग्री एकत्र करनी शुरू की। पाटण, अहमदावाद आदिके भण्डारोंमें प्राप्त प्राचीन ताडपत्रीय एवं वैसी ही प्राचीन कागजीय पुस्तकोंमें, यत्र तत्र उपलब्ध फुटकल गद्य उद्धरणोंके साथ, कुछ स्वतंत्र प्रकरणरूप कृतियोंका भी मैंने संग्रह किया।"—इत्यादि।

इन प्रकरणरूप कृतियोंमें, प्रस्तुत 'उक्ति रत्नाकर' भी एक थी, जो अब इस प्रकार, 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' द्वारा प्रकाशित हो रही है।

इस ग्रन्थकी सर्वप्रथम प्रतिलिपि पाटणके भण्डारमेंसे प्राप्त प्राचीन पोथी परसे उसी समय कराई गई थी<sup>1</sup>। इसका मुद्रण कार्य प्रारंभ करनेका निश्चय होने पर बीकानेरके जैन भण्डारमेंसे भी एक अन्य प्रति, श्रीयुत अगर चन्दजी नाहटा द्वारा प्राप्त हुई। अन्यान्य ग्रन्थसंग्रहोंमें भी इस ग्रन्थकी प्रतियां उपलब्ध होती हैं, अतः ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक प्रसिद्ध एवं पठनोपयोगी ग्रन्थ रहा है।

इस ग्रन्थके कर्ता साधुसुन्दर नामक जैन यतिजन हैं जो बहुत करके राजस्थान निवासी थे। इनके गुरु साधुकीर्ति पाठक-पदधारी यतिवर्ग्र्य थे जो बहुत बड़े पण्डित और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। प्रस्तुत ग्रन्थकारने अपने गुरुके विषयमें, ग्रन्थान्तकी प्रशस्तिमें कहा है कि 'इनने यवनपति ( बादशाह अकबर ) की सभामें, अन्यान्य पन्थोंके पंडितोंके

1 इस प्रतिके अन्तमें निम्न प्रकार लिपिकारका परिचायक उल्लेख किया हुआ है—  
'संवत् १७५० वर्षे आपाढ सुदि ८ दिने बुधवारे पं. कनकवल्लभ लिपीकृतम्। शिष्य अमीचन्द शिष्य कृष्णानै लिपिकृत दत्तम्। श्रीरस्तु लेखकपाठकयोः।'



“लोकभाषामें प्रचलित अधिक शब्द, वास्तवमें तो प्रायः संस्कृत भाषाके ही मूल शब्द हैं, परंतु पामरजन अर्थात् अपठित एवं अशिक्षित जनोंके अशुद्ध वाग्व्यापारके कारणसे, उन शब्दोंके वर्णों, अक्षरों आदिमें परिवर्तन हो हो कर, उनके मूल स्वरूपका भ्रंश हो गया अर्थात् वे शब्द अपने असली रूपसे भ्रष्ट हो गये । इसलिये इस लोक-व्यवहारमें प्रचलित शब्दस्वरूपवाली भाषाको पण्डित दामोदरने अपभ्रंश या अपभ्रष्ट नामसे उल्लिखित किया है; और किस तरह इन अपभ्रष्ट शब्दप्रयोगोंका, संस्कृतके व्याकरणनिबद्ध क्रिया, कारक, कर्म आदि उक्ति प्रकारोंके साथ, संबन्ध रहा है, उसका स्वरूपप्रदर्शन, इस ग्रन्थमें किया है । इसीलिये इसका दूसरा नाम ‘प्रयोग प्रकाश’ ऐसा भी रखा गया है ।”

“ग्रन्थमें प्रतिपादित इस महत्त्वके विषय पर यहां अधिक लिखनेका अवकाश नहीं है । सद्भाग्यसे इस विषयके प्रतिपादक, इसी शैलिमें लिखे गये, अनेक छोटे बड़े ग्रन्थ, हमें राजस्थान एवं गुजरातके प्राचीन ग्रन्थभण्डारोंमें से प्राप्त हुए हैं और उनके संग्रहात्मक ऐसे दो-तीन संग्रह-ग्रन्थ हम और प्रकाशित करना चाहते हैं । इनमेंसे, ‘उक्तिरत्नाकर’ आदि, ऐसी ही ४-५ कृतियोंका संग्रहस्वरूप, एक ग्रन्थ तो, राजस्थान सरकार द्वारा प्रस्थापित एवं प्रकाशित तथा हमारे द्वारा संचालित एवं संपादित ‘राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला’में शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है ।”

“इस प्रकारकी उक्तिव्यक्ति विषयक भिन्न भिन्न कृतियोंका और उनमें ग्रथित भाषा विषयक सामग्रीका विस्तृत विचार, हम किसी अन्यतम ग्रन्थमें करना चाहते हैं । हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, बंगाली आदि भारतीय-आर्यकुलीन-देशभाषाओंके विकास-क्रमके अध्ययनकी दृष्टिसे यह औक्तिक-साहित्य-संग्रह बहुत उपयोगी सामग्री प्रस्तुत करेगा ।” — इत्यादि

उपर दिये गये उद्धरणमें जिन ४-५ कृतियोंका निर्देश सूचित किया गया है उनमें से प्रस्तुत संग्रहमें तो मुख्यतया साधुसुन्दर रचित ‘उक्तिरत्नाकर’ ही मुद्रित है । अन्य मुख्य रचनाएं, इसके द्वितीय भागके रूपमें छप रही हैं, जिनमें कुलमण्डन सूरिका बनाया हुआ ‘मुग्धावबोध-औक्तिक’ आदि संगृहीत हैं ।

साधुसुन्दर गणीने अपनी प्रस्तुत रचनामें, प्रारंभमें संस्कृत व्याकरणके षट्कारक विषयक प्रकरणका निरूपण किया है । संस्कृत भाषाका प्रारंभिक परिचय प्राप्त करने-वालेके लिये यह जानकारी प्रथम आवश्यक होती है कि कौन सी विभक्तिका प्रयोग किस अर्थमें किया जाता है । अतः प्राथमिक विद्यार्थियोंको विभक्तिके ज्ञानके साथ ही कारक अर्थोंका ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक रहता है । इस लिये इस प्रकारके जो औक्तिक प्रकरण रचे गये हैं उनमें प्रायः प्रथम कारक अर्थोंका निरूपण किया हुआ होता है । प्रस्तुत उक्तिरत्नाकरमें भी उसी शैली अनुसार प्रारंभमें कारक प्रकरण लिखा

गया है। बादमें प्रायः २४०० जितने देश्य शब्द और उनके संस्कृत प्रतिरूप बतलाने वाले शब्दोंका विशाल शब्दसंग्रह दिया गया है।

प्रस्तुत संग्रहमें उक्तिरत्नाकरके बाद दो अन्य ऐसी ही पुरातन रचनाएं दी गई हैं। इनमें पहली रचनाका नाम सामान्य रूपसे 'उत्कीयक' ऐसा लिखा मिला है और दूसरी रचनाका नाम 'औक्तिकपदानि' ऐसा लिखा मिला है। इन रचनाओंके कर्ता या संग्राहकके नाम नहीं उपलब्ध हुए। जिन प्राचीन प्रतियों परसे इनका मुद्रण किया गया है वे प्रतियां विशेष प्राचीन हैं। अर्थात् उक्तिरत्नाकरके कर्ताके समयसे भी पूर्व लिखी गई ज्ञात होती हैं। इस प्रकारके और भी अनेक फुटकर संग्रह हमें प्राप्त हुए हैं जिनका प्रकाशन द्वितीय भागमें करना सोचा गया है। इन रचनाओंमें प्रतिपाद्य विषय तो एक ही प्रकारका होता है पर संकलन करनेकी शैली पृथक् पृथक् होती है।

इसमें दी गई 'उत्कीयक' नामक रचनामें प्रारंभमें 'वर्तमानकालिक' धातुरूप दिये हैं। उसके बाद कृदन्तसाधित शब्द दिये हैं। तदनन्तर 'तव्य' प्रत्ययान्त शब्दरूप दिये गये हैं। बादमें सर्वनाम आदि शब्दोंका संग्रह दिया गया है। इसमें 'कारकविचार' प्रकरण नहीं दिया गया।

'औक्तिकपदानि' नामक रचनामें, प्रारंभमें 'कारकविचार' आलेखित किया गया है। साधुसुन्दर गणीने अपनी रचनामें 'कारकविचार' शुद्ध संस्कृतमें लिखा है तब इस रचनामें यह प्रकरण अपनी देश्य भाषामें लिखा गया है। कारकविचारके बाद, इसमें वर्तमान, भूत, भविष्य आदि 'कालविचार' दिया गया है। बादमें शब्दसंग्रह है। तदनन्तर 'क्रियावचन' दिये गये हैं। फिर 'कर्मणिवाक्य' प्रयोग हैं। इसके अनन्तर विभक्ति-अर्थ और उनके वाक्य-प्रयोग दिये हैं। फिर 'समासप्रकरण' दिया गया है और इसके बाद तद्धित शब्दोंका विचार किया गया है। अन्तमें क्रियाओंके प्रेरक रूप और सनन्त रूपोंका दिग्दर्शन कराया गया है। इस प्रकार इस रचनामें व्याकरणके मुख्य मुख्य सभी विषयोंका विवेचन दिया गया है।

\*

हमारे राष्ट्रके किसी भी प्रदेशकी मातृभाषा संस्कृत नहीं है। मातृभाषाएं तो तत्तत् प्रादेशिक भाषाएं हैं, जिनका स्वरूप वर्तमानमें संस्कृतसे बहुत कुछ भिन्न मालूम होता है। मनुष्यके ज्ञानके विकासका क्रम सर्व प्रथम मातृभाषा द्वारा शुरू होता है। मातृभाषा द्वारा ही प्राप्त शब्दज्ञानके आधार पर, मनुष्य अन्यान्य भाषाओंका ज्ञान प्राप्त करता रहता है, और उनके द्वारा वह अपनी ज्ञानसमृद्धि बढ़ाता जाता है। हमारे देशकी सर्व प्रकारकी प्राचीन ज्ञानसमृद्धि, संस्कृत वाङ्मयरूप भंडारमें निहित है। हजारों वर्षोंसे हमारे पूर्वज अपने अनुभव और बुद्धिबलसे प्राप्त समग्र ज्ञानसमृद्धिको, इसी संस्कृत वाङ्मयके भण्डारमें अर्पण करते रहे हैं और इस लिये हमारा यह वाङ्मय भण्डार, संसारके अन्यान्य भाषाकीय प्राचीन ज्ञानभण्डारोंकी अपेक्षा, सबसे



पण्डितप्रवर - श्रीसाधुसुन्दरगणि - कृत

# उक्तिरत्नाकर

\*

ॐ ऐं नमः ॐ

स्मृत्वा श्रीभारतीं देवीं गुरुपादांश्च भक्तितः ।

उक्तीनां सङ्ग्रहं वक्ष्ये स्वान्ययोर्हितहेतवे ॥ १ ॥

तावत् तदुपयोगिविभक्तिस्वरूपं निरूप्यते । तत्र कर्तृकर्मकरण-  
सम्प्रदानापादानाधाररूपाणि षट् कारकाणि । सप्तमः सम्बन्धः । उक्ता-  
नुक्तभेदेन द्विधा षट् कारकाणि । तत्रोक्तेषु प्रथमैव विभक्तिः । अनुक्ते-  
ष्वनुक्रमेणैताः स्युः । कर्मणि द्वितीया । कर्तृ-करणयोस्तृतीया । सम्प्रदाने  
चतुर्थी । अपादाने पञ्चमी । आधारे सप्तमी । सम्बन्धे षष्ठी । इति  
संक्षेपेण विभक्तयः कथिताः । विस्तरोऽग्रेऽभिधास्यते ।

करोतीति कर्ता । स त्रिविधः - स्वतन्त्रः, हेतुकर्ता, कर्मकर्ता च । यो  
न परैः प्रेर्यते स स्वतन्त्रकर्ता । यथा गौर्गच्छति । योऽन्यं कारयति स हेतु-  
कर्ताच्यते । अनेककर्तृके मुख्यं कर्तारं प्रत्ययो वक्ति । यथा - राजा सूपकारे-  
णौदनं पाचयति । यो नापरैः प्रयुक्तः परान् प्रेरयति स मुख्यः । यथा - राजा  
चैत्रेण श्रियं पोषयति । हेतुकर्ता त्रिधा - प्रेषकः, अध्येषकः, आनुकूल्य-  
भागी च । यः प्रभुत्वेन प्रेरयति स प्रेषकः । यथा - राजा सेवकैः संग्रामं  
कारयति । यः सत्कारपूर्वकं प्रेरयति सोऽध्येषकः । यथा - श्रद्धावान् पुमान्  
गुरुं भोजयति । यो न प्रेषते नाध्येषते सोऽनुकूलभागी । चेतनाचेतन-  
त्वेनानुकूलभागी द्विधा । चेतनो यथा - पुत्रो जनकं हर्षयति । अचेतनो  
यथा - कारीषोऽग्निर्ब्राह्मणमध्यापयति । यदा कर्ता स्वव्यापारं कर्षणया-  
रोपयति तदा कर्मकर्ता । यथा - पच्यते शालयः स्वयमेव । अत्र प्रस्तावाद-  
नुक्तभेदोऽपि कथ्यते । यथा - छात्रवृन्देन सरस्वती बन्धते ।

यत् क्रियते तत् कर्म । एतदनेकधा । निर्वर्त्य - विकार्य - प्राप्यभेदेन  
त्रिधा । इष्टानिष्टानुभयभेदात् पुनस्त्रिधा । तथा अकथितं कर्म कर्तृकर्म  
च । यत्पूर्वमसज्जायते जन्मना वा प्रकाश्यते तन्निर्वर्त्यम् । असज्जायते यथा  
कारुः कटं करोति । जन्मना प्रकाश्यते यथा - माता सुतं सूते । यत् सतो  
गुणान्तराधानात् प्रकृत्युच्छेदतो वा विकारं प्रतिपद्यते तद्विकार्यम् ।

अथ करणम् । येन क्रियते तत् करणम् । तद् द्विधा - बाह्यमाभ्यन्तरं च । बाह्यं यथा - दात्रेण व्रीहीन् लुनाति । आभ्यन्तरं यथा - मनसा मेरुं गच्छति । अस्य करणस्य कारकान्तरतः स्वकाङ्क्षया प्रकर्षो न । यथा - दात्रैः शस्त्रैर्नखैर्वह्यो लूनाः । तद्बहुधाऽपि । एष रुद्राय पशुं ददातीत्यर्थे कर्मणः करणसंज्ञा संप्रदानं च कर्म स्यात् । एष पशुना रुद्रं यजति । तथा समविषमयोः कर्मत्वे करणं भवति । यथा समेन धावत्यश्वः । विषमेण धावत्यश्वः ।

अथ संप्रदानम् । तत् संप्रदानं यस्मै पूजानुग्रहकाम्यया दित्सा । संप्रदानं त्रिधा - अनुमन्तृ प्रेरकं अनिराकर्तृ चेति । ददामीति वचनं श्रुत्वा एवं कुर्वित्यनुमन्यते तदनुमन्तृ । यथा - यजमानो गुरवे गां ददाति । यच्च देहीत्युक्त्वा दातारं प्रेरयति तत् प्रेरकम् । यथा - द्विजाय गां देहि । यन्नानुमन्यते नापि प्रेरयति किन्तु मूकवदास्ते तद् अनिराकर्तृ । यथा - देवाय हेम दत्ते, राज्ञो दण्डं दत्ते, घ्नतः पृष्टिं दत्ते । अत्र दित्सा नास्ति । भद्रस्य शतं दत्ते । अत्र च नार्चानुग्रहकाम्यया दानं तेन न सम्प्रदानम् । तदेव संप्रदानं यत् त्यागभावयुक्तं स्यात् । दीयमानेन संयोगाद् यदि स्वामित्वं लभते । रजकस्य वस्त्रं दत्ते । अत्र त्यागाभावस्तेन न सम्प्रदानम् । द्विजस्य भाटकेन गृहं दत्ते । अत्र स्वामिता न । गृहस्य स्वामी द्विजो न भवतीति न सम्प्रदानम् ।

अथापादानम् । यस्मादपायस्तदपादानम् । तदचलं चलं च । अचलं यथा - वृक्षात् पर्णं पतति । चलं यथा - धावतोऽश्वादपतदश्ववारः ।

अथाधिकरणम् । आधरोऽधिकरणम् । तत् षट्प्रकारम् । वैषयिकम् १, औपश्लेषिकम् २, आभिव्यापकम् ३, नैमित्तिकम् ४ सामीप्यकम् ५, औपचारिकम् ६, चेति । विषयो नान्यत्र भावः । यथा - दिवि देवाः सन्ति । यत्रैकदेशसंयोगः स उपश्लेषः । यथा - चैत्रः कटे आस्ते; गृही गृहे तिष्ठति । यत्र सर्वाङ्गसंयोगस्तदभिव्यापकम् । यथा - तिलेषु तैलम्, दधि घृतम् । यस्य यन्निमित्तं तन्नैमित्तिकम् । यथा - शूरो युद्धे संनह्यते, व्याधो दन्तयोः कुञ्जरं हन्ति । समीपमेव सामीप्यम् । यथा - गङ्गायां घोषः, गङ्गासमीपे घोष इत्यर्थः । शकुनिराकाशे याति, भक्तिमान् गुरौ नमति । यदुपचाराद्भवेत्तदौपचारिकम् । यथा - अङ्गुल्यग्रे करिशतमास्ते ।

अस्यायमिति सम्बन्धः । षष्ठ्युत्पत्तिस्तु मुख्यात् । तस्माद्विवक्षया सर्वाणि कारकाणि भवन्ति । स्वस्वामित्वादिभेदेन षष्ठ्यधिकशतमर्थाः

सन्ति । स्वस्वामित्वे यथा - राजा भूमेः पतिः, अयं गवां स्वामी ।  
जन्यजनकसम्बन्धे यथा - पार्वतीपरमेश्वरौ जगतः पितरौ ।  
वध्यवधकभावे यथा - हरिः कंसस्य हिंसकः ।  
भोज्यभोजकभावे यथा - मयूरोऽहेर्भोक्ता ।  
धार्यधारकभावे यथा - भृत्यश्छत्रस्य धारकः ।

उक्ता अनुक्तविभक्तयः ।

अथोक्तविभक्तीराह । तत्रोक्तः कर्त्ता यथा - जिनो जयति । कारको  
देवदत्तः । वैयाकरणः पुरुषः । कृतप्रणामो जनः । एवमादिष्वारख्यात-  
कृत्-तद्धितप्रत्ययानां समासस्य च कर्त्तरि विहितत्वादुक्तः कर्त्तृत्युच्यते ।  
उक्ते कर्त्तरि प्रथमैवेति न्यायात्, प्रथमा । १ ।

‘जैनेन जीवदया क्रियते’ इत्युक्तं कर्म । २ ।

‘स्नात्यनेनेति स्नानीयं चूर्णम्’ इत्युक्तं करणम् । ३ ।

‘दीयतेऽस्मै इति दानीयो ब्राह्मणः, एवं दक्षिणीयो ब्राह्मणः’ इह  
संप्रदाने ईयप्रत्ययः, एवं ‘दत्तभोजनोऽतिथिः’ समासोऽत्र संप्रदाने । एव-  
मादिषूक्तत्वात् संप्रदाने प्रथमा । ४ ।

उक्तमपादानं यथा - ‘विभेत्यस्मादसौ भीमो राक्षसः’, एवं ‘उच्छिन्न-  
जनपदो देशः’ समासोऽत्रापादाने । एवमादिषूक्तत्वादपादाने प्रथमा । ५ ।

उक्तमधिकरणं यथा - ‘आस्यतेऽस्मिन् तदासनम्’ करणाधिकरण-  
योश्चेत्यधिकरणे युट् । एवं ‘वटकिनी पौर्णमासी’ प्रायेण वटकानि  
भुज्यन्तेऽस्यामित्यधिकरणे तद्धितेऽन् प्रत्ययः । एवं ‘मत्तबहुमातङ्गं वनम्’  
समासोऽत्राधिकरणे । एवमादिषूक्तत्वादधिकरणे प्रथमा । ६ ।

उक्तसम्बन्धो यथा - गावो विद्यन्तेऽस्य गोमान् देवदत्तः, एवं चित्र-  
गुर्देवदत्तः । समासोऽत्र सम्बन्धे । एवमादिषूक्तत्वात्सम्बन्धे प्रथमा । ७ ।

इत्युक्तविभक्तयः ।

अथोक्तयुपयोगिनस्तदक्षरशब्दसंस्काराः केचित्तदर्थशब्दसंस्कारा  
अपि दर्श्यन्ते -

[ देश्यशब्दाः तेषां संस्कृतरूपाणि च । ]

अरिहंत अर्हन् ।

सूरिज सूर्यः ।

सुहगुरु शुभगुरुः ।

मगसिरनषत्र मृगशिरोनक्षत्रम् ।

ओझउ उपाध्यायः ।

आदरा आर्द्रा ।

आचारिज आचार्यः ।

असलेस अश्लेषा ।

ठवणारी स्थापनाचार्यः ।

सनीचर शनैश्चरः ।

साध साधुः ।

राह राहुः ।

सालउ श्यालः ।  
 साली श्याली ।  
 माउलउ मातुलः ।  
 बहिणि भगिनी ।  
 नणंद ननान्दा ।  
 बाप बप्पः ।  
 माइ माता ।  
 धाई धात्री ।  
 सासू श्वश्रूः ।  
 सुसरउ श्वशुरः ।  
 पितर पितरः ।  
 सयणाचार खजनाचारः ।  
 आपणउ आत्मीयः ।  
 सगउ खकः ।  
 सयर शरीरम् ।  
 मडउ मृतकः ।  
 मुंड मुण्डः ।  
 माथइ भमरउ मस्तके भ्रमरकः ।  
 सिमथउ सीमंतः ।  
 पली पलितम् ।  
 मुहडउ मुखकम् ।  
 निलाड ललाटः ।  
 कान कर्णः ।  
 आंखि अक्षि ।  
 कीकी कीका ।  
 भिउडी भृकुटिः ।  
 नाक नक्रम् ।  
 होठ ओष्ठः ।  
 गाल गल्लः ।  
 मूँछ श्मश्रु ।  
 दाढी दाढिका ।  
 दाढ दाढा ।  
 जीभ जिह्वा ।

तालुयउ तालुकम् ।  
 घांटी घण्टिका ।  
 गावडि ग्रीवा ।  
 खांधउ स्कन्धः ।  
 काख कक्षा ।  
 पासउ पार्श्वम् ।  
 कुहणी कफणिः ।  
 कलाई कलाचिका ।  
 हाथ हस्तः ।  
 आंगुली अङ्गुलिः ।  
 अंगूठउ अङ्गुष्ठः ।  
 विहथि वितस्तिः ।  
 ताली तालिका ।  
 मूठि मुष्टिः ।  
 चलू चलुकः ।  
 वाम व्यामः ।  
 पुरस पौरुषम् ।  
 पूठउ पृष्ठम् ।  
 उच्छंग उत्सङ्गः ।  
 कालिजउ कालेयम् ।  
 तिली तिलकः ।  
 ग्रीह ग्रीहा ।  
 आंत्र अन्त्राणि ।  
 कडि कटिः ।  
 पूंद पुतौ ।  
 चूति च्युतिः ।  
 आंड अण्डम् ।  
 साथलि सक्थि ।  
 जांध जङ्घा ।  
 पींडी पिण्डिका ।  
 घूटी घुण्टकः ।  
 पान्ही पार्णिः ।  
 लोही लोहितम् ।

हाड हड्डम् ।  
 पांसुली पर्शुका ।  
 मींजी मज्जा ।  
 चांमडी चर्मिका ।  
 नस स्रसा ।  
 लाल लाला ।  
 वीठ विष्ठा ।  
 गूह गूथम् ।  
 वेस वेषः ।  
 मांडणउ मण्डनम् ।  
 पडवास पटवासकः ।  
 कपूर कर्पूरः ।  
 अगर अगुरु ।  
 जाइफल जातिफलम् ।  
 कुंकू कुङ्कुमम् ।  
 लउंग लवङ्गम् ।  
 मउड मुकुटम् ।  
 गुंथिवउ ग्रन्थनम् ।  
 सेहरउ शेखरः ।  
 वाली वालिका ।  
 कडउ कटकः ।  
 नेउर नूपुरम् ।  
 तंत्र तन्नकम् ।  
 चलणी चलनी ।  
 कांचली कञ्चुलिका ।  
 साडी शाटी ।  
 कच्छोटउ कच्छापटः ।  
 काछडी कच्छाटिका ।  
 नातणउ नक्तकः ।  
 पछेवडउ प्रच्छदपटः ।  
 गूणि गोणी ।  
 पालथी पर्यस्तिका ।  
 नउद नवतः ।

आथर आस्तरः ।  
 चंद्रूयउ चन्द्रोदयः ।  
 गुलणी गुणलयनिका ।  
 मांचउ मञ्चकः ।  
 खाटि खट्टा ।  
 उसीसउ उच्छीर्षिकम् ।  
 आरीसउ आदर्शः ।  
 अलतउ अलक्तकः ।  
 लाख लाक्षा ।  
 काजल कज्जलम् ।  
 दीवउ दीपः ।  
 दसी दशा ।  
 वीझणउ व्यजनकम् ।  
 कांकसी कङ्कतिका ।  
 तंबोलरी थई ताम्बूलस्य स्थगी ।  
 महतउ महामाल्यः ।  
 सुंक शुल्कः ।  
 अंतेउर अन्तःपुरम् ।  
 बइरी वैरी ।  
 मित्राई मैत्री ।  
 हेरू हैरिकः ।  
 लांच लञ्चा ।  
 गूझ गुह्यम् ।  
 असवार अश्ववारः ।  
 अंगरखी अङ्गरक्षी ।  
 धनुष धनुः ।  
 वेझ वेध्यम् ।  
 खयडउ खेटकः ।  
 मोगर मुद्गरः ।  
 प्रयाणउ प्रयाणकम् ।  
 राडि राटिः ।  
 धाडि धाटी ।  
 सराध श्राद्धम् ।



दीख दीक्षा ।	कातरि कर्तरी ।
ईधण इन्धनम् ।	कातरणी कर्त्तनिका ।
राख रक्षा ।	त्राकलउ तर्कुः ।
छार क्षारः ।	पींजणउ पिञ्जनम् ।
जनोई यज्ञोपवीतम् ।	वरता वरत्रा ।
वणिज वाणिज्यम् ।	आर आरी ।
मूल मूल्यम् ।	सूत्रहार ( सूथार ) सूत्रधारः ।
संचकार सत्यङ्कारः ।	वांसोली वासी ।
नाव नौः ।	करवत करपत्रकम् ।
वेडी वेडा ।	टांकुलउ टङ्कः ।
उधार उद्धारः ।	लोहार लोहकारः ।
पडहू प्रतिभूः ।	कंदोई कान्दविकः ।
साखी साक्षी ।	नावी नापितः ।
गाउ गव्यूतम् ।	आहेडउ आखेटकः ।
कोस क्रोशः ।	आहेडी आखेटिकः ।
जोअण योजनम् ।	वागुर वागुरा ।
गोवाल गौपालः ।	वागुरी वागुरिकः ।
आहीर आभीरः ।	पासी पाशिका ।
करसउ कर्षकः ।	भील भिष्ठः ।
खेती क्षेत्री ।	भूइ भूः ।
हलरी ईस हलस्य ईषा ।	धरती धरित्री ।
मई मलयम् ।	सींधव सैन्धवम् ।
कोदालउ कुदालः ।	विडलूण विडलवणम् ।
खणेत्रउ खनित्रम् ।	जवखार यवक्षारः ।
पराणी प्राजनम् ।	साजी खर्जिका ।
जोत्र योत्रम् ।	खलहाण खलधानम् ।
मेढी मेधी ।	खलउ खलम् ।
कारू कारुः ।	खेड खेटम् ।
माली मालिकः ।	खंधार स्कन्धावारः ।
कलाल कल्पपालः ।	कोट कोटः ।
मद मयम् ।	वाणारसी वाराणसी ।
सुई सुती ।	अउज अयोध्या ।
सुईउ सौचिकः ।	ऊजयणी उजयिनी ।

हथिणाउर हस्तिनापुरम् ।  
 आगरउ अर्गलापुरम् ।  
 लाहउर लामपुरम् ।  
 सरसउपाटण सरस्वतीपत्तनम् ।  
 वीकानयर विक्रमनगरम् ।  
 जालउर जाबालपुरम् ।  
 साचउर सत्यपुरम् ।  
 भरुअच्छ भृगुकच्छपुरम् ।  
 सुरंग सुरङ्गा ।  
 मसाण श्मशानम् ।  
 सीहदार सिंहद्वारम् ।  
 मठ मठः ।  
 परव प्रपा ।  
 बार द्वारम् ।  
 घर गृहम् ।  
 आगल अर्गला ।  
 कुंची कुञ्चिका ।  
 तालउ तालकम् ।  
 कवाड कपाटम् ।  
 छावति छदिः ।  
 मतवारणउ मत्तवारणम् ।  
 पूतली पुत्रिका पुत्रिला वा ।  
 सउगडउ समुद्रकः ।  
 मंजूस मञ्जूषा ।  
 बुहारी बहुकरी ।  
 ऊखलउ उदूखलः ।  
 किडउ कटः ।  
 मूसल मुशलः ।  
 चूल्ही चुलिः ।  
 घडउ घटः ।  
 अंगारसगडी अङ्गारशकटी ।  
 भाठ भाष्ट्राः ।  
 कडाहउ कटाहः ।

मउणि मणिकः ।  
 गागरी गर्गरी ।  
 मंथाणउ मन्थानकः ।  
 हिमालउ हिमालयः ।  
 सेत्रुंजउ शत्रुञ्जयः ।  
 सोवनगिरि सुवर्णगिरिः ।  
 पाहाण पाषाणः ।  
 पाथर प्रस्तरः ।  
 आगर आकरः ।  
 खाणि खानिः ।  
 गेरू गैरिकम् ।  
 सोनागेरू सुवर्णगैरिकम् ।  
 खडी खटी ।  
 सिंघाण सिंघानः ।  
 काटी कट्टिका ।  
 काट कट्टः ।  
 तांबउ ताम्रम् ।  
 न्रउअउ न्रपुकम् ।  
 कथीर कस्तीरम् ।  
 रूपउ रूप्यम् ।  
 पीतल पित्तलम् ।  
 कांसउ कांस्यम् ।  
 पारउ पारतः (दः) ।  
 सोरठी सौराष्ट्री ।  
 तूरी तुवरी ।  
 हरियाल हरितालम् ।  
 हींगलू हींगुलुः ।  
 रावटउ राजावर्तः ।  
 परवाली = प्रवाली प्रवालम् ।  
 मोती मौक्तिकम् ।  
 अथाह अस्थाघम् ।  
 आछउ अच्छम् ।  
 ओस अवश्यायः ।

पालउ प्रालेयम् ।  
 हीम हिमम् ।  
 धूअरि धूमरी ।  
 फीण फेनः ।  
 घाट घट्टः ।  
 वेरा विदारकाः ।  
 परनालि प्रणाली ।  
 कूल्ह कुल्या ।  
 कादम कर्दमः ।  
 उमाड उल्मुकम् ।  
 धूअउ धूमः ।  
 बीजली विद्युत् ।  
 वाउ वायुः ।  
 वाडी वाटी ।  
 वेलि वल्ली ।  
 जड जटा ।  
 छालि छल्ली ।  
 काठ काष्ठम् ।  
 मांजरि मञ्जरिः ।  
 पान पर्णम् ।  
 कली कलिका ।  
 गोछउ गुच्छः ।  
 विकस्यउ विकसितम् ।  
 गांठि ग्रन्थिः ।  
 पीपल पिप्पलः ।  
 वड वटः ।  
 उंवर उदुम्बरः ।  
 आंवर आन्नः ।  
 बील विल्वः ।  
 केसू किंशुकः ।  
 कपास कर्पासः ।  
 चोरि चदरी ।  
 महुअउ मधुकः ।

बहेडउ विभीतकः ।  
 हरडइ हरीतकी ।  
 चांपउ चंपकः ।  
 जाइ जातिः ।  
 बीजोरउ बीजपूरकः ।  
 कयर करीरः ।  
 धाहडी धातकी ।  
 कउछ कपिकच्छः ।  
 धत्तूरउ धत्तूरकः ।  
 कउठ कपित्थः ।  
 नालेर नालिकेरः ।  
 वांस वँशः ।  
 नागरवेलि नागवल्ली ।  
 द्राख द्राक्षा ।  
 बालउ बालकम् ।  
 साठी षष्टिकः ।  
 चणउ चणकः ।  
 मूंग मुद्गः ।  
 मउठ मकुष्ठः ।  
 गोहू गोधूमः ।  
 वाल वल्लः ।  
 कुलथ कुलत्थः ।  
 कुलथी कुलत्थिका ।  
 तूंअरि तुंवरी ।  
 सामउ श्यामकः ।  
 कांग कङ्गुः ।  
 चीणउ चीनकः ।  
 सरिसव सर्पपः ।  
 वथूअउ वास्तुकम् ।  
 कारेलउ कारवेल्लः ।  
 कोहलउ कूष्माण्डः ।  
 चीभडी चीभिटी ।  
 कंकोडउ कर्कोटकः ।

मूलउ मूलकम् ।  
 रोहीस रोहिषः ।  
 डाभ दर्भः ।  
 धोव दूर्वा ।  
 मोथ मुस्ता ।  
 त्रिणउ तृणम् ।  
 खड खटः ।  
 विस विषः ।  
 वच्छनाग वत्सनागः ।  
 कीडउ कीटः ।  
 जलो जलौकाः ।  
 कवडउ कपर्दः ।  
 कउडी कपर्दिका ।  
 वांभणी ब्राह्मणी ।  
 घीवेलि घृतेली ।  
 उदेही उपदेहिका ।  
 लीख लिखा ।  
 जू यूका ।  
 छप्पई षट्पदी ।  
 माकण मत्कुणः ।  
 वीछू वृश्चिकः ।  
 भमरउ भ्रमरः ।  
 खजूअउ खद्योतः ।  
 मयण मदनम् ।  
 माखी मक्षिका ।  
 तिर्यच तिर्यङ् ।  
 हाथी हस्ती ।  
 सूंड शुण्डा ।  
 आंकुस अङ्कुशः ।  
 घोडउ घोटकः ।  
 पूछ पुच्छम् ।  
 दामण दामाञ्चनम् ।  
 पाखर प्रक्षरः ।

वाग वल्गा ।  
 पलाण पल्ययनम्, पर्याणं वा ।  
 ऊंट उष्ट्रः ।  
 करहउ करभः ।  
 गद्दहउ गर्दभः ।  
 बलद बलीवर्दः ।  
 सांड षण्डः, षण्डः ।  
 धोरी धौरेयः ।  
 पोठीयउ पृष्यः ।  
 सींग शृङ्गम् ।  
 वांझ गाइ वन्ध्या गौः ।  
 ऊहाडउ ऊधः ।  
 छाणउ छगणम् ।  
 गोउल गोकुलम् ।  
 खीलउ कीलकः ।  
 छालउ छगलः ।  
 बाकरउ बर्करः ।  
 मींढउ मेणढकः ।  
 कूकर कुकुरः ।  
 सीह सिंहः ।  
 वाघ व्याघ्रः ।  
 सादूल शार्दूलः ।  
 चीत्रउ चित्रकः ।  
 गइंडउ गण्डकः ।  
 सूअर सूकरः ।  
 रीछ ऋच्छः, ऋक्षो वा ।  
 स्याल शृगालः ।  
 लउंकडी लोमटिका ।  
 सिसलउ शशः ।  
 गोह गोधा ।  
 गोहीरउ गोधेरः ।  
 मूसउ मूषकः ।  
 ऊंदिरउ उन्दुरः ।

जाहउ जाहकः ।	सास श्वासः ।
नउल नकुलः ।	आउषउ आयुः ।
विसहर विषधरः ।	कुंअलउ कोमलः ।
सरण शकुनः ।	सूंआलउ सुकुमालः ।
पंखी पक्षी ।	नीठुर निष्ठुरः ।
चांच चञ्चुः ।	महुरउ मधुरः ।
पींछ पिच्छम् ।	मीठउ मृष्टम् ( मिष्टम् ) ।
पांख पक्षः ।	पांडरउ पाण्डुरः ।
मोर मयूरः, मोरो वा ।	कविलउ कपिलः ।
चांदलउ चन्द्रकः ।	सामलउ श्यामलः ।
कोइल कोकिलः ।	काबरउ कर्बुरम् ।
कोइली कोकिला ।	पांति पङ्क्तिः ।
घूघू घूकः ।	थोडउ स्तोकम् ।
कूकडउ कुकुटः ।	ऊजलउ उज्ज्वलम् ।
चास चाषः ।	चोखउ चोक्षम् ।
वावीहउ वप्पीहः ।	नयडउ निकटम् ।
टींटोहडी टिट्टिभः ।	सासतउ शाश्वतम् ।
चिडउ चटकः ।	माझ मध्यम् ।
चिडी चटका ।	विचालउ विचालम् ।
वगलउ वकः ।	सारीखउ सदक्षम्
चील्ह चिल्लः ।	झांप झम्पा ।
सूडउ शुक्रः ।	भर्यउ भरितम् ( भृतम् ) ।
सारी शारिका ।	वींअ्यउ वेष्टितम् ।
चामाचेड चर्मचटका ।	दाधउ दग्धम् ।
वागुलि वल्गुलिका ।	वीध्यउ विद्धम् ।
आडि आटिः ।	फाडियउ पाटितम् ।
पारेवउ पारापतः ।	छेदियउ छेदितम् ।
तीतिर तिच्चिरिः ।	लाधउ लब्धम् ।
माल्लउ मत्स्यः ।	पठावियउ प्रस्थापितम् ।
तन्नुअउ तन्तुः ।	कामण कार्मणम् ।
काळयउ काळयः ।	सांकडउ संकटम् ।
दाहुर दहुरः ।	उच्छव उत्सवः ।
अनम अन्नम् ।	मेलउ मेलकः ।

विघन विघ्नः ।	भसम भस्म ।
परिचउ परिचयः ।	दाहिणउ दक्षिणः ।
काज कार्यम् ।	कोहली कूष्माण्डी ।
ऊपरि उपरि ।	सलाह श्लाघा ।
आगइ अप्रतः ।	हलुअउ लघुकः ।
सांप्रत सांप्रतम् ।	सीप शुक्तिः ।
अरिहंतभणी नमो अर्हते नमः ।	मइलउ मलिनम् ।
सद्दहियउ श्रद्धितम् ।	छोति छुप्तिः ।
वांकउ वक्रम् ।	अछूतउ अच्छुप्तः ।
कूंपल कुड्मलम् ।	हेठइ अधः ।
मणसिल मनःशिला ।	तुम्ह केरउ युष्मदीयः ।
सुमिणउ स्वप्नः ।	अम्ह केरउ अस्मदीयः ।
पीहर पितृगृहम् ।	एकलउ एकः (एककः) ।
आलउ आर्द्रम् ।	नवलउ नवः ।
सिढिल शिथिलम् ।	पीलउ पीतम् ।
करीस करीपः ।	काठउ गाढम् ।
गुहिरउ गम्भीरम् ।	जेवडउ यावान् ।
विहूणउ विहीनः ।	तेवडउ तावान् ।
पीठ पीठम् ।	वीच वर्त्म ।
मउर मुकुरम् ।	वहिलउ शीघ्रम् ।
गरुयउ गुरुकम् ।	झगडउ झगटकः ।
भिंंगार भृङ्गारः ।	कोड कौतुकम् ।
वींट वृन्तम् ।	जुआ जुआ पृथक् पृथक् ।
सिंंगार शृङ्गारः ।	समधात समधातुः ।
रिणउ ऋणम् ।	गीत धातइ गायउ गीतं धातुना गीतम् ।
गारवउ गौरवम् ।	आगइ वाघ अप्रे व्याघ्रः ।
गउरवान गौरं गौरवर्णं च ।	पाछइ दोतडि पश्चाद्दुस्तटी ।
सांकलउ शृङ्खलम् ।	वरतरकाटिवउ वरत्राकर्त्तनम् ।
छांह छाया ।	सञ्जउ शठितम् ।
नीमी नीवी ।	मांडी मण्डिका ।
झीणउ क्षीणम् ।	लापसी लपन्थीः ।
खोडउ खो(क्षौ?) टकः ।	गुलमंडा गुडमण्डका ।
जइ जर्त्तः ।	वीनती विज्ञप्तिः ।

कच्चोलउ कच्चोलकः ।

डोइलउ दारुहस्तकः ।

कुघाट कुघाटः ।

कावडि कावाकृतिः ।

चूकउ चुकितः ।

आरती आरात्रिकम् ।

मंगलेवउ मङ्गलदीपकः ।

धत्तूरियउ धत्तूरितः ।

वूव बुम्बा ।

सार सारा ।

गलणउ गलनकम् ।

दंतसूकट दन्तराकटः ।

खीचडउ क्षिप्रचटः ।

राव रब्बा ।

कणहतउ कणभक्तम् ।

वेगउ वेगवान् ।

ऊधारइ उद्धारके ।

वाहरू व्याहारकः ।

हेडाऊ हेडावित्तः ।

धरणइ धरणके ।

कूचउ कूर्चकः ।

पोटली पोडलिका ।

पोटलिया पोडलिकाः ।

नीसाण निःस्नानः ।

कांठलउ कण्ठकः ।

पाहरू प्राहरिकः ।

पीठी पिष्टिका ।

अखत्र अक्षत्रम् ।

ऑलग अवलगा ।

संधूरव्यउ संधुक्षितः ।

पहुरइ प्रहरके ।

लालि ललिः ।

किलकिलाट किलकिलायितम् ।

वीह विभीषिका ।

तलार तलारक्षः ।

सेल शल्यः ।

साल शल्यम् ।

चूणि चूर्णिः ।

फाटउ स्फाटितम् ।

गोफणि गोफणी ।

ओठी औष्ट्रिकः ।

कापडी कार्पटिकः ।

विसोआ विंशोपकाः ।

सींगडी शृङ्गिका ।

चाकी चक्रिका ।

चकरडी चक्रिका ।

दोहणी दोहिनी ।

पूत्रेलउ पुत्रकः ।

गूजर गूर्जरः ।

गूजरी गूर्जरी ।

नाथियउ नस्तितः ।

अखाडउ अक्षपाटकः ।

दाणमंडही दानमण्डपिका ।

मूली मूलिका ।

सूली शूलिका ।

ध्रुवउ ध्रुवकः ।

मठी मठिका ।

भमरडउ भ्रमरकः ।

गोमूत्री गोमूत्रिका ।

पूलउ पूलकः ।

पुडउ पुटकः ।

दाणउ दानकः ।

सींगउ शृङ्गकम् ।

किवाडी कपाटिका ।

कांबडी कंबाष्टिका ।

सउणी शकुनिकः ।

पावटउ पादावर्तः ।  
 गदहिला गर्दभिच्छाः ।  
 लात लत्ता ।  
 सेरी सेरिका ।  
 सीरवी सीरपतिः ।  
 नाहर नाखरः ।  
 रोझ रोझः ।  
 आखलउ आखलकः ।  
 निसरावउ निश्रावः ।  
 डहर दहरः ।  
 मुजल मुखजलम् ।  
 महुआल मधुजालम् ।  
 सिलावटउ शिलावर्तकः ।  
 जाडउ जाड्यम् ।  
 मुखास मुखास्या ।  
 दंतूसल दन्तमुसलः ।  
 रती रक्तिका ।  
 बीयउ बीजफः ।  
 अंकोडउ अंकुटकः ।  
 लडू लट्टा ।  
 वडी वटिः ।  
 धणिया धनीयम् ।  
 कहाणी कथानिका ।  
 खटमल खट्टामल्लः ।  
 भडिथ भडित्रम् ।  
 डाकर डात्कारः ।  
 लींडी लिण्डिका ।  
 पाणी पानीयम् ।  
 पाण पानम् ।  
 जडी जटी, जटिका ।  
 सीअल शीतलिका ।  
 पाइणि पभिनी ।  
 पमोडी पभककटी ।

वही वहिका ।  
 पान्हउ प्रस्रवः ।  
 आलावउ आलापकः ।  
 अद्देसउ उद्देशकः ।  
 रतांजणी रक्तचन्दनम् ।  
 खीरणी क्षीरिका ।  
 पतंग पत्राङ्गं पतङ्गं वा ।  
 कूंभट कुञ्जकण्टकः ।  
 बहेडउ बहेटिकः, विभेदको वा ।  
 धामण धर्मणः ।  
 लेसूडउ लेखशाटकः ।  
 गोखरू गोक्षुरः ।  
 कांडी कण्डी ।  
 भांखडी भक्षटः ।  
 मरूअउ मरुबकः ।  
 एलियउ ऐलेयम् ।  
 बेल बेला ।  
 खरहडी खरकाष्ठिका ।  
 देवालि देवताली ।  
 कासुंदउ कासमर्दः ।  
 संद स्यन्दः ।  
 बीजाबोल बीजकबोलः ।  
 सातपरिया सप्तपर्यायाः ।  
 पवित्री पवित्रकम् ।  
 मुहळण मुखक्षणः ।  
 हाक हक्का ।  
 हासी हासिका ।  
 नवारसउ नवायसम् ।  
 चील्हसाग चिल्लीशाकम् ।  
 पाइली पल्ली ।  
 कुंभी कुंभिका ।  
 कंसाल कंसालः ।  
 त्राकडीघेलउ तुलावेलकः ।



कुंपी कुम्पिका ।  
 कचोलउ कच्चोलकम् ।  
 कांगउ कगः ।  
 ग्वालेर गोपालगिरिः ।  
 घिसि घृष्टिः ।  
 परसु परश्वः ।  
 जमवारउ जन्मवारकः ।  
 गिलगिली गिलद्विलिका ।  
 बकोर बर्करिका ।  
 खयर वडी खदिरवटिका ।  
 धनागरउ धान्यनागरम् ।  
 काकडीरउ गिर कर्कट्या गिरः ।  
 कोरियउ पात्रउ कोरितं पात्रम् ।  
 कोरिवउ कोरवणम् ।  
 संहाली सुकुमारिका ।  
 चीठी चीष्टिका ।  
 दसेआगलउ दशभिरर्गलः ।  
 गादी गब्दिका ।  
 धीया न पुत्ता धीदा न पुत्रः ।  
 चाथ( प्र० वाघ )रि च(प्र० व )स्तरी ।  
 तूणियउ कापडउ तूणितं कर्पटम् ।  
 अढारइ नात्रा अष्टादशनात्रकाणि ।  
 नहरणी नखहरणी, नखरदनिका वा ।  
 नखारउ समारिवउ नखानां समारणं  
 समारचनं वा ।  
 सांजउ मात्राविना निरोध न करइ  
 संयतो मात्रकं विना निरोधं न करोति ।  
 केलि कदली ।  
 केला कदलीफलानि ।  
 चवलांरी फली चपलकानां फल्यः ।  
 धोवणी धावनिका ।  
 जयणा यतना ।

सीलउ आहार वाइलउ हवइ  
 शीतल आहारो वातलो भवति ।  
 वाछडउ गाइ धायउ  
 वत्सको गां धावितवान् ।  
 पात्रारउ काप पात्राणां कल्पः ।  
 मूठउ मुष्टः ।  
 रूठउ रुष्टः ।  
 तूठउ तुष्टः ।  
 राखडी रक्षाटिका ।  
 काकरउ कर्करः ।  
 संदेसउ संदेशकः ।  
 सोनारउ मणियउ सुवर्णस्य मणिकः ।  
 विरूयउ विरूपकम् ।  
 संधारउ संस्तारकः ।  
 पहिलउ आपइ पछइ बापइ  
 प्रथममात्मनः पश्चाद्दुष्पस्य ।  
 वरसोला वर्षोपलः ।  
 तको आयउ तकः आगतः ।  
 तका मुहपती तका मुखपोतिका ।  
 दाम करइ काम द्रम्मः करोति कर्म ।  
 गहिलउ घणुं उतावलउ हवइ  
 ग्रहिलो घनमुत्तालो भवति ।  
 आगी वीझाई अग्निर्विध्यातः ।  
 गुल गुलियउ गुडो गुल्यः ।  
 साकर मीठी शर्करा मिष्टा ।  
 आखा बीज अक्षततृतीया ।  
 भाउ बीज भ्रातृद्वितीया ।  
 दीवाली दीपालिका ।  
 होली होलिका ।  
 आंवइरा मउरा आम्रस्य मयूराः ।  
 लेसाल लेखशाला ।  
 पोसाल पोपधशाला ।  
 थांपणि स्थापनिका ।

बाउची बाकुची ।  
 घर गृहं घरो वा ।  
 ओवउ अपवर कः ।  
 अंतेउरी अन्तःपुरिका ।  
 पातली लोवडी प्रतला लोमपटी ।  
 ऊतारणउ अवतारणकम् ।  
 तंबोली ताम्बूलिकः ।  
 गांधी गान्धिकः ।  
 तेली तैलिकः ।  
 हेवउ हेवाकः ।  
 मिठाई मृष्टादिका ।  
 सूखडी सुखादिका ।  
 ऊभउ ऊर्द्धः ।  
 बइठउ उपविष्टः ।  
 तंबोल बीडउ ताम्बूलबीटकम् ।  
 आलजाल बोलइ आलजालं ब्रवीति ।  
 सीकारा मूकइ सीत्कारान् मुञ्चति ।  
 पोईस पूतिकेशः ।  
 छानउ छन्नः ।  
 परताति परतप्तिः ।  
 राइणि राजादनी ।  
 कुंअरि कुमारी ।  
 गिलो गड्डी ।  
 आंवारी कातली आम्रकर्तलिका ।  
 पुहुंक पृथुकम् ।  
 पहाआ पृथुकाः ।  
 टांक टङ्कः ।  
 मासउ माषकः ।  
 आक अर्कः ।  
 नींबू निम्बुकः ।  
 सिरघू शिग्युः ।  
 छीकउ शिक्क्यम् ।  
 थूणी स्थूणी ।

थांभउ स्तम्भः ।  
 सीविवउ सीवनम् ।  
 सांडसउ संदंशः ।  
 मणिआर मणिकारः ।  
 आंबिली आम्लिकी ।  
 गाडी गत्री ।  
 डांस दंशः ।  
 मसउ मशकः ।  
 अरडूसउ अटरूषः ।  
 मोरसिखा मयूरशिखा ।  
 महुलेठी मधुयष्टिः ।  
 अरीठउ अरिष्टः ।  
 ल्हसण लशुनः ।  
 गाजर गृजनम् ।  
 किरातउ किरातः ।  
 जीवापोता पुत्रजीवकः ।  
 थूथउ तुच्छम् ।  
 दीवडी दृतिः ।  
 भांगरउ भृङ्गराजः ।  
 अतिविस अतिविषा ।  
 घाणी घानाः ।  
 सातू सक्तवः ।  
 घररी जाली गृहस्य जालिका ।  
 गउख गवाक्षः ।  
 बाणं संधियउ बाणः सन्धितः ।  
 ऊंचउ ऊछालियउ उच्चमुच्छालितः ।  
 फलहउ फलिहकः ।  
 झाड झाटः ।  
 सूआर सूपकारः ।  
 रसोई रसवती ।  
 सोनाररी मूस सुवर्णकारस्य मूषा ।  
 कुंभार हांडी घडइ कुम्भकारो हण्डिकां  
 घटयति ।

सांखडि संखडिः संस्कृतिर्वा ।	दीह दिवसः ।
वीवाहपगरण विवाहप्रकरणम् ।	राति रात्रिः ।
पढमाली प्रथमालिका ।	वरसात वर्षारात्रः ।
कोठार कोष्ठागारम् ।	रखवालउ रक्षपालः ।
भंडार भाण्डागारम् ।	वासउ वासकः ।
अरहट अरघट्टः ।	कोठउ कोष्ठकः ।
घरटी घरिट्टिका ।	ओही वींट उपधिवेण्टलिका, उपधिवेष्टिका वा ।
घरट घरट्टः ।	वेसावाडउ वेश्यापाटकः ।
चमार चर्मकारः ।	दंडाउंछणउ दण्डकपुञ्छनम् ।
वाणही उपानत् ।	घीरी तरी घृतस्य तरिका ।
सूपडउ सूर्पकम् ।	ऊकुडउ उत्कुटुकः ।
चालणी चालनी ।	ऊकडू (प्र०) उत्कुटकः ।
नीसा निश्रा ।	गिलोई गिरोलिका ।
लोढउ लोष्टकः ।	गोआडइरउ खात्र गोवाटकस्य क्षात्रम् ।
ढल दलिः ।	पडजीभी प्रतिजिह्वा ।
नीसरणी निःश्रेणिः ।	फोडी स्फोटिका ।
पोली पोलिका ।	आजिकाल्हि जतियांरउ घण ठाणउ छइं अद्यकल्ये यतीनां घनस्थानकमस्ति ।
पूडा पूपकाः ।	दयामणउ दयामनकः ।
वडी वटिका ।	निसूग निःशूकः ।
वडा वटकाः ।	ससूग सशूकः ।
लाडू लडुकाः ।	निद्धंधस निद्धंधसः ।
खाजा खाद्यकानि ।	भाणउ भाजनम् ।
ऊकरडी उत्कुरुटिका ।	थाल स्थालम् ।
दुकखइ करालियउ दुःखेन करालितः ।	थाली स्थालिका ।
साधुसंघाडउ साधुसंघाटकः ।	रांधणउ रन्धनम् ।
त्रेगति ( डि ) त्रिकाष्टिका ।	कातती कर्त्तन्ती ।
तेरइ काठिया त्रयोदश काष्टिकाः ।	पींजती पिञ्जन्ती ।
सूतउ घोरइ सुतो घोरयति ।	पीसती पिषन्ती ।
सीयालउ शीतकालः ।	मूंदडी मुद्रिका ।
उन्हालउ उष्णकालः ।	सांकली संकलिका ।
घडियालउ घटिकालयः ।	सरसवेल सर्पपतैलम् ।
घडी घटिका ।	
पहर प्रहरः ।	

अलसिवेल अतसीतैलम् ।  
 जावेल जाल्यतैलम् ।  
 कडुछी कटुच्छकिका ।  
 कडुछउ कटुच्छकः ।  
 उवाणउ ठाण उद्धानं स्थानम् ।  
 चेलउ कहियइ धेणू गाइ चेलकः कथ्यते  
 धेनुगौः ।  
 वाउलि वातोली ।  
 लूणकयरा लवणकरीराणि ।  
 पाउंछणउ पादपुञ्छनकम् ।  
 ओघउ ओघः ।  
 निसेजा निषद्या ।  
 चोलवटउ चोलपट्टः ।  
 पछेवडी प्रच्छादपटी ।  
 पडघउ पतद्गहम् ।  
 वींणउ वेष्टनकम् ।  
 कीटी किट्टिका ।  
 वानी वर्णिका ।  
 वानगी वर्णिका ।  
 पलीवणउ प्रदीपनकम् ।  
 राजवी राजबीजी ।  
 काज नीवडियउ कार्यं निर्वटितम् ।  
 जोगवटउ योगपट्टः ।  
 नवकारवाली नमस्कारमालिका ।  
 जपमाली जपमालिका ।  
 ऊछीनउ उच्छिन्नम् ।  
 खत उपरि खार दीधउ  
 क्षतस्योपरि क्षारो दत्तः ।  
 कडू कटुकम् ।  
 निसोत निःश्रोतः ।  
 वज वचा ।  
 तज त्वक् ।  
 राठऊउ राष्ट्रकूटः ।

पमार परमारः ।  
 सोलंकी चौलुक्यः ।  
 पोरवाड प्राग्वाटः ।  
 भाट भट्टः ।  
 ऊड उड्डः ।  
 ओड ओड्डः ।  
 थूम स्तूपम् ।  
 थडउ स्थलकम् ।  
 रूख रुक्षः ( वृक्षः ? )  
 वाडी वाटिका ।  
 देवदत्त अधूरउ पूरिसइ  
 देवदत्तः अर्द्धं पूरयिष्यति ।  
 आठउ अष्टकः ।  
 लेव लेपः ।  
 घूंटउ घट्टकः ।  
 आंवाफाड आम्रफाली ।  
 पूगीफाड पूगीफलफाली ।  
 गवाणि गवादनी ।  
 रूतउ रूतः ।  
 कुपियउ कुपितः ।  
 ऊग्रहणी उद्ग्रहणिका ।  
 छींडी खण्डी ।  
 पुत्रि जायइ वधामणउ  
 पुत्रे जाते वर्द्धमानकम् ।  
 घूघुरउ घुर्घुरः ।  
 सेई सेतिका ।  
 मुंडउ मुण्डकः ।  
 कूटणउ कुट्टनम् ।  
 पीटणउ पिट्टनम् ।  
 दीवाकाणउ दीपकाणः ।  
 फरलउ फरलः ।  
 कोटवाल कोट्टपालः ।  
 ऊघाडिवउ उद्घाटनम् ।

गुलपापडी गुडपर्पटिका ।  
 गुलधाणी गुडधानाः ।  
 वलउ वलकः ।  
 पीठी पीठी ।  
 छाजउ छाद्यकम् ।  
 देहरइ आमलसारउ  
 देवगृहे आमलसारकः ।  
 गजथर गजस्तरः ।  
 साभरमती साभ्रमती नदी ।  
 जउणा यमुना ।  
 पारस पाहाण स्पर्शपाषाणः ।  
 चित्रावेलि चित्रकवल्ली ।  
 गदगदवचन गद्गदवचनम् ।  
 मणमणउ मन्मनः ।  
 दादर दर्दरः ।  
 जाजरउ जर्जरः ।  
 झालरि झल्लरिका ।  
 मरमरसबद मर्मरशब्दः ।  
 तमक तमकः ।  
 राजान राजानकः ।  
 रोहीडउ रोहीतकः ।  
 नारिंख रूख नारङ्ग रु( वृ ? )क्षः ।  
 धींगउ धींगः ।  
 अनाड अनाटः ।  
 ऊकरडउ उक्कुरुटः ।  
 अखोड अक्षोटः ।  
 भांड भण्डः ।  
 चोरडउ चोरटः ।  
 लउडउ लकुटः ।  
 चीकणउ चिक्कणः ।  
 मायउ मातः ।  
 गाह गाथा ।  
 नीथ सिन्धुः ।

साथ सार्थः ।  
 पह पथः ।  
 माजणउ मजनम् ।  
 जुवान युवानः ।  
 पोथउ पुस्तकम् ।  
 त्रापउ तर्पः ।  
 रांपी रम्पा ।  
 वेढिमी वेष्टिमा ।  
 करंबउ करम्बः ।  
 खेडउ खेटकः ।  
 पाद्र पद्रम् ।  
 सीर सिरा ।  
 पांजरउ पञ्जरः ।  
 दोरउ दवरकः दोरो वा ।  
 छीतर छित्तरः ।  
 चोरइ खात्र पाड्यउ  
 चौरैण खात्रं पातितम् ।  
 मादल मर्दलः ।  
 बाउल बब्बूलः ।  
 हींङि हिण्डिः ।  
 कडणि कटिनिः ।  
 पापड पर्पटः ।  
 कारटउ कारटकम् ।  
 कारटियउ कारटिकः ।  
 धड धटः ।  
 खण क्षणः ।  
 डहरउ दहरः ।  
 पींडार पिण्डारः ।  
 खारउ क्षारम् ।  
 खप्पर खर्परम् ।  
 खापरउ खर्परः ।  
 चरु चरुः ।  
 गात्री गात्रिका ।

मई मदी ।  
 चीखल चिक्खलः ।  
 पाटउ पट्टः ।  
 राजारउ पटउ राज्ञः पट्टः ।  
 खाली खिल्ली ( प्र० खल्ली )<sup>१</sup> ।  
 ताल तल्लः ।  
 गोलउ गोलकः ।  
 वाउल वातूलः ।  
 भमलि भ्रमलः, भ्रमिर्वा ।  
 कमलउ कामलः ।  
 हींगवणि हिङ्गुपर्णी ।  
 आरति अर्त्तिः ।  
 नीठि निष्ठा ।  
 धूआ ध्रुवा ।  
 ध्रू ध्रुवः ।  
 माणी मानिका ।  
 नीक नीका<sup>१</sup> ।  
 कणी कणिका ।  
 मजीठ मञ्जिष्ठा ।  
 ऊन ऊर्णा ।  
 प्रतीठ प्रतिष्ठा ।  
 पाज पद्या ।  
 सेस शेषा ।  
 ईस ईषा ।  
 भालि भल्लिः ।  
 पालि पल्लिः ।  
 चाचरि चच्चरिः ।  
 खली खलिः ।  
 तूली तूलिः ।  
 फूटी काकडी स्फुटिकर्कटी ।  
 कांबी कम्बिः ।

वेठि विष्टिः ।  
 गिरठि गृष्टिः ।  
 काणि कानिः ।  
 पासाकेवली पाशककेवली ।  
 संधूखण संधुक्षणम् ।  
 नाणउ नाणकम् ।  
 पींगाणउ पिंगाणम् ।  
 पिंगाणी पिङ्गाणिका ।  
 सयरइ वलि शरीरे वलिः ।  
 कुठि कुष्ठी ।  
 कुट्टि कुट्टी ।  
 हुडुक हुडुकः ।  
 मोगरउ मुद्गरम् ।  
 अंकोल अङ्कोठः ।  
 वाटि वर्त्तिः ।  
 आखउ अक्षतः ।  
 आखा अक्षताः ।  
 आबू अर्बुदः ।  
 खीरणी क्षीरिणी ।  
 क्यारउ केदारः ।  
 दीवमंदिर द्वीपमन्दिरः ।  
 पुडउ पुटः ।  
 पडल पटलम् ।  
 कांदउ कन्दः ।  
 डोडी दोडी ।  
 काठीहारउ काष्ठाहारकः ।  
 हींडिया हिण्डिकाः ।  
 राउलउ राजकुलम् ।  
 वाटली वर्त्तुलिका ।  
 थली स्थली ।  
 सालवी शालापतिः ।



नेत्रउ नेत्रम् ।  
 सीहरी फाल सिंहस्य फालः ।  
 फालरउ परिधान फालस्य परिधानम् ।  
 घररा वला गृहस्य वलयः ।  
 रूखउ रूक्षम् ।  
 पासउ पार्श्वम् ।  
 खाटकी खट्टिकः ।  
 हाटडी हट्टिका ।  
 माथइ खोल मस्तके खोलकः ।  
 सेजगंडूआ शय्यागण्डकाः ।  
 धणिया ओसड धनिका ओषधम् ।  
 घरधणियाणी गृहधनिका ।  
 पाडउ पाटकः ।  
 साथियउ खस्तिकः ।  
 भस्मसूत भस्मसूतकम् ।  
 सूआ सूचकाः ।  
 बीजी भूमि द्वितीया भूमिका ।  
 भूमिका रचना ।  
 कार्कीडउ कर्किडः, काकपिण्डः ।  
 दोहडउ द्रोहाटः ।  
 चीपिडउ चिपिटः ।  
 गायारउ चरउ गवां चरणम् ।  
 मकनउ हाथी मत्कुणो हस्ती ।  
 करमदउ करमर्दकः ।  
 घूघुरी घूर्धुरी ।  
 तिल पील्या तिलाः पीडिताः ।  
 गलहथउ गलहस्तः ।  
 गामरउ गोयरउ ग्रामस्य गोचरः ।  
 कुंआरीरी घाघरी कुमार्या घर्धरी ।  
 कुंमारउ सोनउ कुमारं सुवर्णम् ।  
 कूवडउ कूवरः ।  
 दादुर वाजउ दर्दुरवाद्यम् ।  
 नांगर नागरम् ।

देहरइरउ निकरउ देवगृहस्य निकरः ।  
 वालर काकडी वलूरकर्कटी ।  
 कुचेल कुचेलः ।  
 पुप्फपडली पुष्पपटली ।  
 मयणहल मदनफलम् ।  
 खडगरउ पडीआर खड्गस्य प्रत्याकारः ।  
 वाहर व्याहरा ।  
 वाहरू व्याहरिकः ।  
 गुणणी गुणनिका ।  
 घाघर नदी घर्धरिका नदी ।  
 चउपउ चतुष्पदम् ।  
 छीकणी छिक्किका ।  
 कसी कषीका, कशी वा ।  
 कुसि कुशा ।  
 समि कियउ समीकृतः ।  
 सिम कियउ सिमीकः ।  
 पालणउ पालनकम् ।  
 परचूरणि लेखउ प्रचूर्णि लेख्यकम् ।  
 वावनउ चंदन द्विपञ्चाशकं चन्दनम् ।  
 पादरियउ पाद्रिकः ।  
 गामडिउ ग्रामटिकः ।  
 धूणियउ धूणितम् ।  
 कुरुटतउ कुरुटन्, कुरुट धातुः ।  
 रुलियउ रुलितः, रुल धातुः ।  
 खेलणउ खेलनकम् ।  
 ऋयाणारी भरणी ऋयाणकानां भरणिका ।  
 वलतउ वलन् ।  
 ऊवलतउ उद्वलन् ।  
 गलहथियउ गलहस्तितः ।  
 लाहणउ लाभनकम् ।  
 हाडफूटि हड्डस्फोटिः ।  
 झामलउ ध्यामलम् ।  
 नीठियउ निष्ठितम् ।





भोगल भुजार्गला ।  
 मेहरू महत्तरः ।  
 देखाविखि दृष्टापेक्षा ।  
 वरांसियउ विपर्यस्तः ।  
 आज अद्य ।  
 काल्हि कल्ये ।  
 परम परे षक्विः ।  
 अरीम अपरेद्युः । अन्यस्मिन्नहनि ।  
 अन्येद्युः ।  
 आजूणउ अद्यतनम् ।  
 काल्हूणउ कल्यतनम्, ह्यस्तनम् ।  
 हिवडां इदानीम् ।  
 अहुण अधुना ।  
 हिवडांनुं आधुनिकम् ।  
 मुहिया मुधा ।  
 जिम यथा ।  
 तिम तथा ।  
 जां यावत् ।  
 तां तावत् ।  
 एकवार एकदा ।  
 सवइवार सर्वदा ।  
 जहियइ यदा ।  
 तहियइ तदा, तदानीम् ।  
 कहियइ कदा ।  
 अनेरीवार अन्यदा ।  
 किहां कुत्र, क्व ।  
 जिहां यत्र ।  
 तिहां तत्र ।  
 इहां अत्र ।  
 अनेतइ अन्यत्र ।  
 सगलइ सर्वत्र ।  
 झटकइ झटिति ।  
 जूउ युतः ।

ताहरुं त्वदीयम् ।  
 माहरुं मदीयम् ।  
 तुम्हारुं युष्मदीयम् ।  
 अम्हारुं अस्मदीयम् ।  
 किसउ कीदृशः ।  
 जिसउ यादृशः ।  
 तिसउ तादृशः ।  
 इसउ ईदृशः ।  
 अनेसउ अन्यादृशः ।  
 अम्हसरीषउ अस्मादृशः ।  
 तूंसरीषउ त्वादृशः ।  
 मूंसरीषउ मादृशः ।  
 तुम्हसरीषउ युष्मादृशः ।  
 जेतलुं यावन्मात्रम् ।  
 तेतलुं तावन्मात्रम् ।  
 एतलुं एतावन्मात्रम्, इयन्मात्रम् ।  
 केतलुं कियन्मात्रम् ।  
 ओरहुं अर्वाक् ।  
 परहउ परतः ।  
 बाहिरि बहिः, बाह्ये ।  
 एकपरि एकधा ।  
 बिहुंपरि द्विधा ।  
 इत्यादि ।

‘जडपणउ’ इत्यादौ भावे त-त्वौ  
 यण् वा । जडता, जडत्वं,  
 जाड्यम् ।  
 अहुण ऐषमः, परुः परत् ।  
 एक एकत्वसंख्यायामित्येकः ।  
 ‘तीशोली’ति कः ।  
 वि द्वौ पुमांसौ, स्त्रियौ, कुले च ।  
 दउठ द्व्यर्द्धः ।  
 अढी अर्द्धतृतीयः ।

कांठउ कण्ठकः ।  
 गोहूरी थूली गोधूमानां स्थूला ।  
 रवऊ रवकः ।  
 पाजणी पर्यायणिका ।  
 अंधमूंधपणइ अन्धमुग्धिकया ।  
 वणवउ वयनम् ।  
 पहिखउ परिहितम् ।  
 आधासीसी अर्द्धशीर्षी ।  
 काकडासींगी कर्कटशृङ्गिका ।  
 नासिवा करतउ नष्टुं कुर्वन् ।  
 मेथीरा लाडू मेथ्या लडुकानि ।  
 पीपलरी पीपी पिप्पलस्य पिप्पका ।  
 विहाणउ विभातम् ।  
 बहिरउ बधिरः ।  
 सिरीस शिरीषः ।  
 फूटरउ स्फुटरः ।  
 जानीवासउ जन्यावासकः ।  
 ऊधंधलु उद्धूलिकम् ।  
 उसीआलु अस्पृष्टालयम् ।  
 घूंघटउ अवगुण्ठनम् ।  
 आहर जाहर एहिरे याहिरा ।  
 चांद्रिणु चन्द्रिकालयम् ।  
 धणीवउ धन्यवयाः ।  
 नीखणियामउ निःक्षणकर्मा ।  
 मेराईउ मेराद्यकम् ।  
 वादलउ वारिदपटलम् ।  
 अभोखउ अभ्युक्षणम् ।  
 ओलखउ उदकोदञ्चनः ।  
 पछोकडउ पश्चादोकः ।  
 उपवासीउ उपोषितः ।  
 पोसहथउ पोषधस्थः ।  
 हियाविउ हृदयार्पितम् ।  
 फुईहाई पितृष्वस्त्रीयः ।

मासिहाई मातृष्वस्त्रीयः ।  
 मामउ मामकः ।  
 मामी मामकी ।  
 पाटूआली पादप्रहारिणी ।  
 अरत परत बाप सरीखउ  
 आकृत्या प्रकृत्या बप्पसदृशः ।  
 अंगीठउ अग्निपीठम् ।  
 ऊघड दूघडउ उद्धटदुर्घटम् ।  
 चीफाड चित्तस्फोटकः ।  
 निलखणउ निर्लक्षणः ।  
 अहीणुं अधेनुकम् ।  
 उपरि ठाई उपरिस्थायी ।  
 कांकसी कचाकर्षणी ।  
 हथीयार हस्ताधारः ।  
 कउसीसउ कपिशीर्षिकम् ।  
 मुखामुखि मुखामुद्ध्यता ।  
 गोगीडउ गोक्रीटः ।  
 ओलउ उपालयः ।  
 नीकउ निष्कः ।  
 कल्होडउ कलभोत्कटः ।  
 आलीगारउ अलीककारः ।  
 पाटू पादघातः ।  
 दीवी दीपिका ।  
 भंजवाड भङ्गपातः ।  
 पडाई पताकिका ।  
 पेलावेलि प्रेराप्रेरि ।  
 वियारियउ विप्रतारितः ।  
 छेतारियउ छलान्तरितः ।  
 दडबडाइउ द्रवकघातितः ।  
 खाजहलउ खाद्यफलम् ।  
 पीजहलउ पेयफलम् ।  
 वाउलउ वार्त्तलयः ।  
 ऊजाणी उद्यानिका ।

भोगल भुजर्गला ।  
 मेहरू महत्तरः ।  
 देखाविखि दृष्टापेक्षा ।  
 वरांसियउ विपर्यस्तः ।  
 आज अद्य ।  
 काल्हि कल्ये ।  
 परम परे द्यविः ।  
 अरीम अपरेद्युः । अन्यस्मिन्नहनि ।  
 अन्येद्युः ।  
 आजूणउ अद्यतनम् ।  
 काल्हूणउ कल्यतनम्, ह्यस्तनम् ।  
 हिवडां इदानीम् ।  
 अहुण अधुना ।  
 हिवडांनुं आधुनिकम् ।  
 मुहिया मुधा ।  
 जिम यथा ।  
 तिम तथा ।  
 जां यावत् ।  
 तां तावत् ।  
 एकवार एकदा ।  
 सवइवार सर्वदा ।  
 जहियइ यदा ।  
 तहियइ तदा, तदानीम् ।  
 कहियइ कदा ।  
 अनेरीवार अन्यदा ।  
 किहां कुत्र, क ।  
 जिहां यत्र ।  
 तिहां तत्र ।  
 इहां अत्र ।  
 अनेतइ अन्यत्र ।  
 सगलइ सर्वत्र ।  
 झटकइ झटिति ।  
 जूउ युतः ।

ताहरुं त्वदीयम् ।  
 माहरुं मदीयम् ।  
 तुम्हारुं युष्मदीयम् ।  
 अम्हारुं अस्मदीयम् ।  
 किसउ कीदृशः ।  
 जिसउ यादृशः ।  
 तिसउ तादृशः ।  
 इसउ ईदृशः ।  
 अनेसउ अन्यादृशः ।  
 अम्हसरीषउ अस्मादृशः ।  
 तूंसरीषउ त्वादृशः ।  
 मूंसरीषउ मादृशः ।  
 तुम्हसरीषउ युष्मादृशः ।  
 जेतलुं यावन्मात्रम् ।  
 तेतलुं तावन्मात्रम् ।  
 एतलुं एतावन्मात्रम्, इयन्मात्रम् ।  
 केतलुं कियन्मात्रम् ।  
 औरहुं अर्वाक् ।  
 परहउ परतः ।  
 बाहिरि बहिः, बाह्ये ।  
 एकपरि एकधा ।  
 बिहुंपरि द्विधा ।

इत्यादि ।

‘जडपणउ’ इत्यादौ भावे त-त्वौ  
 यण् वा । जडता, जडत्वं,  
 जाड्यम् ।

अहुण ऐषमः, परुः परुत् ।

एक एकत्वसंख्यायामित्येकः ।

‘तीशोली’ति कः ।

बि द्वौ पुमांसौ, स्त्रियौ, कुले च ।

दउढ द्व्यर्द्धः ।

अढी अर्द्धतृतीयः ।

त्रिण्ह त्रयः, तिस्रः, त्रीणि, पुमांसः,  
स्त्रियः, कुलानि वा। 'उभेर्द्वत्रौ'  
वेत्यनेन 'उभ पूरणे' इत्य-  
स्मादिः प्रत्ययोऽस्य च द्वत्रे-  
त्यादेशौ ।

चारि चत्वारः, चतस्रः, चत्वारि ।  
'चतेरूर्' इत्यनेन 'चतेर् या-  
चने' इत्यस्मादुप्रत्ययः ।

पांच पञ्च 'पञ्चुङ् व्यक्तीकरणे'  
'उक्षि-तक्षी'त्यन् प्रत्ययः ।

छ षट् 'सहेः षष् च' इत्यनेन 'षहि  
मर्षणे' इत्यस्मात् किप्, षष्  
चास्यादेशः ।

सात सप्त 'षप्यशौटिभ्यां तन्'  
इत्यनेन 'षष् समवाये' इत्य-  
स्मात्तन् प्रत्ययः ।

आठ अष्ट 'अशौटि व्याप्तौ' इत्य-  
स्मात् 'षप्यशौटिभ्यां तन्'  
इत्यनेन तन् प्रत्ययः ।

नव निधान, नव निधानानि,  
'णुक स्तुतौ' इत्यस्मात् 'उक्षि-  
तक्षी' त्यन् ।

दस दश्यन्ते दश । 'लूपूयूवृषी'ति  
किदन् ।

इग्यारइ एकादश ।

बाइर द्वादश ।

तेरइ त्रयोदश ।

चउद चतुर्दश ।

पनर पञ्चदश ।

सोल षोडश ।

सतर सप्तदश ।

अठार अष्टादश ।

इगुणवीस एकोनविंशतिः ।

वीस द्वौ दशतो मानमेषां संख्ये-  
यानामस्य वा संख्यानस्य  
विंशतिः । 'विंशत्यादय' इत्य-  
नेन द्वेर्दशदर्थे विभावः ।  
शतिश्च प्रत्ययः ।

इकवीस एकविंशतिः ।

बावीस द्वाविंशतिः ।

त्रेवीस त्रयोविंशतिः ।

चउवीस चतुर्विंशतिः ।

पंचवीस पञ्चविंशतिः ।

छावीस षड्विंशतिः ।

सत्तावीस सप्तविंशतिः ।

अट्टावीस अष्टाविंशतिः ।

इगुणत्रीस एकोनत्रिंशत् ।

त्रीस त्रयोदशतो मानमेषां संख्ये-  
यानामस्य वा संख्यानस्य  
त्रिंशत् । 'विंशत्यादयः' इत्य-  
नेन त्रेस्त्रिन् भावः । शच्च  
प्रत्ययः ।

एकत्रीस एकत्रिंशत् ।

बत्रीस द्वात्रिंशत् ।

तेत्रीस त्रयस्त्रिंशत् ।

चउत्रीस चतुस्त्रिंशत् ।

पइत्रीस पञ्चत्रिंशत् ।

छत्रीस षड्त्रिंशत् ।

सइत्रीस सप्तत्रिंशत् ।

अठत्रीस अष्टात्रिंशत् ।

इगुण चालीस एकोनचत्वारिंशत् ।

चालीस चत्वारो दशतो मानमेषां  
संख्येयानामस्य वा संख्या-  
नस्य चत्वारिंशत् । 'विंश-  
त्यादयः' इत्यनेन चतुरश्चत्वारि  
भावः शच्च प्रत्ययः ।

इगतालीस एकचत्वारिंशत् ।  
 बयालीस द्विचत्वारिंशत् ।  
 त्रतालीस त्रिचत्वारिंशत् ।  
 चउमालीस चतुश्चत्वारिंशत् ।  
 पचतालीस पञ्चचत्वारिंशत् ।  
 छयालीस षट्चत्वारिंशत् ।  
 सइतालीस सप्तचत्वारिंशत् ।  
 अठतालीस अष्टचत्वारिंशत् ।  
 इगुणपचास एकोनपञ्चाशत् ।  
 पचास पञ्च दशतो मानमेषां  
 संख्येयानामस्य वा संख्या-  
 नस्य पञ्चाशत्, 'विंशत्या-  
 दयः' इत्यनेन शत्प्रत्ययः,  
 पञ्चन आत्वं च ।  
 इकावन एकपञ्चाशत् ।  
 बावन द्विपञ्चाशत् ।  
 त्रिपन त्रिपञ्चाशत् ।  
 चउपन चतुष्पञ्चाशत् ।  
 पंचावन पञ्चपञ्चाशत् ।  
 छपन षट्पञ्चाशत् ।  
 सत्तावन सप्तपञ्चाशत् ।  
 अठावन अष्टपञ्चाशत् ।  
 इगुणसठि एकोनषष्टिः ।  
 साठि षष्टिः । षट् दशतो  
 मानमेषां संख्येयानामस्य वा  
 संख्यानस्य षष्टिः, 'विंशत्या-  
 दयः' इत्यनेन षष्तिः पञ्च ।  
 इगसठि एकषष्टिः ।  
 बासठि द्वाषष्टिः ।  
 त्रेसठि त्रिषष्टिः ।  
 चउसठि चतुःषष्टिः ।  
 पइंसठि पञ्चषष्टिः ।  
 छसठि षट्षष्टिः ।

सतसठि सप्तषष्टिः ।  
 अडसठि अष्टषष्टिः ।  
 इगुणहत्तरि एकोनसप्ततिः ।  
 सत्तरि सप्त दशतो मानमेषां संख्ये-  
 यानामस्य वा संख्यानस्य  
 सप्ततिः । 'विंशत्यादयः' इत्य-  
 नेन सप्तनस्तिः ।  
 इगहत्तरि एकसप्ततिः ।  
 बिहत्तरि द्विसप्ततिः ।  
 त्रिहत्तरि त्रिसप्ततिः ।  
 चउहत्तरि चतुःसप्ततिः ।  
 पंचहत्तरि पञ्चसप्ततिः ।  
 छहत्तरि षट्सप्ततिः ।  
 सतहत्तरि सप्तसप्ततिः ।  
 अठहत्तरि अष्टसप्ततिः ।  
 इगुण्यासी एकोनाशीतिः ।  
 असी अष्टौ दशतो मानमेषां  
 संख्येयानामस्य वा संख्या-  
 नस्य अशीतिः, 'विंशत्या-  
 दयः' इत्यनेन तिप्रत्ययः,  
 अष्टनोऽशी च ।  
 इक्यासी एकाशीतिः ।  
 व्यासी द्व्यशीतिः ।  
 त्र्यासी त्र्यशीतिः ।  
 चउरासी चतुरशीतिः ।  
 पंचासी पञ्चाशीतिः ।  
 छयासी षडशीतिः ।  
 सत्यासी सप्ताशीतिः ।  
 अठ्यासी अष्टाशीतिः ।  
 नव्यासी नवाशीतिः, एकोननव-  
 तिर्वा ।  
 निऊ नव दशतो मानमेषां संख्ये-  
 यानामस्य वा संख्यानस्य

नवतिः विंशत्यादयः' इत्यनेन  
नवनस्तिः ।

क्तसंख्याशब्दा उत्तरशब्द-  
परा योज्याः ।

इकाणू एकनवतिः ।

बाणू द्विनवतिः ।

त्र्याणू त्रिनवतिः ।

चउराणू चतुर्नवतिः ।

पंचाणू पञ्चनवतिः ।

छिन्नु षण्णवतिः ।

सताणू सप्तनवतिः ।

अठाणू अष्टनवतिः ।

नवाणू नवनवतिः ।

सउ दश दशतो मानमेषां संख्ये-  
यानामस्य वा संख्यानस्य  
शतम् । 'विंशत्यादयः' इत्य-  
नेन दशानां शभावः तश्च  
प्रत्ययः ।

एकोत्तर सउ एकोत्तरं शतम् ।

बिडोत्तर सउ द्व्युत्तरं शतम् ।

तिडोत्तर सउ त्र्युत्तरं शतम् ।

चउडोत्तर सउ चतुरुत्तरं शतम्,  
इत्यादि नवनवतिं यावत्पूर्वो-

सहस सहस्रम् ।

लाख लक्षम् ।

कोडि कोटिः ।

बीजउं द्वितीयः ।

त्रीजउ तृतीयः ।

चउथउ चतुर्थः ।

पांचमउ पञ्चमः ।

छट्टुउ षष्ठः ।

सातमउ सप्तमः ।

आठमउ अष्टमः ।

नवमउ नवमः ।

दसमउ दशमः ।

इग्यारमउ एकादशः ।

बारमउ द्वादशः ।

तेरमउ त्रयोदशः ।

चउदमउ चतुर्दशः ।

पनरमउ पञ्चदशः ।

सोलमउ षोडशः ।

सतरमउ सप्तदशः ।

अठारमउ अष्टादशः ।

\*

प्राच्यानां मते-एकादशमः, द्वादशमः, त्रयोदशमः, चतुर्दशमः, पञ्च-  
दशमः, षोडशमः, सप्तदशमः, अष्टादशमः, इति सपूर्वपदादपि नन्ताद्  
मो भवति ।

इगुणीसमउ एकोनविंशतितमः, एकोनविंशो वा । वीसमउ विंशतितमः, विंशो वा ।

एकवीसमउ एकविंशतितमः एकविंशो वा ।

एवं नवनवतिं यावत्सर्वत्र उद्-तमटौ पर्यायेण योज्यौ । षष्टिसप्तत्य-  
शीतिनवतिशब्देभ्यः संख्यापूर्वपदेभ्यः संख्यापूरणे तमडेव, न उद् ।  
षष्टितमः, सप्ततितमः, अशीतितमः, नवतितमः । सोपपदेभ्यस्तू भावपि  
एकषष्टितमः एकषष्ठः, एकसप्ततितमः एकसप्ततः, एकाशीतितमः एका-  
शीतः, एकनवतितमः एकनवतः ।

सउमउ शततमः ।  
 सहसमउ सहस्रतमः ।  
 लाखमउ लक्षतमः ।  
 कोडिमउ कोटितमः ।  
 मासमउ दिहाडउ मासतमं दिनम् ।  
 इग्यारमी एकादशी, एकादशमी वा ।  
 वीसमी विंशतितमी, विंशी वा ।  
 त्रिवायउ त्रिपादः ।  
 चारोली चारकुलिका ।  
 धाहडी धातकी ।  
 थीणउ घी स्ल्यानं घृतम् ।  
 मकोडउ मत्कोटः ।  
 थुड स्थुडम् ।  
 उगमुगउ अवाग्भूकः ।  
 ईडउ अण्डकः ।  
 ओलखाणउ उपलक्षणम् ।  
 सामाई सामायिकम् ।  
 एकासणउ एकासनकम् ।  
 ब्यासणउ द्व्यासनकम् ।  
 आंबिल आचाम्बम् ।  
 निवी निर्विकृतम् ।  
 पाडिहारू प्रातिहारिकम् ।  
 नोहली नवफलिका ।  
 राइतउ राजिकातिकम् ।  
 केवलउ क केवलः क ।  
 कानइ का कर्णे का ।  
 पच्छिम कि पश्चिमायां कि ।  
 अग्गिम की अग्निमायां की ।  
 लहुडइ कु लघुके कु ।  
 दीरघइ कू वृद्धौ कू ।  
 एमात्र के एकमात्रायां के ।  
 बिमात्र कै द्विमात्रयोः कै ।  
 कानमात को कर्णमात्रयोः को ।

विमातकाना कौ द्विमात्रकर्णेषु कौ ।  
 मस्तकमींढइ कं मस्तकविन्दौ कं ।  
 आगलमींढइ कः अग्रे विन्दोः कः ।  
 पडिवा प्रतिपत् ।  
 बीज द्वितीया ।  
 तीज तृतीया ।  
 चउथि चतुर्थी ।  
 पांचमि पञ्चमी ।  
 छठि षष्ठी ।  
 सातमि सप्तमी ।  
 आठमि अष्टमी ।  
 नवमि नवमी ।  
 दसमि दशमी ।  
 अग्यारसि एकादशी ।  
 बारसि द्वादशी ।  
 तेरसि त्रयोदशी ।  
 चउदसि चतुर्दशी ।  
 पूनिम पूर्णिमा ।  
 अमावसि अमावास्या ।  
 जइ किम्हइ यदि कथमपि, चेत् ।  
 पछइ पश्चात् ।  
 पाछिलउ पाश्चात्यम् ।  
 साम्हउ संमुखम् ।  
 सूगामणउ शूकाजनकम् ।  
 परायउ परकीयम् ।  
 अजी अद्यापि ।  
 तांइ तथापि ।  
 सांझ सन्ध्या ।  
 पडूंचउ प्रातिभाव्यम् ।  
 चउघडिउ चतुर्घटिकम् ।  
 उसूर उत्सूरः ।  
 आधु अर्द्धः ।  
 पूरउ पूर्णः ।



उइलउ अर्वाचीनम् ।  
 परलउ पराचीनम् ।  
 अऊठ अर्द्धचतुर्थः ।  
 साढापांच सार्द्धपञ्चकम् ।  
 कांइ कुतः, कस्मात्, किम् वा ।  
 दूबलउ दुर्बलः ।  
 रलीयामणउ रतिजनकम् ।  
 उदेगामणउ उद्वेगजनकम् ।  
 सोहामणउ सौभाग्यवान् ।  
 अगेवाण अग्रानीकः ।  
 चउकीवट चतुष्कपट्टः ।  
 ओंरीसउ अवघर्षः ।  
 सालणउ शालनकम् ।  
 सिली शिलाका ।  
 पडसाल प्रतिशाला ।  
 आंगणउ अङ्गणम् ।  
 बारवट द्वारपट्टः ।  
 भारउट भारपट्टः ।  
 खूणउ कोणकम् ।  
 डेहली देहली ।  
 भीति भित्तिः ।  
 टीपणउ टिप्पनकम् ।  
 पाटी पट्टिका ।  
 पोथी पुस्तिका ।  
 छोह सुधा ।  
 भीतरउ अभ्यन्तरम् ।  
 चउगठि चतुष्काष्ठिका ।  
 पहिरणउ परिधानम् ।  
 आडण अङ्गमण्डनम् ।  
 पांगुरणउ प्रावरणम् ।  
 टीलउ तिलकः ।  
 चहुरखउ बाहुरक्षकः ।  
 मुंदरी मुद्रिका ।

कडिदोरउ कटीदवरकः ।  
 पग पदः ।  
 लीह रेषा ।  
 हीअउ हृदयम् ।  
 थण स्तनौ ।  
 रूं रोम ।  
 भूहिरउ भूमिगृहम् ।  
 पाइक पादातिकः ।  
 सागडी शकटिकः ।  
 दडउ कन्दुकः ।  
 तलाउ तटाकः ।  
 बहेडउ द्विघटकम् ।  
 चहुंटी चञ्चूपुटिका ।  
 कावडि कपोती ।  
 गरढउ गतार्धवयाः ।  
 वेगड विकटशृङ्गः ।  
 पयंतरउ प्रत्यन्तरम् ।  
 डोकरउ दोलत्करः ।  
 सीरामण शीताशनम् ।  
 सडडि संवृतिः ।  
 सीरख शीतरक्षिका ।  
 तुलाई तूलिका ।  
 मासी मातृष्वसा ।  
 फुई पितृष्वसा ।  
 भउजाई भ्रातृजाया ।  
 बिउणउ द्विगुणम् ।  
 तिउणउ त्रिगुणम् ।  
 चउगुणउ चतुर्गुणम् ।  
 वुहरउ व्यवहर्ता ।  
 कडव कणात्रा ।  
 दोटी द्विपटी ।  
 निद्रालखउ निद्रालक्षः ।  
 सांडसउ संदंशकः ।

भाथडी भखा ।  
 खाट मञ्चिका ।  
 घडामांची घटमञ्चिका ।  
 आरती आरात्रिका ।  
 पोली प्रतोली ।  
 गंभारउ गर्भागारम् ।  
 देउली देवकुलिका ।  
 भमती भ्रमावती ।  
 सूणहर शयनगृहम् ।  
 चाचर चक्रम् ।  
 चउरी चतुरिका ।  
 चउसालउ चतुःशालम् ।  
 दारीवाडउ दारिकावाटकः ।  
 ऊवट उद्वर्तम् ।  
 रान अरण्यम् ।  
 बाफ बाष्पः ।  
 आधरण आध्राणं, अधिश्रयणं वा ।  
 सेवती शतपत्रिका ।  
 कणयर करवीरः ।  
 वेउल विचकिलः ।  
 पाउल पाटला ।  
 पुंआड प्रपुनाटः ।  
 जव यवः ।  
 कोठीभडउ कोष्ठभेदकः ।  
 मांडा मण्डका ।  
 साकुली शम्कुली ।  
 वालहली वल्लफलिका ।  
 खीच क्षिप्रः ।  
 खीचडी क्षिप्रचटिका ।  
 खारिक खाद्यारिका ।  
 टोपरउ टोपपरः ।  
 काढउ काथः ।  
 तंगोटी तंगपटी ।  
 साथरउ सत्तरः ।

मांची मञ्चिका ।  
 नही नखिका ।  
 वइंगणु वृन्ताकम् ।  
 हलद हरिद्रा ।  
 आदउ आर्द्रिकम् ।  
 चउरसउ चतुरस्रः ।  
 धोयण धावनम् ।  
 मोकलउ मुत्कलः ।  
 पिहुलउ पृथुलः ।  
 गाडरि गड्ढरी ।  
 जुआरि युगन्धरी ।  
 पूअरउ पूतरकः ।  
 भइरव भैरवी ।  
 भीखारी भिक्षाचरः ।  
 दांतिलउ दन्तुरः ।  
 खोडउ खोडः ।  
 मातउ मत्तः ।  
 दोसी दौष्यिकः ।  
 सांबलउ शम्बलम् ।  
 प्राहुणउ प्राघुणः ।  
 लाज लजा ।  
 पजूसण पर्युषणा ।  
 चउमासउ चतुर्मासकम् ।  
 अठाही अष्टाहिका ।  
 पाखखमण पक्षक्षपणम् ।  
 पोरसी पौरुषी ।  
 नवकारसही नमस्कारसहितम् ।  
 पचखाण प्रत्याख्यानम् ।  
 पडिकमणउ प्रतिक्रमणम् ।  
 पडिलेहण प्रतिलेखना ।  
 वांदणउ वन्दनकम् ।  
 खासणउ क्षामणकम् ।  
 काउसग कायोत्सर्गः ।  
 खमासण क्षमाश्रमणम् ।

वखाण व्याख्यानम् ।  
 पउंजणी प्रमार्जनिका ।  
 कम(व)ली कपरिका, कपलिका वा ।  
 ठवणी स्थापनी ।  
 पायठवणउ पात्रस्थापनकम् ।  
 गोछउ गोच्छकम् ।  
 पायकेसरी पात्रकेशरिका ।  
 पडलउ पटलकम् ।  
 रयताणउ रजस्त्राणम् ।  
 त्रिपणउ तर्पणकम् ।  
 कडहटउ कटाहटकम् ।  
 लेखणि लेखनी ।  
 मसीजणउ मषीभाजनम् ।  
 वेहणउ वेधनकम् ।  
 दांडी दण्डिका ।  
 आचार्यांस आचार्यमिश्राः ।  
 उपाध्यायांस उपाध्यायमिश्राः ।  
 वणारिस वाचनाचार्यः ।  
 पंड्यांस पण्डितमिश्रः ।  
 गणीस गणिमिश्रः ।  
 ओली आली ।  
 बोर बदरम् ।  
 नोमाली नवमालिका ।  
 फोफल पूगफलानि ।  
 मयगल मदकलः ।  
 अलसी अतसी ।  
 सालवाहन सातवाहनः ।  
 पलीवणउ प्रदीपनकम् ।  
 लाठि यष्टिः ।  
 कणियार कर्णिकारः ।  
 कानी कर्णिका ।  
 माटी मृत्तिका ।  
 विसंदुल विमंस्थुलः ।  
 उच्छा उच्छाः ।

सींभ श्लेष्मा ।  
 पांभडी पक्ष्माटिका ।  
 आलाणथंभ आलानस्तम्भः ।  
 मरहठ महाराष्ट्रः ।  
 ताठउ त्रस्तः ।  
 सीख शिक्षा ।  
 जस यशः ।  
 विमासिवउ विमर्शनम् ।  
 डयउ दरितः ।  
 चक्यउ चकितः ।  
 पीपलीमूल पिप्पलीमूलम् ।  
 जोतिषी ज्योतिषिकः ।  
 निमिची नैमित्तिकः ।  
 ऊठिवउ उत्थानम् ।  
 ताली तालिका ।  
 तिलउ तिलकः ।  
 मसउ मषः ।  
 ऊवटणउ उद्वर्त्तनम् ।  
 सन्यासी सान्यासिकः ।  
 बांभण ब्राह्मणः ।  
 हुंछउ उच्छः ।  
 पाथउ प्रस्थः ।  
 आढउ आढकः ।  
 हाथ हस्तः ।  
 एवाल जावालः ।  
 कुडुंबी कुटुम्बी ।  
 दात्रउ दात्रम् ।  
 सूंवरी वडी शुंवस्य वटी ।  
 सुंचल सौवर्चलम् ।  
 कुरुखेत कुरुक्षेत्रम् ।  
 कामरू कामरूपः ।  
 काछउ कच्छः ।  
 मालवउ मालवः ।  
 वंग वङ्गाः ।

अंग अङ्गाः ।  
 मारू मारवः ।  
 कसमीर कश्मीराः ।  
 कणउज कन्यकुञ्जम् ।  
 कोसंबी कौशाम्बी ।  
 चांप चम्पा ।  
 कूडी कुतूः ।  
 करवती करकपत्रिका ।  
 घांट घण्टा ।  
 थूथउ तुच्छम् ।  
 हीरउ हीरकः ।  
 वेलू वालुका ।  
 फुलिंग् फुलिङ्गः ।  
 ताड तालः ।  
 पीलू पील ।  
 गूगल गुग्गुलुः ।  
 गलियार गलिः ।  
 विलाडउ बिडालः ।  
 मंजार मार्जारः ।  
 पाढ पाठः ।  
 टसर तसरः ।

साइणि शाकिनी ।  
 भुइफोड भूमिस्फोटः ।  
 आँधाहूली अधःपुष्पी ।  
 संखाहोली शङ्खपुष्पी ।  
 सोवा शतपुष्पी ।  
 सु तद् सः ।  
 जो यद् यः ।

‘तनित्यजियजिभ्यो डद्’ इति डद् ।

अउ इदम्, अयम् ।

‘इणो दमक्’ इति दमक् ।

एह एतद् एषः ‘इणस्तद्’ इति तद् ।

कुण किम्, कः ।

‘को डिम’ इति डिम् ।

तुं, तुम्हे युष्मद् - त्वम्, यूयम् ।

युषः सौत्रः सेवायाम् ।

हुं, अम्हे अस्मद् - अहं, वयम् ।

‘असूच् क्षेपणे’ ‘युष्यसिभ्यां  
 क्यद्’ इति क्यद् ।

आणंद आनन्दः ।

अथ क्रियाविधिविभागः । त्रिविधो धातुः परस्मैपदी, आत्मनेपदी, उभयपदी चेति । तत्र परस्मैपदिधातोः कर्त्तरि परस्मैपदम्, आत्मनेपदिधातोः कर्त्तरि आत्मनेपदम्, उभयपदिधातोः कर्त्तरि उभयपदम् । कर्मणि भावे च त्रिभ्योऽप्यात्मनेपदमेव । प्रत्येकं विभक्तिप्राप्तिमाह -

‘हवइ, दिथइ, लियइ, करइ, इत्यादौ वर्त्तमानायाः परस्मैपदम् ।

‘दीजइ, लीजइ, कीजइ’ इत्यादौ कर्मणि वर्त्तमानाया आत्मनेपदम् ।

‘देजे, लेजे, करिजे’ इत्यादौ एकारान्तवचने सप्तमी ।

‘देइ, लेइ, करि’ इत्यादौ अनुमति पञ्चमी । क्रियासमभिहारे सर्वकालेषु

पञ्चम्या मध्यमपुरुषैकवचनम् । क्रियासमभिहारः पौनःपुन्यं भृशार्थो वा । यथा माघकाव्ये - यो रावणः ।

‘पुरीमवस्कन्द लुनीहि नन्दनं, सुषाण रत्नानि हरामराङ्गनाः ।’

अत्रातीते काले हि ।

‘दीजउ, लीजउ, कीजउ’ इत्यादौ कर्मणि पञ्चम्या आत्मनेपदम् ।

‘दीधउ, लीधउ, कीधउ’ इत्यादौ ह्यस्तन्यद्यतन्यौ परोक्षा च ।

‘काल्हि दीधउ’ इत्यादौ ह्यस्तन्येव, न परोक्षाद्यतन्यौ ।

‘आज दीधउ, आज लीधउ’ इत्यादौ अद्यतनी, न परोक्षाह्यस्तन्यौ ।

‘म देइ, म लेइ, म करि, म देसि, म लेसि, म करिसि’ इत्यादौ माशब्दयोगेऽद्यतनी,

मास्म योगे ह्यस्तन्यद्यतन्यौ, माङ्गयोगे तु यथाप्राप्ते पञ्चमी भविष्यन्ती च ।

‘म दीधु, म लीधु, म कीधु’ इत्यादौ कर्मणि माशब्दयोगे अद्यतन्याः,

मास्मयोगे ह्यस्तन्यद्यतन्योः, माङ्गयोगे तु पञ्चम्या आत्मनेपदम् ।

‘जइ देत, जइ लेत, जइ करत’ इत्यादौ क्रियातिपत्तिः ।

‘जइ दीजत, जइ लीजत, जइ कीजत’ इत्यादौ कर्मणि क्रियातिपत्तेरा-  
त्मनेपदम् ।

‘देसिइ, लेसिइ, करिसिइ’ इत्यादौ, ‘नही दियइ, नही लियइ, नही करइ’ इत्यादौ च  
भविष्यन्ती ।

‘दीजिसिइ, लीजिसिइ, कीजिसिइ’ इत्यादौ, ‘नही दीजइ, नही लीजइ, नही कीजइ’  
इत्यादौ च कर्मणि भविष्यन्त्या आत्मनेपदम् ।

‘काल्हि देसिइ, काल्हि लेसिइ’ इत्यादौ श्वस्तनी ।

‘वर्षशत जीविसिइ, वइरी जिणिसिइ’ इत्यादौ आशीर्युक्ते भविष्यति काले  
आशीः ।

अथ कृत्प्रत्ययप्राप्तिमाह-

‘देतउ, लेतउ, करतउ’ इत्यादौ कर्त्तरि वर्तमाने शत्रुशानौ परस्मैपद्यात्मने-  
पदिनोः । उभयपदिन उभावपि ।

‘दीजतउ, लीजतउ, कीजतउ’ इत्यादौ कर्मणि शानः ।

देणहार, दायकः दाता; लेणहार, लायकः लाता; करणहार, कारकः कर्ता  
इत्यादौ वर्त्तमाने अकृतृबौ ।

‘दीधउ’ दत्तः दत्तवान्; लीधउ, लातः लातवान्; कीधउ, कृतः कृतवान्  
इत्यादौ अतीते क्त-क्तवन्तू; कर्मणि क्तः, कर्त्तरि क्तवन्तुः । गत्यर्थाकर्मका-  
दिभ्यः कर्त्तरि क्तोऽपि । यथा-अयमागतः आगतवानपि । तथा परस्मैप-  
दिनः क्सुः, आत्मनेपदिनः कानः, उभयपदिन उभावपि ।

‘देइउ, लेइउ, करीउ’ इत्यादौ क्त्वा, ‘देवा, लेवा, करिवा’ इत्यादौ दातु-  
मित्यादि शकृज्ञायोगे क्त्वा प्रत्ययोक्तौ तुम् । ‘करी जाणुं, पढी सकउं’ कर्त्तुं  
जानामि पठितुं शक्नोमि, इति ।

‘देवउं, लेवउं, करिवउं’ इत्यादौ कर्मणि तव्यानीयौ - दातव्यं दानीयम्,  
कर्त्तव्यं करणीयम् । क्वचित् क्यप् घ्यणावपि - कृत्यं, कार्यं चेति ।

‘देणाहरु, लेणाहरु, करणाहरु’ इत्यादौ भविष्यति काले तुमन्तात् काम-  
मनसौ; तुमो मलोपश्च । दातुकामः दातुमनाः, कर्त्तुकामः कर्त्तुमनाः ।

अथ क्रियापदानि -

हवइ भवति ।  
 कलइ कलयति ।  
 गिणइ गणयति ।  
 गुणइ गुणयति ।  
 चीत्रइ चित्रयति ।  
 दूषइ दूषयति ।  
 मूत्रइ मूत्रयति ।  
 रचइ रचयति ।  
 विरचइ विरचयति ।  
 वर्णवइ वर्णयति ।  
 कहइ कथयति ।  
 परूवइ प्ररूपयति ।  
 वांटइ वण्टयति ।  
 हींडोलइ हिंदोलयति ।  
 धमइ धमति ।  
 पियइ पिबति ।  
 जायइ याति ।  
 लियइ लाति ।  
 वायइ वाति ।  
 न्हायइ स्नाति ।  
 चिणइ चिनोति ।  
 ऊडइ उड्यते ।  
 धूणइ धूनयति ।  
 करइ करोति, करति वा ।  
 जागइ जागर्ति ।  
 आदरइ आद्रियते ।  
 धरइ धरति ।  
 भरइ भरति ।  
 मरइ म्रियते ।  
 वरइ वृणुते ।  
 हरइ हरति ।  
 गिरइ गिरति ।

तरइ तरति ।  
 गायइ गायति ।  
 ध्यायइ ध्यायति ।  
 ध्रायइ ध्रायति ।  
 संकइ शङ्कते ।  
 हीकइ हिक्कति ।  
 लिखइ लिखति ।  
 मागइ मार्गयति ।  
 अरथइ अर्थति ।  
 लांघइ लङ्घते ।  
 अरचइ अर्चयति ।  
 संकुचइ संकुचति ।  
 चरचइ चर्चयति ।  
 पचइ पचति ।  
 लुंचइ लुञ्चति ।  
 वाचइ वाचयति ।  
 वंचइ वञ्चयते ।  
 सोचइ शोचति ।  
 सींचइ सिञ्चति ।  
 पूछइ पृच्छति ।  
 वांछइ वाञ्छति ।  
 उपारजइ उपार्जति ।  
 गाजइ गर्जति ।  
 आंजइ अनक्ति ।  
 गुंजइ गुञ्जति ।  
 कूजइ कूजति ।  
 तर्जइ तर्जति ।  
 तिजइ ल्यजति ।  
 पींजइ पिञ्जयति ।  
 भांडइ भण्डयति ।  
 भांजइ भनक्ति ।  
 भाजइ भज्यते ।  
 मांजइ मार्धि, मार्जति वा ।

लाजइ लज्जते ।  
 सरजइ सृजति ।  
 कूटइ कुट्टयति ।  
 खेडइ खेटयति ।  
 घटइ घटयति ।  
 चूटइ चुण्टयति ।  
 तोडइ त्रोटयति ।  
 त्रूटइ त्रुटति ।  
 मोडइ मोटयति ।  
 लूटइ लुण्टयति ।  
 फोडइ स्फोटयति ।  
 फूटइ स्फुटति ।  
 लुठइ लुठति ।  
 ओलंडइ ओलण्डयति ।  
 क्रीडइ क्रीडति ।  
 खंडइ खण्डयति ।  
 जोडइ जोडयति ।  
 बूडइ ब्रूडति ।  
 मांडइ मण्डयति ।  
 पीडइ पीडति ।  
 कीर्त्तइ कीर्त्तयति ।  
 चींतवइ चिन्तयति ।  
 नाचइ नृत्यति ।  
 पडइ पतति ।  
 आपडइ आपतति ।  
 ऊपडइ उत्पतति ।  
 कुहइ कुथ्यति ।  
 मथइ मथाति ।  
 आक्रंदइ आक्रन्दयति ।  
 कूदइ कूर्दते ।  
 खायइ खादति ।  
 निंदइ निन्दति ।  
 पादइ पर्दते ।

मर्दइ मृद्नाति ।  
 रोयइ रोदिति ।  
 वांदइ वन्दते ।  
 वेयइ वेत्ति ।  
 हगइ हदते ।  
 ऊपजइ उत्पद्यते ।  
 नीपजइ निष्पद्यते ।  
 संपजइ संपद्यते ।  
 बांधइ बध्नाति ।  
 बूझइ बुध्यते ।  
 झूझइ युध्यते ।  
 रूंधइ रुणद्धि ।  
 रांधइ राध्यति ।  
 आराधइ आराध्यति ।  
 सूझइ शुध्यति ।  
 सीझइ सिध्यति ।  
 साधइ साधोति ।  
 वीधइ विध्यति ।  
 खणइ खनति ।  
 जामइ जायते ।  
 मानइ मानति ।  
 हणइ हन्ति ।  
 आपइ अर्पयति ।  
 कुपइ कुप्यति ।  
 कांपइ कम्पते ।  
 कलपइ कल्पते ।  
 जपइ जपति ।  
 तपइ तपति ।  
 दीपइ दीप्यते ।  
 धूपइ धूपयति ।  
 लींपइ लिम्पयति ।  
 लोपइ लुम्पति ।  
 चुंबइ चुम्बति ।

विलंबइ विलम्बते ।  
 खुभइ क्षोभते ।  
 खोभइ क्षोभयति ।  
 लहइ लभते ।  
 सोभइ शोभते ।  
 खमइ क्षमते ।  
 जीमइ जेमति ।  
 नमइ नमति ।  
 दमइ दाम्यति ।  
 भमइ भ्रमति ।  
 रमइ रमते ।  
 वमइ वमति ।  
 कामइ कामयते ।  
 आक्रमइ आक्रमते ।  
 खिरइ क्षरति ।  
 विचारइ विचारयति ।  
 चोरइ चोरयति ।  
 पूरइ पूरयति ।  
 मंत्रइ मन्त्रयते ।  
 निजंत्रइ नियन्त्रयति ।  
 फुरइ स्फुरति ।  
 गालइ गालयते ।  
 गिलइ गिलति ।  
 टलइ टलति ।  
 फलइ फलति ।  
 आफलइ आस्फलति ।  
 हालइ हलति ।  
 हीलइ हीलयति ।  
 चावइ चर्चयति ।  
 जीवइ जीवति ।  
 धावइ पही धावति पथिकः ।  
 बालक मा नइ धावइ  
 बालको मातरं धावति ।

सीवइ सीव्यति ।  
 सेवइ सेवति ।  
 नासइ नश्यति ।  
 विणसइ विनश्यति ।  
 डसइ दशति ।  
 पइसइ प्रविशति ।  
 फरसइ स्पृशति ।  
 काढइ कर्षति ।  
 खसइ खषति ।  
 घसइ घर्षति ।  
 घोसइ घोषति ।  
 चूसइ चूषति ।  
 पोसइ पुष्यति ।  
 भखइ भक्षति ।  
 भीखइ भिक्षते ।  
 भाषइ भाषते ।  
 भषइ भषति ।  
 मुसइ मुष्णाति ।  
 रूसइ रूष्यति ।  
 राखइ रक्षति ।  
 हीसइ हेषति ।  
 लखइ लक्षयति ।  
 वरसइ वर्षति ।  
 सुसइ शुष्यति ।  
 सीखइ शिक्षते ।  
 हरषइ हृष्यति ।  
 तूसइ तूषति ।  
 खासइ कासते ।  
 त्रासइ त्रस्यति ।  
 निरभरछइ निर्भरस्यति ।  
 नीससइ निःश्वसिति ।  
 ऊससइ उच्छ्वसिति ।  
 प्रसंसइ प्रशंसति ।





विट्ठालइ अस्पृश्यसंसर्गं करोति ।  
 चांपइ आक्रमति ।  
 पमावइ प्रमापयति ।  
 हाथी गुलगुलायइ हस्ती गुलगुलायते ।  
 ऊललियइ उल्लालयति ।  
 ढोकइ ढौकयति ।  
 पधारउ पादाऽवधार्यताम् ।  
 संभालइ संभालयति ।  
 पलाणइ पर्याणयति ।  
 लालइ लालयति ।  
 सांधइ संधयति, संधत्ते वा ।  
 हेरइ हेरयति ।  
 धीरवइ धीरयति ।  
 भलिसुं भलिष्ये ।  
 ऊछलइ उच्छलति ।  
 ऊछालइ उच्छालयति ।  
 साहइ साहयति ।  
 संवाहइ संवाहयति ।  
 कूकइ कूक्करोति कुर्वते वा ।  
 ढूकइ ढौकते ।  
 थांभइ स्तभ्नाति ।  
 ताकइ तर्कति ।  
 निर्घाटइ निर्घाटयति ।  
 ऊलडइ उल्लुडयति ।  
 विकुर्वइ विकुर्वति ।  
 पालइ पालयति ।  
 पायइ पाययति ।  
 बोलइ ब्रवीति ।  
 जीपइ जयति ।  
 जाणइ जानाति ।  
 आरंभइ आरभते ।  
 सांभरइ स्मरति ।  
 परीछइ परेरिषेः, परीच्छति ।

ग्रसइ ग्रसते ।  
 अभ्यसइ अभ्यस्यति ।  
 विमासइ विमृशति ।  
 पडीगइ प्रतिकरोति ।  
 छइ अस्ति ।  
 आखइ आख्याति ।  
 आवइ एति, आयाति वा ।  
 ऊगइ उदेति ।  
 आथमइ अस्तमेति ।  
 पूजइ पूजयति ।  
 नमस्करइ नमस्करोति ।  
 कुसणइ कुष्णाति ।  
 वीनवइ विज्ञपयति ।  
 वापरइ व्याप्रियते ।  
 पावइ प्रापति ( प्राप्नोति ? )  
 पामइ प्रपूर्वोऽमिः प्राप्तौ, ग्रामति ।  
 वीखरइ विकिरति ।  
 परिणइ परिणयति ।  
 वीवाहइ वीवाहयति ।  
 पूरइ पूर्यते ।  
 वीहइ विभेति ।  
 वीहावइ भापयते ।  
 उल्लावइ उल्लवति ।  
 उल्लींचइ उल्लञ्चति ।  
 सूंघइ शिंघति ।  
 छांडइ छर्दयति ।  
 निरखइ निरीक्षते ।  
 परखइ परीक्षते ।  
 ऊवेखइ उपेक्षते ।  
 उध्रकइ उद्रेकते ।  
 पडखइ प्रतीक्षते ।  
 समरइ स्मरति ।  
 बलइ ज्वलति ।



वसवसइ बहु स्यन्दति भूमिः ।  
 उंजइ उदञ्जयति ।  
 ऊघडइ उद्धटते ।  
 फीटइ स्फिटते ।  
 सूकइ शुष्कति ।  
 खूंदइ क्षुन्ते, क्षुण्ति वा ।  
 सीदाअइ सीदति ।  
 ऊगटइ उद्वर्त्तयति ।  
 भेदइ भिनत्ति ।  
 सरवइ श्रवति ।  
 खीजइ खिद्यते ।  
 विआरइ विप्रतारयति ।  
 विंहचइ विभजति ।  
 खडहडइ खटपतति ।  
 गलअलइ गलद्गलति ।  
 पतीजइ प्रत्ययते, प्रत्येति, प्रतीयते वा ।  
 पवीत्रइ पवित्रयति ।  
 पालटइ परावर्त्तयति, परिवर्त्तयति वा ।  
 हडहडइ हटाद्धसति, हडहडयति वा ।  
 परीसइ परिवेषयति ।  
 वींटइ वेष्टते ।  
 ऊवेढइ उद्वेष्टते ।  
 समेटइ समेटयति ।  
 वीसमइ विश्राम्यति ।  
 चडइ चटति ।  
 अउलवइ अपलपति ।  
 आचमइ आचामति ।  
 ऊपणइ उत्पवते ।  
 वीकइ विक्रीणाति ।  
 ऊघडइ उद्धटते ।  
 ऊघाडइ उद्धाटयति ।  
 ऊठइ उत्तिष्ठति ।  
 नीठइ निस्तिष्ठति ।

अडइ अडति ।  
 वावइ वपति ।  
 छिवइ छुपते, स्पृशति वा ।  
 छूटइ छुटति ।  
 उखेलइ उत्कीलयति ।  
 खीलइ कीलति ।  
 वघारइ व्याघारयति ।  
 वखाणइ व्याख्यानयति ।  
 सकइ शक्नोति ।  
 दंभइ दम्नोति ।  
 परवारइ प्रपारयति ।  
 वारइ वारयति ।  
 निवारइ निवारयति ।  
 वरांसीयइ विपर्यस्यति ।  
 पल्हालइ पर्याद्रवयति ।  
 पालवइ पल्लवयति ।  
 पचारइ प्रत्युच्चारयति ।  
 थाहरइ स्थानमाहरति ।  
 आयसइ आदिशति ।  
 टलवलइ टलद्वलति ।  
 कलकलइ कलकलयति ।  
 झणझणइ झणऽझणयति ।  
 वाधइ वर्द्धयति ।  
 हसइ हसति ।  
 सहइ सहते ।  
 आखुडइ आस्वलति ।  
 रंजइ रञ्जयति ।  
 सपइ शपति ।  
 फडफडइ पटपटायते ।  
 कडकडइ कटकटायते, चक्षुः ।  
 उदेगइ उद्वेगयति ।  
 हींडइ हिंङते ।  
 ऊकदइ उत्कूदते ।



## अथ प्रशस्तिः ।

\*

राजन्वतीं श्रीजिनराजिसन्ततिं कुर्वत्सु शश्वज्जिनचन्द्रसूरिषु ।  
सूरीकृतश्रीजिनसिंहसूरिषु युगप्रधानेषु महोगभस्तिषु ॥ १ ॥

खरतरगणपाथोराशिवृद्धौ मृगाङ्गा,

यवनपतिसभायां ख्यापितार्हन्मताज्ञाः ।

प्रहतकुमतिदुर्ष्पाः पाठकाः साधुकीर्त्ति-

प्रवरसदभिधाना वादिसिंहा जयन्तु ॥ २ ॥

तेषां शास्त्रसहस्रसारविदुषां शिष्येण शिक्षाभृता

भक्तिस्थेन हि साधुसुन्दर इति प्रख्यातनाम्ना मया ।

ग्रन्थोऽयं विहितः कवीश्वरवचोबुद्ध्योक्तिरत्नाकरः

स्वान्यानां हितहेतवे बुधजनैर्मान्यश्चिरं नन्दतु ॥ ३ ॥

॥ इति पं० साधुसुन्दरगणिविरचित उक्तिरत्नाकरग्रन्थः सम्पूर्णः ॥



# अज्ञातविद्वत्कर्तृक उक्तीयक

॥ ६ ॥ श्रीशारदायै नमः ॥

\*

आरोपइ आरोपयति ।	फिरइ भ्रमति, परिभ्रमति ।
आरोहइ आरोहति ।	विहसइ विकसति ।
उन्मूलइ उन्मूलयति ।	भेलइ मिश्रयति ।
ऊठइ उत्तिष्ठति ।	रमइ रमते, क्रीडति ।
ऊठाडइ उत्थापयति ।	चुंकलइ तुदति ।
थापइ स्थापयति ।	प्रेरइ प्रेरयति, नुदति ।
स्पर्द्धइ स्पर्द्धति ।	भुंजइ भृज्जति ।
ऊलालइ उलालयति ।	वांछइ वाञ्छति, इच्छति, अभिलषते ।
ऊललइ उललति ।	नमस्करइ नमस्करोति, नमस्यति, प्रणमति ।
ऊछालइ उच्छलति ।	वांदइ वन्दते ।
ऊडइ उड्डीयते ।	पूजइ पूजयति, अर्चयति, महति ।
आथमइ अस्तमेति, अस्तमयति, अस्तं गच्छति, अस्तं याति ।	छांडइ ल्यजति, जहाति, उज्जति ।
प्रकासइ प्रकाशयति ।	वीहइ विभेति ।
सूझइ शुध्यति ।	नीकोलइ निःकुणाति ।
सूझवइ शोधयति ।	वीससइ विश्वसिति ।
दूहवइ दुनोति, दुःखीकरोति ।	ससइ स्वसति ( श्वसिति ? ) ।
आश्रइ आश्रयति, आश्रयते ।	नीससइ निःश्वस(सि)ति ।
षा(खा)सइ कासति ।	वारइ वारयति ।
ष(ख)मइ क्षमते, सहते, क्षाम्यति ।	निवारइ निवारयति ।
निंदइ निन्दति, जुगुप्सति ।	निषेधइ निषेधयति ।
पडीगरइ चिकित्सति ।	आलोचइ आलोचयति, पर्यालोचयति ।
पूं( खूं )दइ क्षुण्णति ।	जायइ गच्छति, याति ।
पीसइ पिनष्टि ।	आवइ आगच्छति ।
परिसीजइ परिश्रिचति ।	नीकलइ निर्गच्छति, निःसरति, निर्याति ।
दो[गुं]छइ निर्वर्त्सयति ।	वोलइ ूते, वदति, वक्ति ।
त्रासवइ त्रासयति ।	चालइ चलति ।
त्रासइ त्रासयति ।	जीमइ जिमति, भुंक्ते, अत्ति ।
कांपइ कंपते ।	पीयइ पिवति ।

आस्वासइ आस्वाश्रयति (आश्वासयति) ।  
 सूंघइ जिघ्रति ।  
 सांभलइ शृणोति, आकर्णयति ।  
 जोयइ पश्यति, ईक्षति (ते), विलोकयति ।  
 दिषा(खा)डइ दर्शयति ।  
 संभलावइ श्रावयति ।  
 जिमाडइ जेमयति, भोजयति ।  
 करइ करोति, कुरुते ।  
 करावइ कारयति ।  
 सर्जइ सृजति ।  
 लेइ ल्याति, गृह्णाति, गृह्णीते, आदत्ते ।  
 लिवरावइ प्राहयति ।  
 दिइ ददाति, दत्ते, यच्छति, वितरति ।  
 दिवरावइ दापयति ।  
 जाणइ जानाति, अवगच्छति ।  
 जणावइ ज्ञापयति ।  
 कहइ कथयति, शंसति ।  
 स्तवइ स्तौति, स्तवीति ।  
 श्लाघइ श्लाघते ।  
 वरइ वृणोति ।  
 तरइ तरति ।  
 तारइ तारयति ।  
 विचारइ विचारयति ।  
 विमासइ विमर्शति ।  
 धरइ धरति ।  
 धरावइ धारयति, अवधारयति ।  
 वेचइ विक्रीणाति ।  
 वेचावइ विक्रापयति ।  
 विसाहइ विसाधयति ।  
 लाभइ लभते, प्राप्नोति ।  
 वंचइ वंचयति ।  
 मरइ म्रियते, विपद्यते ।

जीवइ जीवति ।  
 वापरइ व्याप्रियते ।  
 छइ अस्ति, वर्त्तते, विद्यते ।  
 हुइ भवति ।  
 जागइ जागर्ति ।  
 जगाडइ जागरयति ।  
 सूइ स्वपिति, शेते, निद्राति ।  
 वइसइ उपविशति ।  
 छींकइ क्षौति ।  
 तेडइ आकारयति, आह्वयति, आह्वयते ।  
 प्रीणइ प्रीणयति, पृणाति ।  
 नांष(ख)इ विकीरति ।  
 घालइ क्षिपति ।  
 घलावइ क्षेपयति ।  
 काढइ कर्षति ।  
 आकर्षइ आकर्षति ।  
 पे(खे)डइ कर्षति, कृषति ।  
 संक्षेपइ संक्षिपति ।  
 लिखइ लिखति ।  
 लिषा(खा)वइ लेखयति ।  
 उपकरइ उपकरोति, उपकुरुते, उपकरति ।  
 घसइ घर्षति ।  
 घसावइ घर्षयति ।  
 आपइ अर्पयति ।  
 क्रापइ कर्त्तति, कर्त्तयते ।  
 मंडइ मण्डयति, भूषयति ।  
 ढांकइ स्थगति, आच्छादयति, पिदधाति,  
 पिधत्ते ।  
 ऊवटइ उद्वर्त्तयति ।  
 न्हाइ स्नाति ।  
 न्हवारइ स्नपयति, स्नापयति ।  
 वावइ वपति ।  
 परिणइ परिणयति, विवाहयति ।



हेजु करइ स्निह्यति ।  
 पहिरइ परिदधाति ।  
 पहिरावइ परिधापयति ।  
 ओटइ अवगुंठयति ।  
 पांगुरइ प्रावृणोति ।  
 पांगुरावइ प्रावारयति ।  
 वहइ वहति ।  
 वाहइ वाहयति ।  
 मारइ हन्ति ।  
 मरावइ घातयति ।  
 छेदइ छिन्दति ।  
 भांजइ भनक्ति ।  
 पडइ पतति ।  
 [पाडइ] पातयति ।  
 आपडइ आपतति ।  
 वारइ वारयति, निवारयति ।  
 [मूकइ] मुञ्चति ।  
 भणइ भणति, पठति, अध्येति ।  
 भणावइ भाणयति, पाठयति, अध्यापयति ।  
 आक्रमइ आक्रमते, पराक्रमते ।  
 ओलखइ उपलक्ष्यते ।  
 गिणइ गणयति ।  
 गुणइ गुणयति ।  
 वषा(खा)णइ व्याख्याति ।  
 पूछइ पृच्छति ।  
 नाचइ नृत्यति ।  
 नचावइ नर्त्तयति ।  
 गाइ गायति ।  
 वाइ वादयति ।  
 वाजइ वादति ।  
 वीनवइ विज्ञपयति, विज्ञापयति ।  
 संदिसइ सन्दिशति, आदिशति ।  
 जोडइ युनक्ति, युंक्ते ।

प्रयुंजइ प्रयुंक्ते ।  
 सींचइ सिञ्चति, अभिषिञ्चति ।  
 वरसइ वर्षति ।  
 मानइ आमनति ।  
 बूझइ बुध्यते ।  
 मनावइ प्रसादयति ।  
 चोरइ चोरयते, अपहरति ।  
 ओलवइ अपलपति, अपहुते ।  
 शापइ शपते, आक्रोशति ।  
 अपराधइ अपराध्यति, विराध्यति ।  
 तस्करइ तस्करयति ।  
 राष(ख)इ रक्षति, पाति, त्रायते, गोपायति ।  
 आणइ आनयति ।  
 अणावइ आना[य]यति ।  
 परिणावइ परिणाययति ।  
 चडइ चटति ।  
 ऊचाटइ उच्चाटयति ।  
 अवतरइ अवतरति, अवतारयति ।  
 चुंटइ चुण्टति, अवचिनोति ।  
 चिणइ चिनोति ।  
 लुणइ लुनाति ।  
 लुणावइ लावयति ।  
 घडइ घटते, घटयति ।  
 ओलगइ अवलगति, सेवते ।  
 नासइ नश्यति, पलायते ।  
 अलंकरइ अलङ्करोति ।  
 बांधइ बध्नाति ।  
 छूटइ छुटति ।  
 फूटइ स्फुटति ।  
 विहरइ विहरति ।  
 हसइ हसति ।  
 हसावइ हासयति ।  
 मवइ मिनोति, माति ।

सीवइ सीवति ।  
 गूथइ ग्रथाति ।  
 गूफइ गुम्फति ।  
 ऊलसइ उल्लसति ।  
 हरषी(ष)इ हृष्यति, माद्यति, मोदते ।  
 शोचइ शोचते ।  
 कूपइ कुप्यति, क्रुध्यति ।  
 विलवइ विलपति ।  
 रोइ रोदिति ।  
 कूटइ कुट्यति ।  
 ताडइ ताड[य]ते, ताडयति ।  
 वर्त्तइ वर्त्तते ।  
 प्रसवइ प्रसूते, जनयति ।  
 ऊपजइ उत्पद्यते, जायते ।  
 ऊपजावइ उत्पादयति ।  
 दूषइ दूष्यति ।  
 पादइ पर्दते, कुशाति ।  
 हगइ हदते ।  
 पचइ पचति ।  
 भजइ भजते ।  
 शोभइ शोभते ।  
 जिणइ जयति, पराजयति ।  
 सूकइ शुष्यति ।  
 तपइ तपति, उत्तपति ।  
 उद्यमइ उद्यमते ।  
 रूंधइ रुणद्धि ।  
 भरइ भरति ।  
 फाडइ स्फाटयति ।  
 रुचइ रोचते ।  
 कल्पइ कल्पते ।  
 आकलइ आकलयति ।  
 वीहावइ भापयति ।  
 ष(ख)ईइ क्षीयते ।

उपचईइ उपचीयते ।  
 वाधइ वर्द्धते ।  
 वधारइ वर्द्धयति ।  
 ॥ इति वर्त्तमानकालक्रिया ॥  
 आरोप्यउ आरोपितम् ।  
 आरुह्यउ आरूढः, चटितः ।  
 उन्मूल्यउ उन्मूलितः ।  
 रहिउ स्थितः ।  
 रहाविउ स्थापितः ।  
 ऊठिउ उत्थितः, उत्थितवान् ।  
 [ ठिउ ] तस्थिवान् ।  
 गयउ गतः, यातः ।  
 आव्यउ आगतः ।  
 नीकल्यउ निर्गतः ।  
 नीसरिउ निःसृतः ।  
 पइठउ प्रविष्टः ।  
 बइठउ उपविष्टः, निषण्णः, आसीनः ।  
 पूछिउ पृष्टः ।  
 दीठउ दृष्टः ।  
 जोइउ निरीक्षितः, अवलोकितः ।  
 जाण्यउ ज्ञातः, बुद्धः, अवगतः ।  
 निवारिउ निषेधितः, निराकृतः ।  
 सूतउ सुप्तः, शयितः, शयितवान् ।  
 जाग्यउ जागरितः, जागरितवान् ।  
 लाज्यउ लज्जितः ।  
 घ्राइउ घ्राणः ।  
 रमिउ रंतः ( रतः ), क्रीडितः, क्रीडितवान् ।  
 हूउ भूतः, भूतवान्, जातः, जातवान् ।  
 ऊतन्यउ अवतीर्णः ।  
 तन्यउ तीर्णः ।  
 निस्तन्यउ निस्तीर्णः ।  
 वापरिउ व्यापृतः ।  
 भागउ भग्नः ।

पडिगरिउ प्रतिजागरितः, पट्टकृतः,  
 चिकित्सितः ।  
 विरासिउ विपर्यस्तः ।  
 मूंडिउ मुण्डितः ।  
 लिपि(खि)उ लिखितम् ।  
 चोपङ्घ्यउ मर्षितः ।  
 वलिउ ज्वलितः, दग्धः ।  
 चालिउ चलितः, प्रस्थितः ।  
 कांपिउ कम्पितः ।  
 चेतिसं चेतितम् ।  
 पांगुन्यउ प्रावृतः ।  
 पहिरिउ परिहितः ।  
 पहिराविउ परिधापितः ।  
 ढांकिउ स्थगितम्, दृक्तम्, आच्छादित-  
 चान् ।  
 [ऊपनउ] उत्पन्नः ।  
 धमिसं धमितम् ।  
 तेजिसं उत्तेजितम् ।  
 खुभिउ क्षुब्धः ।  
 आपडिउ आपतितः ।  
 नांपि(खि)उ निक्षिप्तः ।  
 घालिउ क्षिप्तः ।  
 विपे(खे)रिउ विकीर्णम् ।  
 विदारिउ विदारितः, विदीर्णः ।  
 गालिसं गान्धितम्, द्यानितम् ।  
 हणिउ हतः, घातितः ।  
 नहुतरिउ निगमितः ।  
 धाईउ धातितः ।  
 [भ्राघिउ] भ्राघिनः ।  
 आश्लेपिउ आश्लिप्तः ।  
 धांपिउ धर्मितम् ।  
 भार्गिउ मर्मितम्, यन्त्रितम्, प्रापितम् ।  
 धौंडिउ धौण्डितम्, धौण्डितम् ।

ऊवेपि(खि)उ उपेक्षितः ।  
 आरोपिवउ आरोपणीयम्, आरोपयित-  
 व्यम्, आरोप्यम् ।  
 आरोहिवउ आरोहणीयम्, आरोहितव्यम्,  
 आरोह्यम् ।  
 करिवउ कर्तव्यम्, करणीयम्, कार्यम् ।  
 लेवूं ग्रहीतव्यम्, ग्रहणीयम्, ग्राह्यम् ।  
 देवूं दानीयम्, दातव्यम्, देयम् ।  
 रहिसं स्थातव्यम्, स्थानीयम्, स्थेयम् ।  
 [ऊपडिवूं] प्रस्थातव्यम्, [प्रस्थानीयम्,  
 प्रस्थेयम्] ।  
 पा(खा)वउ भक्षितव्यम्, भक्षणीयम्,  
 भक्ष्यम् ।  
 आस्वादिवूं आस्वादयितव्यम्, आस्वाद-  
 नीयम् [आस्वाद्यम्] ।  
 पीवुं पातव्यम्, पानीयम्, पेयम् ।  
 रांधिवउ राधनीयम्, पक्तव्यम्, पच-  
 नीयम्, पाक्यं ( पाच्यम् ) ।  
 परीसिव्युं परिवेषणीयम्, परिवेषितव्यम्,  
 परिवेषयितव्यम् ।  
 सूंघवुं घ्रातव्यम्, घ्राणीयम् ।  
 सांभलेव्युं श्रोतव्यम्, श्रवणीयम्, श्रव्यम्,  
 आकर्णयितव्यम्, आकर्णनीयम् ।  
 देपि(खि)व्युं दर्शनीयम्, दर्शयितव्यम्,  
 दृश्यम् ।  
 जोइवुं विलोकयितव्यम्, विलोकनीयम्,  
 इक्षितव्यम् ।  
 पहिरवुं परिधातव्यम्, परिधानीयम् ।  
 पांगुरिवुं प्रावरितव्यम्, प्रावरीतव्यम्,  
 प्रावरणीयम्, प्रावृत्यम् ।  
 धरिवुं धर्यव्यम्, धरणीयम्, धार्यम्,  
 धारयितव्यम् ।  
 धाह्युं दहनीयम्, दौह्यम्, दाह्यम् ।

मूक्त्विं मोक्तव्यम्, मोच्यम् ।  
छांडिवुं ल्यक्तव्यम्, ल्यजनीयम् ।  
हणिवुं हन्तव्यम्, हननीयम् ।  
भांजिवुं भंक्तव्यम्, भञ्जनीयम् ।  
भेदिव्युं भेदितव्यम्, भेत्तव्यम्, भेदनीयम्,  
भेद्यम् ।  
वारिवुं वारयितव्यम्, वारणीयम्, वार्यम् ।  
पडिवुं पतितव्यम्, पतनीयम्, पायम्,  
पातयितव्यम्, पातनीयम् ।  
नमस्करिव्युं नमस्कृतव्यम्, नमस्कर-  
णीयम्, नमस्कृत्यम् ।  
वांदिवुं वन्दनीयम्, वन्दितव्यम्, वन्द्यम् ।  
श्लाघिवुं श्लाघनीयम्, श्लाघयितव्यम्,  
श्लाघ्यम् ।  
पूजिवुं पूजनीयम्, पूजितव्यम्, पूज्यम् ।  
अर्चनीयम्, अर्चयितव्यम्, अर्च्यम् ।  
जिमिवुं भोक्तव्यम्, भोजनीयम्, भोज्यम्,  
भोजयितव्यम् ।  
पठिवुं पठितव्यम्, पठनीयम्, पाठ्यम्,  
अध्येतव्यम्, अध्ययनीयम्, अध्येयम् ।  
भणिवुं भणनीयम्, भणितव्यम्, भाष्यम्,  
भणयितव्यम्, पाठनीयम्, पाठयि-  
तव्यम्, अध्यापनीयम्, अध्यापयि-  
तव्यम् ।  
[ गुणिवुं ] गुणनीयम्, गुणयितव्यम् ।  
गुण्यम् ।  
गणिवुं गणनीयम्, गणयितव्यम्, गण्यम् ।  
उलषि(खि)वुं उपलक्षणीयम्, उपलक्षि-  
तव्यम्, उपलक्ष्यम् ।  
परीषि(खि)वुं परीक्षितव्यम्, परीक्षणी-  
यम्, परीक्षयितव्यम् ।  
वखाणिवुं व्याख्यातव्यम्, व्याख्यानीयम्,  
व्याख्येयम् ।

[ कहिवुं ] कथयितव्यम्, कथनीयम् ।  
कथ्यम् ।  
[ निवेदिवुं ] निवेदयितव्यम्, निवेदनीयम्,  
निवेद्यम् ।  
वीनविवुं विज्ञापयितव्यम्, विज्ञापनीयम्,  
विज्ञाप्यम् ।  
संदिसवुं सन्देष्टव्यम्, सन्देशनीयम्,  
सन्देश्यम् ।  
आदिशवुं आदेष्टव्यम्, आदेशनीयम्,  
आदेश्यम् ।  
बोलिवुं वक्तव्यम्, वचनीयम्, वाच्यम्,  
वदितव्यम्, वदनीयम् ।  
पूछिवुं प्रष्टव्यम्, पृच्छनीयम्, पृच्छ्यम् ।  
वाचिवुं वाचयितव्यम्, वाचनीयम्, वाच्यम् ।  
अउधारिवुं अवधारयितव्यम्, अवधारणी-  
यम्, अवधार्यम् ।  
धरिवुं धरणीयम्, धारयितव्यम्, धार्यम् ।  
भरिवुं भरणीयम्, भरितव्यम् ।  
नियोजिवुं नियोजितव्यम्, नियोजनीयम् ।  
नियोज्यम् ।  
जोडिवुं योजनीयम्, योजयितव्यम्,  
योज्यम् ।  
गाइवुं गातव्यम्, गानीयम्, गेयम् ।  
नाचिवुं नर्त्तनीयम्, नर्त्तितव्यम्, नृत्यम् ।  
वाइवुं वादयितव्यम्, वादनीयम्, वाद्यम् ।  
लिखिवुं लिखनीयम्, लिखितव्यम्, लेख्यम्,  
लेखनीयम्, लेखयितव्यम् ।  
मनाविवुं मन्तव्यम्, मननीयम् ।  
जाणिवुं ज्ञातव्यम्, ज्ञानीयम्, ज्ञेयम्,  
अवगन्तव्यम्, अवगमनीयम्, अवगम्यम् ।  
बूझिवुं बोधव्यम्, बोधनीयम्, बोध्यम् ।  
विमासिवुं विमर्शनीयम्, विमर्श्यम् ।  
तरिवुं तरितव्यम्, तरणीयम्, तार्यम् ।

नाहिवुं स्नातव्यम्, स्नानीयम्, स्नेयम् ।  
विचारिवुं विचारयितव्यम्, विचारणीयम्,  
विचार्यम् ।

वेचिवुं विक्रेतव्यम्, विक्र[य]णीयम्, विक्रे-  
यम् ।

विसाहिवुं विसाधयितव्यम्, विसाधनीयम्,  
विसाध्यम् ।

लहिवुं लब्धव्यम्, लभनीयम्, लभ्यम् ।

पामिवुं प्राप्तव्यम्, प्रापणीयम्, प्राप्यम् ।

आपिवुं अर्पितव्यम्, अर्पणीयम्, अर्प्यम् ।

वंचिवुं वञ्चयितव्यम्, वञ्चनीयम्, वञ्च्यम् ।

अपराधिवुं अपराधितव्यम्, अपराधनीयम्,  
अपराध्यम् ।

मनाविवुं प्रसादयितव्यम्, प्रसादनीयम्,  
प्रसाद्यम् ।

चोरिवुं चोरयितव्यम्, चोरणीयम्, चौर्यम्,  
अपहर्त्तव्यम्, अपहरणीयम्, अपहार्यम्,  
तस्करणीयम् ।

राषि(खि)वुं रक्षितव्यम्, रक्ष्यम्, [रक्ष-  
णीयम्] परित्रातव्यम् ।

पालिवुं पालयितव्यम्, पालनीयम्, पाल्यम्,  
गोपयितव्यम्, गोपनीयम्, गोप्यम् ।

आणिवुं आनेतव्यम्, आन[य]नीयम्,  
आनेयम्, आनाय्यम् ।

परिणवुं परिणेतव्यम्, परिण[य]नीयम्,  
परिणेत्यम्, परिणाध्यम्, उपयन्तव्यम्,  
उपयमनीयम्, उपयम्यम् ।

अवतरिवुं अवतरितव्यम्, अवतरणीयम्,  
अवतार्यम् ।

चुंढिवुं अवचेतव्यम्, अवचयनीयम्, अवचे-  
त्यम्,

चिणिवुं चेतव्यम्, चयनीयम्, चेयम् ।

लूणिवुं लवितव्यम्, लवनीयम्, लव्यम्,  
लाव्यम् ।

रमिवुं रंतव्यम्, रमणीयम्, क्रीडितव्यम्,  
क्रीडनीयम् ।

घडिवुं घटयितव्यम्, घटनीयम् ।

होमिवुं होतव्यम्, हवनीयम्, हव्यम् ।

ऑलगिवुं अवलगितव्यम्, अवलगनीयम्,  
सेवनीयम्, सेव्यम् ।

वाञ्छिवुं वाञ्छितव्यम्, वाञ्छनीयम् ।

नासिवुं पलायितव्यम्, पलायनीयम्, नष्ट-  
व्यम् ।

अलंकरिवुं अलङ्कर्त्तव्यम्, अलङ्करणीयम्,  
अलङ्कार्यम् ।

विपराविवुं व्यापारयितव्यम्, व्यापार-  
णीयम्, व्यापार्यम् ।

उच्छाहिवु उत्साहनीयः, उत्साहयितव्यः,  
उत्साहाय्यः, प्रेरणीयः, प्रेरयितव्यम्,  
प्रेर्यः, नोदनीयः, नोदयितव्यः, नोद्यः ।

अनुमोदिवुं अनुमोदनीयम्, अनुमोदयि-  
तव्यः, अनुमोद्यः ।

\*

क्रिया च कर्त्ता च तथा च कर्म,  
अनुक्तमुक्तं पुरुषत्रयं च ।

संख्या परस्मैपदलिङ्गकानि,  
तथात्मने कालविभक्तयश्च ॥ १

संख्याविभक्तिलिङ्गपुरुषत्रयश्च  
यदुक्तं भवति तस्यैव ग्राह्यम् ।

क्रियाकर्त्तादिकं सर्वं  
पूर्वश्लोकप्रदर्शितम् ।

सारस्वतमितान्नेयं  
संस्कृतं ज्ञातुमिच्छता ॥ २

\*

तुं हुं इत्यर्थे त्वं अहम् ।  
 तुम्हि तुम्हे अम्हि अम्हे इत्यर्थे यूयं  
 वयम् ।  
 तइं मइं त्वया मया ।  
 तुम्हि अम्हि तुम्हे अम्हे इ कीजइ  
 युष्माभिः अस्माभिः क्रियते ।  
 तूंहइ मूंहइ तत्र मम ।  
 तुम्हनइं अम्हनइं युष्माकम्, अस्माकम् ।  
 ताहरुं तावकम्, तावकीयम्, तावकीनम्,  
 त्वदीयम् ।  
 माहरुं मदीयम्, मामकम्, मामकीनम्,  
 मामकीयम् ।  
 तुम्हारुं युष्मदीयम्, यौष्माकम्, यौष्माकी-  
 नम् ।  
 अम्हारुं अस्मदीयम्, अस्माकीनम्, अस्मा-  
 कम् ।  
 आपणूं आत्मीयम्, स्वयम्, निजम् ।  
 परायउ परकीयम् ।  
 तिहातणूं तत्रत्यम् ।  
 इहांतणूं अत्रत्यम् ।  
 जिहांतणूं यत्रत्यम् ।  
 किहांतणूं कुत्रत्यम् ।  
 बाहिरल्युं बाह्यम् ।  
 माहिल्युं मध्यवर्ति, आभ्यन्तरम् ।  
 छेहिलुं अन्त्यम्, अन्तिमम् ।  
 पहिलुं प्रथमम् ।  
 कांई किञ्चित्, किमपि ।  
 कोई कश्चित्, कोऽपि ।  
 पाछिलुं पाश्चात्यम् ।  
 पछइ पश्चात् ।  
 आगिलुं अप्रेतनम् ।  
 जिम यथा ।  
 तिम तथा ।

किम कथम् ।  
 किसउ किम् ।  
 एतलुं एतावत्, इयत् ।  
 जेतलुं यावत् ।  
 तेतलुं तावत् ।  
 जिसउ यादक्, यादशः, यादक्षः ।  
 अनेरिसिउ अन्यादग्, अन्यादशः,  
 अन्यादक्षः ।  
 तुम्हासित युष्मादशः, भवादशः ।  
 अम्हासित अस्मादशः ।  
 केतलउ कतिपयः; कति ।  
 केतलुं कियत् ।  
 इणि परि इत्थम्, अनया रीत्या ।  
 इम एवमेव ।  
 विणा, पाषइ विना, ऋते, अन्तरेण,  
 व्यतिरेकेण ।  
 कहियइ कदा ।  
 जहियइ यदा ।  
 तहियइ तदा ।  
 अन्येरीवार अन्यदा ।  
 हिविडां अधुना, इदानीम्, सम्प्रति, साम्प्र-  
 तम् ।  
 आज अब ।  
 काल्हि कल्ये ।  
 परमइ परेषुवि ।  
 अहूण ऐषमस्य ।  
 पुरु परत् ।  
 किहां कुत्र ।  
 जिहां यत्र ।  
 तिहां तत्र ।  
 तउ तत् ।  
 जउ यत् ।  
 अउ इत्यर्थे असौ अयं एषः ।

जु, यो, ये यः ।  
 तु, सु, ते सः ।  
 आपइणी आत्मना, स्वयम् ।  
 तां तावत् ।  
 जां यावत् ।  
 उहरउं अंतर्धाकार ।  
 परहउ पराक् ।  
 आघउ अतस्ततः ।  
 तिरछउ आडउ, तिर्यक्, तिरश्चीनम् ।  
 एतला ऊपरुं अतः ऊर्द्धम् ।  
 आजु लगइ अद्य प्रभृति ।  
 आजूनुं अद्यतनम् ।  
 कालहनउं कल्यंतनम् ।  
 ऊपरिलुं उपरितनम् ।  
 हेठिलुं अधस्तनम् ।  
 ऊपरि उपरि, उपरिष्ठात् ।  
 बाहिर हुंतउ बहिस्तात् ।  
 विसिमिसि प्रतिस्पर्द्धा, अहमहमिका ।  
 माणसामउ मनुष्यात्मकः ।  
 सामुहु सन्मुखः ।  
 उपराठउ पराङ्मुखः ।  
 अनेरुं अन्यत्, अपि च, अपरं च ।  
 अजी अद्यापि ।  
 आगइ अग्रे, तत्पुरः ।  
 अग्रेतनु पुरः ।  
 सदा सर्वदा नित्यं प्रत्यहं निरन्तरं सततम् ।  
 तुहइ तदपि ।  
 जइ यद्यपि ।  
 तउ तर्हि ।  
 इ, ए इदम्, एतत्, अदः ।  
 अलजु उत्कण्ठा ।  
 ऊंचउं उच्चैः ।  
 नीचउं नीचैः ।

उंचानीचुं उच्चावचम् ।  
 लहुडुं लघु ।  
 भारी गुरु ।  
 वडउ वृद्धम् ।  
 अउंगउ मुगउ अवाक् मूकः(?) ।  
 कूका हेवाका ।  
 कन्हइ पासि पार्श्वे, समीपे, निकटे ।  
 माहि मध्ये ।  
 विचालुं अन्तरालम् ।  
 ठालउं रिक्तम् ।  
 भरिउं निचितम् ।  
 जिमणुं दक्षिणम् ।  
 डाबउं वामम् ।  
 ठीलउं शिथिलम् ।  
 पालदिउ परावर्तः ।  
 बापडउ वराकः ।  
 नहींत नो वा ।  
 एह ठाम हुंतउ अमुष्मात्, अस्मात्, एत-  
 स्मात् स्थानात् ।  
 जेह ठाम हुंतउ यतः, यस्मात् स्थानात् ।  
 तेह ठाम हुंतउ ततः, तस्मात् स्थानात् ।  
 किहां हुंतउ कुतः, [कस्मात्] स्थानात् ।  
 अनेरी परि अन्यथा ।  
 सर्व परि सर्वथा ।  
 एक परि एकधा ।  
 बिहुं परि द्विधा ।  
 त्रिहुं परि त्रिधा ।  
 सर्वत्र संख्याशब्देषु 'संख्यायाः  
 प्रकारेण' इति सूत्रेण 'धा' प्रत्ययः ।  
 पहिलउ प्रथमः ।  
 बीजउ द्वितीयः ।  
 त्रीजउ तृतीयः ।

चउथउ चतुर्थः ।  
 पांचमउ पञ्चमः ।  
 छट्टउ षष्ठः ।  
 सातमउ सप्तमः ।  
 आठमउ अष्टमः ।  
 नवमउ नवमः ।  
 दसमउ दशमः । इत्यादि ।  
 बीसमउ विंशतितमः ।  
 त्रीसमउ त्रिंशति (? त्) तमः ।  
 चालीसमउ चत्वारिंशति (त् ?) तमः ।  
 विंशतिप्रभृतिशब्दात् 'तस्य'  
 प्रत्ययः ।

पालउ पादचारः ।  
 जोहारः जोत्कारः ।  
 सोहिलुं सुखावहम् ।  
 दोहिलुं दुःखावहम् ।  
 लाई लम्पकः ।  
 रलियामणुं रतिजनकम् ।  
 उदेगामणुं उद्वेगजनकम् ।  
 जूउ भिन्नः, पृथक् ।  
 अरणइ अरतिः ।  
 किर किल ।  
 साधुपणुं साधुत्वम्, साधुता ।  
 निश्चयार्थे एव शब्दः ।  
 च समुच्चये  
 परिवारिउं प्रपारितम् ।  
 मउडई २ शनैः २ मन्दम् २ ।  
 पुण पुण वारं वारम् ।  
 विलखउ विलक्षः, वक्रमयः, वक्रमयम् ।  
 लोहमूं लोहमयम् ।  
 अनेथि अन्यत्र ।  
 केवडूं कियन्मात्रम् ।  
 एक एकः ।

द्वि द्वौ ।  
 त्रिणि त्रयः ।  
 च्यारि चत्वारः ।  
 पांच पञ्च ।  
 छः षट् ।  
 सात सप्त ।  
 आठ अष्टौ ।  
 नव नव ।  
 दश दश  
 इग्यार एकादश ।  
 बार द्वादश ।  
 तेर त्रयोदश ।  
 चवदइ चतुर्दश ।  
 पनरइ पञ्चदश ।  
 सोल षोडश  
 सतर सप्तदश ।  
 अठार अष्टादश ।  
 उगणीस एकोनविंशति ।  
 विंशति, एकविंशति, द्वाविंशति,  
 त्रयोविंशति, चतुर्विंशति, पञ्चविं-  
 शति, षड्विंशति, सप्तविंशति, अष्टा-  
 विंशति, एकोनविंश (? त्रिं) शत्,  
 त्रिंशत्, एकत्रिंशत्, द्वात्रिंशत्,  
 त्रयस्त्रिंशत्, चतुस्त्रिंशत्, पञ्चत्रिं-  
 शत्, षट्त्रिंशत्, सप्तत्रिंशत्,  
 अष्टात्रिंशत्, एकोनचत्वारिंशत्,  
 चत्वारिंशत्, एकचत्वारिंशत्,  
 द्वाचत्वारिंशत्, त्रयश्चत्वारिंशत्,  
 चतुश्चत्वारिंशत्, पञ्चचत्वारिंशत्,  
 षट्चत्वारिंशत्, सप्तचत्वारिंशत्,  
 अष्टाचत्वारिंशत्, एकोनपञ्चाशत्,  
 पञ्चाशत्, एकपञ्चाशत्, द्वापञ्चा-  
 शत्, त्रिपञ्चाशत्, चतु[ः]पञ्चा-



शत्, पञ्चपञ्चाशत्, षट्पञ्चाशत्, पञ्चसप्ततिः, षट्सप्ततिः, सप्तसप्ततिः, अष्टासप्ततिः, एकोन[१-]शीतिः, [अशीतिः], एकाशीतिः, सप्तपञ्चाशत्, अष्टापञ्चाशत्, एकोनषष्टिः, षष्टिः, एकषष्टिः, द्वाषष्टिः, त्रिषष्टिः, चतु[ः]षष्टिः, पञ्चषष्टिः, षट्षष्टिः, सप्तषष्टिः, अष्टाषष्टिः, पञ्चाशीतिः, षडशीतिः, सप्ताशीतिः, एकोनसप्ततिः, सप्ततिः, एकसप्ततिः, अष्टाशीतिः, एकोननवतिः, नवतिः।  
द्वासप्ततिः, त्रिसप्ततिः, चतुःसप्ततिः, नवनवतिः ।

॥ इत्यज्ञातविद्वत्कर्तृकमुक्तीयकं समाप्तमिति ॥

॥ शुभं भवतु ॥



# अविज्ञातविद्वत्संगृहीतानि पुरातन-औक्तिकपदानि

\*

## [ कारकविचार ]

अथ षट् कारकाणि लिख्यन्ते-

छ कारक, सातमउ संबंधु ।

कर्त्ता, कर्म, करण, संप्रदानु, संबंधु,  
अधिकरण ।

जु करइ तु कर्त्ता ।

जं कीजइ तं कर्म ।

जीण करी क्रिया कीजइ तं करण ।

येह देवातणी वाञ्छा, येह रूपइ काई, धरीइ  
काई; तं कारकु संप्रदानसंज्ञकु हुइ ।

जेहतउ अपाय विश्लेषु हुइ, जेहतउ भय  
हुइ, जेहतउ आदान ग्रहणु हुइ, तं कार-  
कु अपादान संज्ञकु हुइ ।

जेह कन्हइ, जेह माझि, जेह पासि, जेह  
तणउ, जेह तणी, जेह तणउं, जेहरहिं  
इत्यर्थे संबंधु ।

गामि, पाद्रि, षलइ, क्षेत्रि, वनि, पर्वति,  
माझि, बाहिरि इत्यर्थे आधार ।

कर्त्ता प्रथमा ।

कर्मि द्वितीया ।

करण तृतीया ।

संप्रदानि [ चतुर्थी । ]

[ अपादानि ] पंचमी ।

संबंधि षष्ठी ।

अधिकरणि सप्तमी ।

जउ पाधरी उक्ति तउ उक्त कर्त्ता ।

उक्ते कर्त्तरि प्रथमा ।

अनुक्तं कर्म ।

अनुक्ते कर्मणि द्वितीया ।

जु वांकी उक्ती तउ अनुक्त कर्त्ता, उक्तं कर्म ।

अनुक्ते कर्त्तरि तृतीया, उक्ते  
कर्मणि प्रथमा ।

कालि भावि सप्तमी । वेला, दीसु, पक्षु,  
मासु, वरसु, ऋतु इत्यादि कालः ।

अमुकइं हुंतइं अमुकुं हौं इत्यादि  
भावः ।

पाखइ, विना, किशा पाखइ, जेह, ल्याहां-

विनायोगे द्वितीया-तृतीया-

पञ्चम्यः । यावद्योगे द्वितीया ।

परितो योगे द्वितीया । अन-

भिप्रति योगे द्वितीया । प्रभृ-

तियोगे पञ्चमी । अर्वाक् योगे

पञ्चमी ।

एक आगलि एक वचनु, विहुं आगलि

द्वि वचनु, घणां आगलि बहु वचनु ।

त्रुटितप्रत्यन्तर प्राप्त पाठभेद । अथ षट् कारकमभिलिख्यते । यथा—छ कारक, सातमउ संबंध । कर्त्ता १, कर्म २, करण ३, संप्रदान ४, अपादान ५, संबंध ६, अधिकरण ७ । जे करइ ते कर्त्ता । जं कीजइ तं कर्म । जेगइ करी क्रिया कीजइ ते करण । जेह भणी धरीइ काई तं कारक संप्रदान । जिह हुंतु अपाय विश्लेष हुइ जेह तु भय हुई जिह तु आदान ग्रहण कीजइ तं कारक अपादान । जिह कन्हइ, जिह माहि, जिह पासि, जिह तणुं, जिह तणी, जिह तणु, जिहनइ, जिहकिहिं, इत्यादि संबंधः । गामि पाद्रि क्षेत्रि खलइ वनि पर्वति माहि बाहिरि इत्यादि आधार ।

कर्त्ता प्रथमा । कर्मि द्वितीया । करणि तृतीया । संप्रदानि चतुर्थी । अपादानि पंचमी । संबंधि षष्ठी । अधिकरणि सप्तमी ।

## [ शब्दसंग्रह ]

[ १ ]

कीधुं कृतम् ।

लिधुं गृहीतम् ।

दीधुं दत्तम् ।

ग्युं गतम् ।

आव्युं आगतम् ।

आण्युं आनीतम् ।

पठिउं पठितम् ।

बोल्थुं उक्तम् ।

मारिउं हतम् ।

जाणिउं ज्ञातम् ।

यमिउं भुक्तम् ।

रहिउं रहितम् ।

थाकउं

थ्युउं

} स्थितम् ।

दीठउं दृष्टम् ।

पूछिउं पृष्टम् ।

[ २ ]

करतउ कुर्वन् ।

लेतु गृह्णन् ।

देतउ ददन् ।

जातउ गच्छन् ।

आवतउ आगच्छन् ।

आणतउ आनयन् ।

पढतउ पठन् ।

बोलतउ वदन्, जल्पन् ।

मारतउ घ्नन् ।

जाणतउ जानन् ।

जिमतउ भुञ्जन् ।

अछतउ

रहतउ

} तिष्ठन् ।

देखतउ पश्यन् ।

पूछतउ पृच्छन् ।

[ ३ ]

कीजतउं क्रियमाणम् ।

लीजतउं गृह्यमाणं, लीयमानम् ।

दीजतउं दीयमानम् ।

जईतउं गम्यमानम् ।

आवीतउं आगम्यमानम् ।

आणीतउं आनीयमानम् ।

पढीतउं पठ्यमानम् ।

बोलीतउं उच्यमानम् ।

मारीतउं हन्यमानम् ।

जाणीतउं ज्ञायमानम् ।

यमीतउं भुज्यमानम् ।

रहितउं

अछीउं

} स्थीयमानम् ।

दीसतउं दृश्यमानम् ।

पूछीतउं पृच्छयमानम् ।

[ १ ]

कीधुं कृतम् ।

लीधुं गृहीतम् ।

दीधुं दत्तम् ।

ग्युं गतम् ।

आव्युं आगतम् ।

आण्युं आनीतम् ।

पठ्युं पठितम् ।

बोल्थुं उक्तम् ।

जाण्युं ज्ञातम् ।

जिम्युं भुक्तम् ।

रहिउं थाकउं

थ्युउं

} रहितं  
स्थितं च

दीठउं दृष्टम् ।

पूछुं पृष्टम् ।

[ २ ]

करतु कुर्वन् ।

देतु ददन् ।

खातु खादन् ।

जातु गच्छन् ।

आवतु आगच्छन् ।

आणतु आनयन् ।

पठतु पठन् ।

बोलतु वदन् ।

मारतु घ्नन् ।

जिमतु भुञ्जानः । अशने तु

आत्मनेपदीउ ।

छतु रहितु तिष्ठन् ।

देषतु पश्यन् ।

पूछतु पृच्छन् ।

[ ३ ]

कीजतुं क्रियमाणम् ।

लीजतुं गृह्यमाणं नीयमानं

वा ।

दीजतुं दीयमानम् ।

जईतुं गम्यमानम् ।

आवीतुं आगम्यमानम् ।

आणीतुं आनीयमानम् ।

पढीतुं पठ्यमानम् ।

बोलीतुं उच्यमानम् ।

मारीतुं हन्यमानम् ।

जाणीतुं ज्ञायमानम् ।

जिमीतुं भुज्यमानम् ।

रहीतुं स्थीयमानम् ।

दीसतउं दृश्यमानम् ।

पूछीतुं पृच्छयमानम् ।

[४]

करी कृत्वा ।  
लेई गृहीत्वा ।  
देई दत्वा ।  
जाई गत्वा ।  
आवी आगत्य ।  
आणी आनीय ।  
पढी पठित्वा ।  
बोली उक्त्वा ।  
मारी हत्वा ।  
जाणी ज्ञात्वा ।  
यमी भुक्त्वा ।

रही } स्थित्वा ।  
थै }

देखी दृष्ट्वा ।  
पूछी पृष्ट्वा ।

[५]

करिवा कर्तुम् ।  
लेवा ग्रहीतुम् ।  
देवा दातुम् ।  
जाइवा गन्तुम् ।  
आविवा आगन्तुम् ।  
आणिवा आनेतुम् ।  
पढिवा पठितुम् ।

बोलिवा वक्तुम् ।

मारिवा हन्तुम् ।

जाणिवा ज्ञातुम् ।

यमिवा भोक्तुम् ।

रहीवा } स्थातुम् ।  
अच्छिवा }

देषिवा द्रष्टुम् ।

पूछिवा प्रष्टुम् ।

[६]

करणहारु कर्तुकामः ।

लेणहारु ग्रहीतुकामः ।

देणहारु दातुकामः ।

जाणहारु गन्तुकामः ।

आवणहारु आगन्तुकामः ।

आणनहारु आनेतुकामः ।

पठणहारु पठितुकामः ।

बोलणहारु वक्तुकामः ।

मारणहारु हन्तुकामः ।

जाणनहारु ज्ञातुकामः ।

पूछणहारु प्रष्टुकामः ।

[७]

करिवुं कर्तव्यम् ।

लेवुं ग्रहीतव्यम् ।

देवुं दातव्यम् ।

[४]

करी कृत्वा ।  
लेई गृहीत्वा, नीत्वा ।  
देई दत्वा ।  
जाई गत्वा ।  
आवी आगत्य, एत्य ।  
आणी आनीय ।  
पढी पठित्वा ।  
बोली उक्त्वा ।  
मारी हत्वा ।

जाणी ज्ञात्वा ।  
जिगी भुङ्क्त्वा ।  
खाई भक्षयित्वा ।  
रही स्थित्वा ।  
देषी दृष्ट्वा ।  
पूछी पृष्ट्वा ।

[५]

करिवा कर्तुम् ।  
लेवा ग्रहीतुम् ।  
देवा दातुम् ।

जाइवा गन्तुम् ।

आविवा आगन्तुम् ।

पूछिवा प्रष्टुम् ।

[६]

करणहारु कर्तुकामः ।

लेणहारु हर्तुकामः ।

जाणहारु गन्तुकामः ।

आवणहारु आगन्तुकामः ।

आणनहारु आनेतुकामः ।

पठणहारु पठितुकामः ।

बोलणहारु वक्तुकामः ।

मारणहारु हन्तुकामः ।

जाणहारु ज्ञातुकामः ।

पूछणहारु प्रष्टुकामः ।

[७]

करिवुं कर्तव्यम् ।

लेवुं ग्रहीतव्यम् ।

देवुं दातव्यम् ।

जाइवउं गन्तव्यम् ।  
 आविवुं आगन्तव्यम् ।  
 आणिवउं आनेतव्यम् ।  
 पठिवउं पठितव्यम् ।  
 बोलिवउं वक्तव्यम् ।  
 मारिवउं हन्तव्यम् ।  
 जाणिवउं ज्ञातव्यम् ।  
 यमिवउं भोक्तव्यम् ।  
 रहिवउं } स्थातव्यम् ।  
 अछिवउं }  
 देषिवउं द्रष्टव्यम् ।  
 पूछिवउं प्रष्टव्यम् ।

\*

कीधउं } इत्यादौ निष्ठाक्तः ।  
 लीधउं }  
 दीधउं }  
 करतुं } इत्यादौ शतृङ् ।  
 लेतुं }  
 देतुं }  
 कीजतुं } इत्यादौ आनश् ।  
 लीजतुं }  
 दीजतुं }  
 करी } इत्यादौ त्वा ।  
 लेई }  
 देई }  
 करिवा } इत्यादौ तुम् ।  
 लेवा }  
 देवा }

शक ज्ञा धातु प्रयोगे त्वास्थाने तुम्-  
 करी जाणउं कर्तुं जानामि ।  
 पढी सकुं पठितुं शक्नोमि ।

करणहारु }  
 लेणहारु } इत्यादौ शतृ-कानशौ  
 देणहारु }

करिवुं }  
 लेवुं } इत्यादौ तव्यानीयौ ।  
 देवुं }

आजु अद्य ।

कालि कल्ये ।

परम परेद्यवि ।

अरिरम अपरेद्युः ।

आजूणउं अद्यतनम् ।

काल्हूणउं कल्यतनम् ।

हवडां अधुना, इदानीं, सांप्रतं, संप्रति ।

हवडांनुं आधुनिकं, सांप्रतीनम् ।

नहीं तु नो वा, नो चेत् ।

लगइ प्रभृति, आरभ्य ।

पाखइ विना, ऋते ।

मुहीयां मुधा ।

यिम यथा ।

तिम तथा ।

किम कथम् ।

ईणपरि इत्थम् ।

जहींय यदा ।

आविवुं आगन्तव्यम् ।

आणिवुं आनेतव्यम् ।

बोलिवुं वक्तव्यम् ।

मारिवुं हन्तव्यम् ।

जाणिवुं ज्ञातव्यम् ।

जिमिवुं भोक्तव्यम् ।

रहिवुं स्थातव्यम् ।

देषिवुं द्रष्टव्यम् ।

पूछिवुं प्रष्टव्यम् ।

पठिवुं पठितव्यम् ।

आज अद्य ।

कालिह कल्ये ।

परम परेद्यवि ।

अरीरम अपरेद्यवि ।

आजूनुं अद्यतनम् ।

काल्हूनुं कल्यतनम् ।

हवडांनुं आधुनिकं, साम्प्र-  
तीनम् ।

हवडां अधुना, इदानीम्,  
सम्प्रति, साम्प्रतम् ।

नहि तु नो वा, नो चेत् ।

लगइ प्रभृति, आरभ्य ।

पाषइ विना, ऋते ।

मुहीयां मुधा ।

जिम यथा ।

तिम तथा ।

किम कथम् ।

ईणी परि इत्थम् ।

जहींय यदा ।

तहीय तदा ।

कहीय कदा ।

अनेकवार अनेकधा ।

ज्यार अन्यदा ।

सवईवार सर्वदा, सदा ।

एकवार एककृत्वः ।

एवं वारस्य संख्यायाः कृत्वस् ।

एकपरि एकधा ।

व्यहु परि द्विधा, द्वैधम् ।

तृहु परि त्रेधा, त्रैध्यम् ।

च्यहु परि चतुर्धा ।

किहां कुत्र, क ।

यहां यत्र ।

तिहां तत्र ।

ईहां अत्र, इह ।

अनेति अन्यत्र ।

सघले सर्वत्र ।

वली व्याहृत्य ।

तिमइ तत्कालम् ।

झटकई झटिति ।

जूउं पृथक् ।

ताहरुं तदीयम् ।

माहरउं मदीयम् ।

तम्हारउं युष्मदीयम् ।

अम्हारउं अस्मदीयम् ।

ताहरउ तावकः, तावकीनः ।

माहरउ मामकः, मामकीनः ।

जां यावत् ।

तां तावत् ।

जेतलुं यावन्मात्रम् ।

तेतलुं तावन्मात्रम् ।

एवडुं एतावन्मात्रम् ।

केतलउं कियत् ।

केवडुं कियन्मात्रम् ।

एतलउं इयत् ।

जु यदि, यतः ।

तु ततः ।

जं यत् ।

तं तत् ।

जइकिमइ यदि किमपि चेत् ।

इमै अन्यथा ।

इसुं इति ।

होउ एवम् ।

हवं अथ ।

हावलि प्रत्युत ।

पूठिं अनु ।

सामहु अभिमुखः ।

डावउ वाम ।

कहीइ कदा ।

अनेकवार अनेकदा ।

ज्यार अन्यदा ।

सवई वार सर्वदा ।

एक वार एककृत्वः ।

बि वार द्विकृत्वः ।

त्रिणि वार त्रिकृत्वः ।

च्यारि वार चतुःकृत्वः ।

सउ वार शतकृत्वः ।

वारस्य सङ्ख्यायां कृत्वस् ।

एक परि एकधा ।

विहु परि द्विधा ।

त्रिहुं परि त्रिधा ।

चिहुं परि चतुर्धा ।

किहां कुत्र ।

जिहां यत्र ।

तिहां तत्र ।

ईहां अत्र, इह ।

अनेथि अन्यत्र ।

सघलइ सर्वत्र ।

वली व्याहृत्य ।

झटकई झटिति ।

जूउ पृथक् ।

ताहरुं त्वदीयम् ।

माहरुं मदीयम् ।

तम्हारुं युष्मदीयम् ।

अम्हारुं अस्मदीयम् ।

याण यावत् ।

ताण तावत् ।

जेतलुं यावन्मात्रम् ।

तेतलुं तावन्मात्रम् ।

एतलुं एतावन्मात्रम्,

इयत् ।

केतलुं कियत् ।

जु यदि ।

जईयइ किमइ यदि  
किमपि, यदि चेत् ।

ईमहइ अन्यथा ।

इस्यउं इति ।

हा एवम्, अथ ।

हावलि प्रत्युत ।

पूठि अनु ।

सामहु अभिमुख ।

डावउ वाम ।

यमणुं दक्षिणः ।  
 वांकु कुटिलः ।  
 पाधरु ऋजु, सरलः ।  
 लांबु दीर्घः ।  
 हेठि अधः ।  
 ऊपरि उपरि ।  
 आडु तिर्यक् ।  
 तिरछु तिरश्चीनः ।  
 आगिलुं अग्रे, पुरः ।  
 पाछिलु पाश्चात्यः ।  
 सरीषु सदृक्, समानः, सदृक्षः ।  
 किसु कीदृग्, कीदृशः, कीदृक्षः ।  
 इसु ईदृक्, ईदृशः, ईदृक्षः ।  
 यसु यादृक्, यादृशः, यादृक्षः ।  
 तिसु तादृक्, तादृशः, तादृक्षः ।  
 अनेसु अन्यसदृक्, अन्यसदृशः,  
 अन्यसदृक्षः ।  
 तूसरीषु त्वादृशः ।  
 मूसरीषु मादृशः ।  
 तम्हंसरीषु युष्मादृशः ।  
 अम्हंसरीषु अस्मादृशः ।  
 अरहु अर्वाक् ।

परहु पराक् ।  
 पाखलि परितः, सर्वतः, विष्वक्,  
 समन्तात्, समन्ततः ।  
 उगडुमुगडु अवाङ्मूकः ।  
 झलझांषसु चलद्घ्वाक्षम् ।  
 ऊधांधलुं उद्धूलिकम् ।  
 सूगामणुं सूकाजनकम् ।  
 अहिवा अधवा, विधवा ।  
 सूहव सुधवा ।  
 ऊतरिण्यु उत्तारिततृणम् ।  
 पडु प्रतिभूः ।  
 पडुचुं प्रतिभाव्यम् ।  
 उपरीयामणु उत्कटिकाकुलं रणरणकं वा ।  
 ओल्यु अर्वाचीनः ।  
 पयलु पराचीनः ।  
 विलखु विलक्षः ।  
 द्रहद्रहवार जयद्रथवेला ।  
 तांगणी तनुगमनिका ।  
 गोई गोसली गोप्यसिलाका ।  
 ऊकरडी अवकरोत्कारिका ।  
 पूंजु अवकर ।

जिमणु दक्षिण ।	किसु कीदृशः, कीदृक् ।	अम्हंसरीषु अस्मादृशः ।	उत्तराणुं उत्तारिततृणम् ।
वांकु कुटिल ।	जिसु यादृक्, यादृशः,	उरहु अर्वाक् ।	पडु प्रतिभूः, लग्नकः ।
पाधरु ऋजु, सरल ।	यादृक्षः ।	परहु पराक् ।	पडुचुं प्रतिभाव्यम् ।
लांबु दीर्घः ।	तिसु तादृशः, तादृक्,	पाखलि परितः, सर्वतः,	ऊफिरीयामणु उत्कटिका-
हेठि अधः ।	तादृक्षः ।	विष्वक्, समन्तात् ।	कुलं रणरणकं वा ।
ऊपरि उपरि ।	इसु ईदृक्, ईदृशः, ईदृक्षः ।	उगडुमुगडु अवाङ्मूकः ।	उरलुं अर्वाचीनम् ।
आडु तिर्यक् ।	अन्यसरीषु अन्यसदृक्,	झलझांषसु चलत(द्)-	पहलु पराचीनः ।
तिरिछु तिरश्चीनः ।	अन्यसदृशः ।	घ्वाङ्गम् ।	विलखु विलक्षः ।
आगलि अग्रे, पुरः ।	[ तुरुहंसरीषु? ] भवा-	ऊधांधलुं उद्धूलिकम् ।	द्रहद्रहवार जयद्रथवेला ।
आगिलु अग्रेसरः ।	दृशः, भवादृक्षः ।	सूगामणुं सूकाजननम् ।	तांगणी तनुगमनिका ।
पाछिलु पाश्चात्यः ।	तूसरीषु त्वादृशः ।	षीष नही क्षेम क्षितिर्न हि ।	गोई गोसली गोप्यसि(श)-
सरीषु सदृक्, समानः,	मूसरीषु मादृशः ।	अहिवा अधवा ।	लाका ।
सदृशः, सदृक्षः ।	तम्हंसरीषु युष्मादृशः ।	सूहव सुधवा ।	ऊकरडी अवकरोत्कारिका ।
			पूंजु अवकरः सङ्करश्च ।

उक्ति च्यद् प्रकारि—कर्त्ता, कर्मि, भावि, कर्मकर्त्ता । जउ उक्ति पाधरी हुइ—उक्तिमाहि कर्त्ता कर्मु हुइ ते उक्ति कर्त्ता जाणिवी । जु वांकी उक्ति हुइ तु माहि कर्त्ता हुइ, कर्मु न हुइं तउ ते उक्ति भावि जाणिवी । जु कर्म फीटी कर्त्ता आविउ हुइ, ते उक्ति कर्मकर्त्ता जाणिवी । कर्त्ता परस्मै पद दीजइ । कर्मि भावि आत्मनेपद दीजइ ।

पुरुष केता ? ३ । कुण कुण ? प्रथमु, मध्यमु, उत्तमु । नामि बोलावीय ते प्रथमपुरुष । तुं तम्हि मध्यम पुरुषु हुइ । हुं अम्हि उत्तम पुरुष ।

काल केता ? ३ । कुण कुण ? वर्त्तमानु, अतीतु, भविष्यु । वर्त्तइ वर्त्तमानु, वर्त्त्यु अतीतु, वर्त्तसिइ भविष्यु । वर्त्तमानकालि ३ विभक्ति हुइ—वर्त्तमाना, सप्तमी, पंचमी । अतीत कालि ४ विभक्ति—ह्यस्तनी, अद्यतनी, परोक्षा, स्म संयोगि वर्त्तमाना । भविष्यकालि ३ विभक्ति—भविष्यन्ति, आशिः, श्वस्तनी ।

करइ, लिइ, दिइ; करत, ल्यथ [द्यथ?]; करुं ल्युं, द्युं, इसइ बोलि वर्त्तमान कालु । वर्त्तमानानुं परस्मैपदु दीजइ ।

कीजइ, लीजइ, दीजइ; कीज, लीज, दीज; कीजुं, दीजुं, लीजुं; इसइ बोलि वर्त्तमानु कालु । वर्त्तमानानुं आत्मनेपदु दीजइ ।

करिजे, लेजे, देजे; इसइ बोलि वर्त्तमानु कालु । सप्तमीनुं परस्मैपद दीजइ ।

कीजिजे, लीजिजे, दीजिजे; इसइ बोलि वर्त्तमानु कालु । सप्तमीनुं आत्मनेपदु दीजइ ।

करइ, लिइ, दिइ; करउ, लिउ, दिउ; इसइ बोलिवइ वर्त्तमानु कालु । पंचमीनुं परस्मैपदु दीजइ ।

कीजउ, लीजउ, दीजउ; इसइ बोलि वर्त्तमानु कालु । पंचमीनुं आत्मनेपदु दीजइ ।

करतउ, लेतउ, देतउ; करता, लेता, देता; करती, लेती, देती; करतउं, लेतउं, देतउं; इसइ बोलिवइ अतीत कालु । ह्यस्तनी अद्यतनी परोक्षानुं परस्मैपदु दीजइ ।

कीधुं, लीधुं, दीधुं; कीधा, लीधा दीधा; कीधी, लीधी, दीधी; इसइ बोलिवइ अतीत कालु । ह्यस्तनी अद्यतनी परोक्षानुं आत्मनेपद दीजइ ।

करिसिइ, लेसिइ, देसिइ; करसुं, लेसुं, देसुं; करिस्यउं, लेस्यउं, देस्यउं; इसइ बोलिवइ भविष्यु कालु । भविष्यन्तीनुं परस्मैपदु दीजइ ।

करीसिइ, लीजसिइ, दीजसिइ; इसइ बोलि भविष्य कालु । भविष्यन्तीनुं आत्मनेपदु दीजइ ।

भविष्यकालि आशीर्वादयोगी आशीर्विभक्ति हुइ; अनइ भविष्य कालि योगि श्वस्तनी विभक्ति दीजइ । भविष्यन्तीनी वाणी बोलीइ ।

जउ—जु करत, जु लेत; जु देत; इसिइ बोलिवइ अतीत कालु । क्रियातिपत्तीनउं परस्मैपद दीजइ ।

जु कीजत, जु दीजत, जु लीजत; इसिइ बोलिवइ अतीत कालु । क्रियातिपत्तीनउं आत्मनेपद दीजइ । कर्त्ता परस्मैपद दीजइ, कर्मि आत्मनेपदु दीजइ ।

अथ त्यादि विभक्ति केती ? १० । कुण कुण ? वर्त्तमाना १, सप्तमी २, पंचमी ३, ह्यस्तनी ४, अद्यतनी ५, परोक्षा ६, श्वस्तनी ७, आशीः ८, भविष्यन्ती ९, क्रियातिपत्ती १० । अकेकी विभक्ति १८ वचन—९ परस्मैपद तणां, ९ आत्मनेपद तणां ।

ति, तस्, अन्ति; सि, थस, थ; सि, वस्, मस्, इं नव परस्मैपद तणां । ते, आते, अन्ते, से, आथे, ध्वे; ए, वहे महे; इं नव आत्मनेपद तणां ।

ति तस्, अन्ति; इति प्रथमपुरुषः । सि, थस्, थ; इति मध्यमपुरुषः ।



मि, वस्, मस्; इति उत्तमपुरुषः । ते,  
आते, अन्ते; इति प्रथमपुरुषः । से,  
आथे, ध्वे; इति मध्यमपुरुषः । ए वहे,  
महे; इति उत्तमपुरुषः ।

ति, एक वचनु; तस्, द्विवचनु; अन्ति  
बहुवचनु । सि, एकवचनु; थस्, द्विवचनु;  
थ, बहुवचनु । मि, एकवचनु; वस्,  
द्विवचनु; मस्, बहुवचनु । एवं सर्वत्र ।

जु कर्ता प्रथम पुरुष हुइ तु क्रियां प्रथम  
पुरुष हुइ । जु कर्ता मध्यम पुरुष हुइ तु क्रियां  
मध्यम पुरुष हुइ । जुकर्ता उत्तम पुरुष हुइ तु  
क्रियां उत्तम पुरुष हुइ ।

जु कर्ता आगलि एक वचनु हुइ, तु क्रिया  
आगलि एक वचनु । जु कर्ता आगलि द्विवचनु,  
तु क्रिया आगलि द्विवचनु । जु कर्ता आगलि  
बहुवचनु, तु क्रिया आगलि बहुवचनु ।

जु कर्ता उक्ति हुइ तु [क्रिया आगलि ?]  
कर्तानी अपेक्षां विभक्ति दीजइ । जु कर्मि उक्ति हुइ  
तु क्रिया आगलि कर्मनी अपेक्षां विभक्ति दीजइ ।

### [ शब्द संग्रह ]

चउकीवटु चतुष्कपट्ट ।

वटवालनुं वर्त्मपालनम् ।

वेहडुं द्विघटम् ।

गुढुं गुदगूढम् ।

चउकीवटा चतुष्कपटः ।

वाटवालणुं वर्त्मपालनम् ।

वेहडुं द्विघटम् ।

गुढुं गुदगूढम् ।

पिसरहिडी क्षिप्रसरही-  
ण्डिका ।

ओरस अवघर्षकः ।

घरट घर्षकः ।

वेसर द्विशरीरः ।

अरत परत वाष सरीषउ

आकृत्या प्रकृत्या पित्रा सदशः

खीसउ क्षिप्रस्वकः ।

कोथली कोशस्थली ।

अग्गेवाणू अग्र्यानीकम् ।

पाछेवाणू पश्चादनीकम् ।

वूसट [च]पेटा ।

चुहुटली चञ्चुपुटिका ।

कावजि कायाटनी, काया-  
वालिनी वा ।

गरढउ गतार्धवयाः ।

वळीयायित वस्तुवित्तः ।

नीक नीरक्ता ।

ऊसलसीधुं उल्लासितसन्धि-

कम्, उत शलंभं वा ।

मऊ मागौकाः, [ मुक्तौका  
वा ]

वेगडी विकटशृङ्गी ।

मीढी मिलितशृङ्गी ।

फाडी प्रसृतशृङ्गी ।

खिसरहंडी क्षिप्रसरहिंडिका ।

ओरसु अवघर्षः ।

घरट्टु घर्षकः ।

वेसरु द्विशरीरः ।

अरतपरत वापसरीषउ आकृत्या प्रकृत्या  
च पितृसदशः ।

अग्गेवाणु अग्रानीकम् ।

पाछेवाणु पश्चादनीकम् ।

मौ मागौकाः, मुक्तौकाः ।

वेगडि विकटशृङ्गी ।

मीढी मिलितशृङ्गी ।

फाडी प्रसृतशृङ्गी ।

कुंढली कुंढलितशृङ्गी ।

मुहषायी परोक्षवादः ।

लिपसणुं लिप्सायनम् ।

वरहलि वीतवेत्रा ।

पटांतरं प्रत्यन्तरम् ।

विज्जाहरी विजयगृही ।

कोठउ कोष्ठक ।

डोकरु डोलत्करः ।

छींडणि छिद्राटनी ।

छेकडि छिद्रकरी ।

सीरामणु शीताशनं, शरीराप्यायनकं वा ।

सउडि संवृत्तपटी ।

मुहुखाई परोक्षवादी ।

लिपसणुं लिप्सायिकम् ।

वरहलि वीतवेत्रा ।

वरसचियारणि समांसमीना

पटांतरं प्रत्यन्तरम् ।

[विज्जाहरी] विजयगृहा ।

कोठउ कोष्ठकः ।

डोकरउ डोलत्करः ।

छींडणि छिद्राटिनी ।

सीरष शीतरक्षा ।  
 तुलाई तूलिका ।  
 ऊसीसउं उपधानम् ।  
 शलाटु शिलाघटकः ।  
 मडि मड्डिका ।  
 खंडायितु खड्गवित्तः ।  
 भथायितु तूणवित्तः, भस्त्रवित्तो वा ।  
 पूर्णी पिचुमर्दी ।  
 आंगडणु अंगमंडनम् ।  
 कागु काकः, वायसो वा ।  
 वावि वापी ।  
 कूउ कूपः, अन्धुः ।  
 तलागु तडाग, जलाधारः ।  
 खडोखली दीर्घिकाः  
 ..... पडूकरणम् ।  
 बगाई जृम्भिका ।  
 चीपडीउ चिपटः ।  
 गूहली गोमुखा ।  
 कोसींउउ कोषसमृद्धः ।  
 कालियु कालिकः ।  
 व(च?)णहडीउ चणकवर्तकः ।  
 लुंकडि लोमकटिका ।  
 सवार सवेला ।  
 मांकुण मत्कुणः ।  
 कालाखरिउ कालाक्षरितः, दाणी ।  
 धणिउ ज्ञणितः ।  
 दीवाली दीपालिनी, दीपोत्सवो वा ।  
 त्रुटी त्रिपुटी ।  
 धुलहडी धूलिपटिका, धूलितटी, रजोत्सवो  
 वा ।  
 थूंकु निष्ठीव ।  
 आभूयानुं उद्भिद्यमानम् ।  
 झगडउ उद्भदः ।

छयकारु गेयकारु ।  
 चिणोठी चित्रपृष्ठा, गुंजा, कृष्णलवा ।  
 औंडक अपराख्या ।  
 हांकणउं स्थागनकम् ।  
 सूणहरउं शयनगृहम् ।  
 पथरणउं प्रस्तरणम् ।  
 ओढणउं आच्छादनम् ।  
 नणंद ननन्दा ।  
 नणदोई ननान्दपतिः ।  
 जमाई जामाता ।  
 नाणिद्रउ ननान्दसुतः ।  
 भत्रीजउ भ्रातृजः, भ्रातृसुतः ।  
 परीयटु निर्णेजकः ।  
 छीपउ रजकः ।  
 कुतिगीउ कौतुकिकः ।  
 अणगुक अनग्निपक्कः ।  
 फिरक स्फुरितचक्रिका ।  
 पाटूआली पादप्रहारवती ।  
 षाणीकणउं षा(खा)दनपरम् ।  
 परमूणउं परमदिवसीयम् ।  
 पुरोकउं प्राक्वर्षीयम् ।  
 सरलउ दीर्घः, प्रलंबः ।  
 ऊघडदूघडउ उद्घटदुर्घटः ।  
 कहूआलउ कोलाहलः ।  
 देसानी छायाकरः ।  
 मोलीउं } मूर्द्धवेष्टनम्,  
 मोसंधीयुं } उष्णीषं वा ।  
 निलाड ललाट, निटिलं वा ।  
 पोठीउ पृष्ठवाहक ।  
 अरणइ अरति ।  
 राजगुल राजकुलम् ।  
 किरि किल ।  
 विमणउं द्विगुणम् ।

त्रिगुणु त्रिगुणम् ।  
 चउगुणउं चतुर्गुणः ।  
 चीषलालुं कर्दमाकुलं, पङ्किलं वा ।  
 परिवायुं प्रपारितम् ।  
 मुडइं मन्दं मन्दम् ।  
 वली वली पुनः पुनः ।  
 पालटउ परिवर्त्तः ।  
 पालटिउ परिवर्तितः ।  
 बापडउ वराकः ।  
 विहरउ व्यतिकरः ।  
 लागु लग्नः ।  
 लगाडिउ लगितः ।  
 पाटलउ पाटचारः ।  
 जुहारु नमस्कारः ।  
 सोहिलउं सुखावहम् ।  
 दोहिलउं दुःखावहम् ।  
 रुलीयामणउं रतिजनकम् ।  
 ऊदेगामणउं उद्वेगजनकम् ।  
 राउताई राजपुत्रता ।  
 राउत राजपुत्र ।  
 द्रम्मामु द्रम्ममय ।  
 असुणिउ अपशकुनिक ।  
 सुण शकुन ।  
 स(सु)णउं स्वप्नम् ।  
 अंबोडउ धम्मिल्ल ।  
 वीणि वेणि ।  
 मांडहिय बलात्कारेण, हठाद्वा ।  
 घायिसउं सहसैव ।  
 देहरासरु देवतावसरः ।  
 आरतीयासरु आरात्रिकावसरः ।  
 सर्वोसरु सर्वावसरः ।  
 मोटउ स्थूल ।

नान्हउ लघु, ह्रस्व ।  
 कडब कणीम्बा ।  
 आरती आरात्रिका ।  
 धूपधाणउं धूपधाम, धूपदहनपात्रम् ।  
 वरांसिउ विपर्यस्त ।  
 वरांसउ विपर्यास ।  
 आखुडिउ अवस्खलित ।  
 घोडाहडि वाजिशाला, अश्वकुटी वा ।  
 रसोयि रसवती, पाकस्थानं, महानसं वा ।  
 भंडारु भांडागारः, कोशो वा ।  
 मंत्रासरु [ मंत्रावसरः ] ।  
 हथसाल हस्तिशाला, गजसदनं वा ।  
 श्रीगरणु श्रीकरणम् ।  
 वयगरणउ व्ययकरणम् ।  
 घडांमंची घटमञ्चिका ।  
 दाबडउं जलयंत्रम् ।  
 अरहट्टु अरघट्टक ।  
 परव प्रपा ।  
 छमकाव्यउं छमत्कारितम् ।  
 अवाडूउ प्रतिकूल ।  
 सवाडूउ सानुकूलः ।  
 पडीसारउ प्रतीसारक ।  
 गुडिउ गुडितः ।  
 पाव(ख?)रिउ प्रक्षरितः ।  
 कु जि को जानाति ।  
 बलहि बालदधि, बालहिता वा ।  
 वरगडु वराकर्षक ।  
 जानुत्र यज्ञयात्रा ।  
 जानावासउ यज्ञावासक ।  
 एकउडउ एकपटिक ।  
 घूघटिउ अवगुण्ठन ।  
 गमाणि गवादिनी ।

आहरजाहर आगमनगमनिका ।  
 खाजलु खाद्यफलम् ।  
 पीजहलु पेयफलम् ।  
 मसाहणी महासाधनिक ।  
 आखउंडली अक्षपटलिका ।  
 बलबलीउ वाचाल, वावदूक ।  
 मेरायीयुं मेराद्यकम् ।  
 अभोखणुं अभ्युक्षणम् ।  
 ऊलिषउ उदकोल्लञ्चन ।  
 पच्छोकडु पश्चादोकस्तटम् ।  
 पडोसु प्रत्योकस् ।  
 उपवासी उपोपित ।  
 फुई पितृष्वसा ।  
 मासी मातृष्वसा ।  
 वहिन खसा ।  
 मु( माउ? )लाणि मातुलपत्नी ।  
 भुजाई भ्रातृजाया ।  
 सासू श्वश्रू ।  
 पीत्राणी पितृव्यपत्नी ।  
 पीत्रीयु पितृव्यक ।  
 माउलउ मातुल ।  
 फुईहायी पितृस्वस्त्रीय ।  
 माईय ( °हायी ) }  
 मास्याही } मातृष्वस्त्रीय ।  
 मा[ उ? ]लाही मातुलीय ।  
 देशांतरी देशान्तरिक ।  
 पलवटि परिवलितपटी ।  
 पिराणउ प्रतोदः, प्राजिनं, तोत्रं, प्रवयणंवा ।  
 चंदौउ चंद्रोदय, उल्लोच ।  
 परीयच्छि तिरस्करिणी ।  
 बाउलु बब्बूल ।  
 आंबिली चिंचा, चिञ्चिणी वा ।

दीवटीउ दीपवर्तिक ।  
 चांद्रिणानी लांप चंद्रायलिप्ता ।  
 धातस्वायु धातुस्वादकः ।  
 साध ( थ? ) संस्था ।  
 आद्रहणु अधिश्रयणम् ।  
 अहिनाणु अभिज्ञानम् ।  
 हराविउ पराजित ।  
 विदाणउ वितानप्रभाव ।  
 कोटीलउ कुट्टनक ।  
 परालु पलालम् ।  
 अरडकमल्लु अर्यटक[ म? ]ल्ल ।  
 सूआडि सूतिकागृहम् ।  
 भोलउ मुग्धः ।  
 पाहरी प्राहरिकः ।  
 गउखु गवाक्ष ।  
 नीद्रालूखउ निद्रारुद्धक ।  
 ऊंडहणुं उद्धहनकम् ।  
 खोडउ खड्गः ।  
 पलेवलउं प्रदीपकम् ।  
 न्युंजणउं नियन्नकम् ।  
 गउंछणउं गुच्छनकम् ।  
 न्युंछणउं न्युञ्छनकम् ।  
 छाणावलि कारीषावली ।  
 ऊदेही उद्देदिका ।  
 आडाबंग तिर्यक्सूत्रिका ।  
 ऊटाटीयुं उट्टीकनम् ।  
 कूडछी कूर्मोच्छ्रयिका ।  
 जोत्रु योक्त्रम् ।  
 जूसरू युगम् ।  
 तीन्हउं तीक्ष्णम् ।  
 कोटडउं प्राकारम् ।  
 गढु दुर्गः ।

## अथ क्रियावचनानि

मांजइ प्रमार्ष्टि ।  
 जागंइ जागर्त्ति ।  
 गायइ गायति ।  
 होमइ जुहोति ।  
 गूथइ गुथ्यति ।  
 करइ करोति, कुरुते, विदधाति, विधत्ते ।  
 धरइ दधाति, धत्ते, धरति, धारयति ।  
 दि यच्छति, राति, दत्ते, दाति ।  
 लि नयति, आदत्ते, गृह्णाति, विगृह्णाति ।  
 ऊडइ उत्पतति, उड्डीयते ।  
 आचरइ आचरति ।  
 पवित्रइ पवित्रयति, पुनाति ।  
 ऊपणइ उत्पुनाति ।  
 धूपइ धूपायति ।  
 क्षरइ क्षरति ।  
 वीकइ विक्रीणाति, विक्रीते ।  
 मर्दइ मुद्राति ( मृद्राति ? ) ।  
 मिलइ मिलते ।  
 अडइ अड्डते ।  
 छूटइ छुट्यति ।  
 ऊठइ उत्तिष्ठति ।  
 नीठइ निस्तिष्ठति ।  
 किरगिरइ किरगिरति ।  
 वषाणइ व्याख्यानयति ।  
 छिछ(प ?)इ छुपति, मृशति ।  
 वावइ वपति ।  
 चोरइ मुष्णाति, चोरयति ।  
 ऊखेडइ उत्कीलयति ।  
 डांभइ दम्नाति ।  
 वारइ वारयति, निवारयति, निषेधयति ।  
 पल्हालइ प्रक्लिद्यति ।  
 पालुइ पल्लयति ।

थाकइ स्थानमाहरति, स्थानयति ।  
 फूटइ स्फुटति ।  
 पतीजइ प्रत्येति, प्रत्ययति, प्रतीयते ।  
 वरासीयि विपर्यस्यते ।  
 जाम(य?)इ जायते ।  
 हुइ भवति ।  
 खाजइ कण्डूयति ।  
 ऑलंभइ उपालभते ।  
 ऊटंठइ उद्वन्धयति ।  
 क्रमइ क्रामति ।  
 आयसिइ आदिशति ।  
 वाधइ वर्द्धते ।  
 निबीजइ निर्विज्यते ।  
 कुपइ कुप्यते, क्रुध्यति, रुष्यति ।  
 तोलइ तूलयति ।  
 सहइ क्षमति, तितिक्षति, सहते, क्षाम्यति,  
 मृष्यति ।  
 मरइ म्रियते, विपद्यते ।  
 आपुडइ आस्वलति ।  
 फडफडइ फटफटायते ।  
 शपइ शपति, शप्यते इत्यादि ।  
 तिष्ठति गम्लृ दृशूज्वलौ  
 स्पृहस् पृच्छति नी पचक् पठौ ।  
 क्षिप् भणौ विश मुंच् षिच् कृषौ  
 ल्यज दहौ तरति स्तु चल त्रमौ ॥ ?  
 लिखन् मोखन् जिघ्रति वर्षे  
 पिब् पतेऽथ जि जीव परस्मै ।  
 यज् वपौ वद् वेज् वसौ  
 वहत्युभयमाह भवादिगणानाम् ॥ २  
 वर्तते च रमते वृधूव्यथौ  
 याचते च लभते च शोभते ।  
 कंपते च घटते सुखायते  
 प्रारभते सहते तदात्मने ॥ ३

अद् हन् इण् भा खा शास्ति वा जागृ  
माति स्वप रुद वच वायाम्नात्यदादिः परस्मै ।  
दुह लिह च दा धत्ते भयं स्तुइ भी ही  
निगदित इह लोके आत्मने षूङ् धातुः ॥ ४

व्यध् हृष्टौ कुप् तृत्यनशो मुष  
म्लिष् दुषौ क्लिन्न शाम्यति तुष्यति ।  
भ्रम कुपौ च दिवादि परस्मै  
तम विदौ गदौ गदितस्तु किलात्मा ॥ ५

विञ् वृञ् किल दुञ् शकापौ  
स्त्रादिगा निगदितास्तु परस्मै ।  
रुदभिदा छिद भुञ्जयुजौ वा  
भुजयुता उभयं च रुधादिः ॥ ६ ॥  
तनोति डुकृञ् भयं तनादिः

स्तूपू ग्रह ही मुष लूड विक्री ।  
क्रियादयः पार्युभयं च चिति  
लोके सभाजिश्वरताडि मिक्षौ ॥ ७  
अत्तिकरण कर्त्तरि । दिवादेर्यत् । नु खादेः ।  
तनादेरुः । ना क्र्यादेः । चुरादेश्च । इमानि  
सर्वाणि विकरणसूत्राणि ।

परस्मैपदे ह्यस्तनीं यावत् । आत्मनेपदे सर्वत्र  
सार्वधातुके यण् ।

लज्जासत्तास्थितिजागरणं  
वृद्धिक्षयभयजीवितमरणम् ।  
शयनक्रीडारुचिदीप्यर्था  
धातव एते कर्मविहीनाः ॥ १

[ कर्मणि वाक्य ]

ईणं लाजीइ अनेन हीयते ।  
तइं भलइं हुईइ त्वया भव्येन भूयते ।  
मइं रहीइ मया स्थीयते ।  
पाहरीं जागीइ यामकेन जागर्यते ।  
एयु वाधइ असौ वर्द्धते ।  
एयु जीवइ असौ जीवति ।  
वयरी मरीइ अरिणा म्रियते ।

त्वया सुप्यते । बालेन रम्यते । दानिना  
शोभ्यते । कर्त्तरि कर्मण्यपि कर्म नागच्छति ।

अथ द्विकर्मको भावः ।

दुहि याचि रुधि प्रच्छि मिक्ष  
चिजानुपयोगिनिमित्तमपूर्वविधौ ।  
ब्रुवि शासिगणेन च यत्सते (?)

तदकीर्त्तितमाचरितं कविना ॥ १

जयत्यर्थयती मन्थि चतुर्थो दण्डयत्यपि ।

एभिः सह बुधैर्ज्ञेया द्वादशैव दुहादयः ॥ २

नीवह्योर्हृक्कृषोश्चापि गत्यर्थानां तथैव च ।

द्विकर्मकेषु ग्रहणं प्यन्ते कर्म च कर्मणः ॥ ३

असौ गां दोग्धि पयः । विप्रो राजानं गां  
याचते । असौ गामवरुणद्धि ब्रजम् । पान्थश्छात्रं  
पन्थानं पृच्छति । असौ वृक्षमवचिनोति फलानि ।  
विप्रः शिष्यं धर्मं ब्रूते । पण्डितः शिष्यं धर्म-  
मनुशास्ति । कोऽपि बुद्ध्या ग्रामं छात्रशतं  
जयति । प्रार्थयति राजानं ग्रामं गुरुः । मथ्नन्ति  
स्म जलधिं देवासुराः ।

[ द्विकर्मक वाक्य ]

एयु देवदत्तु गर्गानुं सउ दंडइ असौ  
देवदत्तो गर्गान् शतं दण्डयति ।

ए छाली गामि लिइ अजां नयति ग्रामम् ।

ए कुंभतणु भारु हरइ असौ कुंभं भारं  
हरते । वहति ग्रामं भारं देवदत्तः । कर्षति  
शाखां ग्रामं देवदत्तः ।

इनन्तेऽपि द्विकर्मका भवन्ति—

भोजयति पायसं छात्रं कश्चित् ।

बोधयति बटुं ग्रन्थं गुरुः ।

वाचयति श्लोकं पुत्रं पिता ।

कर्मण्यपि द्विकर्मका भवन्ति—

दुह्यते गौः पयो गोपालेन ।

याच्यते राजा गां विप्रेण ।

रुद्धयते गौर्रजं गोपालकेन ।  
 पृच्छयते छात्रः पंथानं पान्थेन ।  
 अवचीयते वृक्षः फलानि पुरुषेण ।  
 अनुशिष्यते छात्रो धर्मं पण्डितेन ।  
 प्रार्थयते राजा ग्रामं गुरुणा ।  
 एवं सर्वत्र ।

पूर्वकर्त्तरि षष्ठी, कर्मणि षष्ठी, करणषष्ठी, संप्रदानषष्ठी, अपादानषष्ठी, संबंधिषष्ठी, निर्द्धारणषष्ठी, काले भावे षष्ठी, अधिकरणषष्ठी—एते षष्ठीभेदाः । सर्वत्र षष्ठीबाधकानि कारकाणि ।

तइं गामि जाइवउं गन्तव्यं ते ग्रामे ।  
 मइ घरि रहिवउं मम गृहे स्यातव्यम् ।  
 कृत्यानां कर्त्तरि वा षष्ठी—

एयु शास्त्र वाचणहारु असौ शास्त्राणां वाचयिता ।

एयु वेद पढणहारु असौ वेदानामध्येता ।  
 णक्त्तुचोः कर्मणि षष्ठी, इतरेषां द्वितीया ।

एयु अग्नि ध्रायु असौ अन्नानां तृप्तः ।  
 विसनरु काष्टि न ध्रायु अग्निः काष्ठानां न तृप्यति ।

पाणी भरिउं सरोवर जलस्य पूर्णं तडागम् ।

कोठउ कणि भरिउ कणानां पूर्णोऽयं कोष्ठकः ।

इत्यर्थे पूरिसुहितार्थानां करणे षष्ठी ।

एयु प्रधानरहि लांच भइसि दि असावमाल्यस्य लञ्चया महिषीं ददाति ।

एयु पोष्यवर्गरहिं यावज्जीवु भरणु पोषणु दि असौ पोष्यवर्गस्य यावज्जीवं भरणपोषणं ददाति ।

ऐहिकफलार्थसंप्रदाने षष्ठी, पारलोके च चतुर्थी । यथा—कश्चित्ब्राह्मणेभ्यो गां

ददाति, असौ ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां वितरति, इत्यर्थे पारलौकिके निःस्पृहे चतुर्थी ।  
 भूतंतउ प्राणीया भला भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठाः ।

प्राणीयां तु मतिजीवी भला प्राणिनां मतिजीविनः श्रेष्ठाः ।

इत्यर्थे अपादाने ।

निर्द्धारणे षष्ठी, सप्तमी च भवति—  
 मनुष्यमाहि ब्राह्मण श्रेष्ठ मनुष्येषु ब्राह्मणाः श्रेष्ठाः ।

गाईमाहि काली गाइ घणु दूधु गोषु कृष्णा संपन्नक्षीरा गौः ।  
 इति सप्तमी च भवति ।

बांभणनउं घरु ब्राह्मणस्य गृहम् ।

व्यासनउं ग्रामु व्यासस्य ग्रामः ।  
 इति संबंधिषष्ठी ।

लोक विक्रमादित्यु राउ स्मरइ लोको विक्रमादित्यराज्ञः स्मरति ।

एयु बोल्या प्रयोग संभारतउ श्लोक नींपजावइ असावुक्तानां प्रयोगानां स्मरन् श्लोकान् निष्पादयति ।

श्रीवासुदेव दैत्य मारइ श्रीवासुदेवो दैत्यानां निहन्ति ।

राउ बांभणना वयरि मारइ राजा विप्राणां वैरिणां घ्नाति (हन्ति) ।

इत्यर्थे स्मरणहिंसार्थानां प्रयोगे कर्मणि षष्ठी ।

एयु देवतणइ अर्थि फूलपत्री मेलइ असौ देवताभ्यः पुष्पपत्राणामुपस्कुरुते ।

एयु श्राद्धतणइ अर्थि चोषा मुग मेलइ असौ श्राद्धाय तन्दुलमुद्गानामुपस्कुरुते ।

इति करोतेः प्रतियत्ने कर्मणि षष्ठी ।

एयु दोरी सापु भणी जाणइ असौ  
रज्जुं सर्पस्य जानीते ।

एयु तेलु घीउ भणी जाणइ असौ तैलं  
घृतस्य जानीते ।

एयु एकलउ विदेशि जातउ भयतउ  
पीलउ पुरुषभणी जाणइ असौ  
एकाकी विदेशं व्रजन् भयात् कीलकं  
नरस्य जानीते ।

इत्यर्थे संभ्रान्तिज्ञाने जानातेः कर्मणि षष्ठी ।

सुखदुःखाभ्यां करणे द्वितीया—

एयु सुखिहिं दीहाडा नींगमइ असौ  
सुखं दिनानि निर्गमयति ।

एयु दुःखिं द्रव्यु उपार्जइ असौ दुःखं  
द्रव्यमुपार्जयति ।

हेत्वर्थे तृतीया—

राउ लोकपाहिं करसणु करावइ राजा  
लोकैः कर्षणं कारयति ।

ब्राह्मणु शिष्यपाहिं पोथउं लिखावइ  
विप्रः शिष्येण पुस्तकं लेखयति ।  
इति हेतु कर्त्ता ।

कालाध्वभावदेशानां कर्मसंज्ञा—

वैष्णवु रातिं च्यारइ पुहुर जागइ रज-  
न्याश्चतुरो यामान् जागर्त्ति वैष्णवः ।

सात मसवाडा नइ वहइ सप्तमासानदी  
वहति ।

क्वापि कृतो हीने कर्मणि प्रधानक्रियापेक्षया  
द्वितीया न भवति—

तइं वयरी आणी बांधीवउ त्वया  
रिपुरानीय वध्यताम् ।

‘विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम् ।’

ईणं हु व्यारीउ द्रव्यु लीधउ अनेनाऽहं  
विप्रतार्थं द्रव्यं गृहीतः ।

उ० २० १०

गल्यर्थकर्मणि चतुर्थी वा—

ग्रामं गच्छति, ग्रामाय गच्छति असौ ।

कर्मप्रवचनीयैश्च । अनु-अभि-प्रति एते  
कर्मप्रवचनीयाः । एषां योगे द्वितीया ।

अनुशब्दः पृष्ठे अभिज्ञाने मध्ये सन्मुखे समीपे  
सहार्थे—

तु पूठि त्वामनु ।

पर्वतनइ अहिनाणि गामु वसइ

पर्वतमनु नगरं वसति ।

आंवासाहि कोइलि वासइ सहकारमनु-  
कोकिला कूजति ।

वृक्ष सामहुं आभउं वृक्षमन्वभ्रपटलम् ।  
देवालय कन्हलि तीर्थु छइ देवालयमनु  
तीर्थ तिष्ठति ।

तइसउं वात करइ त्वामनु वात्तां करोति ।

गुरु साऱहु ऊठइ असौ गुरुमभ्युत्तिष्ठति ।

ग्रामि दीहाडी प्रतिं एकु द्रम्मु लहइ  
ग्रामे प्रतिदिनं द्रम्मैकं लभते ।

एयु ब्राह्मणप्रतिं भक्ति वोलइ असौ  
प्रतिविप्रं भक्तिं जल्पति ।

उभयतः परितः सर्वतो योगे द्वितीया—

देवालय विहुंगमे वड दीसइ देवालय-  
मुभयतो न्यग्रोधो दृश्यते ।

घरपाषलि वाडि करइ गृहं परितो वृत्तिं  
करोति ।

गाम सविहुं गमा क्षेत्र वाव्यां ग्रामं  
सर्वतः क्षेत्राण्युत्तानि ।

उपर्यधोऽधीनां सामीप्य एव कर्मद्वित्वे—

ऊपरि ऊपरि गामु उपर्युपरि ग्रामम् ।

हेठलि हेठलि नगरु अधो अधो नगरम् ।

अदूरे एनोऽपञ्चम्याः, एनप्रत्ययान्तयोगे द्वितीया—

गाम दाहिण गमइ दूकडी वाडी ग्रामं  
दक्षिणेन निकटं वाटिका ।



गाम बिहुं विचि नदी गामद्वयमन्तरा नदी ।  
नगरनइं उत्तर गमइं ढूकडउ पर्वतु  
नगरमुत्तरेण निकषा पर्वतः ।

समयाहाधिगन्तरान्तरेण युक्ता द्वितीया—  
तू कन्हलि त्वां समया ।  
एयु भुंडउ एनं धिग् ।  
तू पाषइ त्वामन्तरेण ।  
मूं पाषइ मामन्तरेण ।

### [ समास प्रकरण ]

द्विगुर्द्वन्द्वोऽव्ययीभावः कर्मधारय एव च ।  
तत्पुरुषो बहुव्रीहिः षट् समासाः प्रकीर्त्तिताः ॥  
पदे तुल्याधिकरणे विज्ञेयः कर्मधारयः ।

( १ ) जीणं समासि वि पद तुल्या-  
धिकरण हुइं सु समासु कर्मधार-  
यसंज्ञिक हुइ ।  
नीलं उत्पलं—नीलोत्पलम् । उत्तमः पुरुषः—  
उत्तमपुरुषः ।

[ संख्यापूर्वो द्विगुरिति ज्ञेयः ]

( २ ) जीणइं समासि संख्या गणितु  
पूर्वपदि बोलाइ ते समास द्विगु  
जाणिवउ ।

सप्तऋषयः । पञ्चाम्नाः । पञ्चानां मूलानां  
समाहारः—पञ्चमूली ।

विभक्तयो द्वितीयाद्या नाम्ना परपदेन तु ।  
समस्यन्ते, समासो हि ज्ञेयस्तत्पुरुषस्य च ॥

( ३ ) जीणं समासि द्वितीयालगइ  
छ विभक्ति आगिलइं पदि सरसी  
मेलीयि सु समासु तत्पुरुषु  
जाणिवउ ।

ग्रामं गतः—ग्राम गतः, नखैर्निर्भिन्नः—नखनि-  
र्भिन्नः । ब्राह्मणाय देयं—ब्राह्मणदेयम् ।  
मञ्चात्पतितः—मञ्चपतितः । राज्ञः पुरुषः—  
राजपुरुषः । अक्षेषु शौण्डः—अक्षशौण्डः ।

स्यातां यदि पदे द्वे तु, यदि वास्य बहून्यपि  
तान्यन्यस्य पदस्यार्थे बहुव्रीहिः समस्यते ॥

( ४ ) जीणइं समासि वि पद अथ  
घणां पद अनेरा पद तणइ अर्थि  
मेलाइं तेयु समासु बहुव्रीहि  
जाणिवउ; अनइ बहुव्रीहि समासि  
यद् शब्द छेहि प्रयुंजीइ ।

(क) घणउ गुड छइ जीण लाडू  
प्रभूतो गुडो यस्मिन् मोदके स प्रभू-  
तगुडो मोदकः ।

(का) सदाचार बांभणु जीणइं गामि  
सदाचारा विप्रा यस्मिन् ग्रामे स  
सदाचारविप्रो ग्रामः ।

(कि) घणां निर्मलां पाणी जीणं नदि  
प्रभूतानि निर्मलानि उदकानि यस्यां  
नद्यां सा प्रभूतनिर्मलोदका नदी ।

(की) पामी विद्या जेहि पुरुषि संप्राप्ता  
विद्या येनैरैः ते संप्राप्तविद्या नराः ।

(कु) निर्मलबुद्धि विप्र वैद्य सुभट  
अछइं जीण राज भुवनि निर्मलबु-  
द्धिका विप्रा वैद्याः सुभटा यस्मिन् राज-  
भुवने तद् निर्मलबुद्धिविप्रवैद्यसुभटं  
राजभुवनम् ।

(कू) रुलीयायित कीधा जीणं बांभण  
तोषिता विप्रा येन स तोषितविप्रः ।

(के) ऊगिउ वृक्षु जीणइं क्षेत्रि  
प्रखढो वृक्षो यस्मिन् क्षेत्रे तत् प्रखढ-  
वृक्षं क्षेत्रम् ।

(कै) ढूकडी गंगा जीणइं देशि आसन्ना  
गंगा यस्मिन् देशे स आसन्नगंगो देशः ।

(को) सरीषउं नामुं जेहनउं सदृशं नाम  
यस्य स सनामा ।

(कौ) सरीषुं गोत्रु जेहनउं सद्वशं गोत्रं  
यस्य स सगोत्रः ।

द्वन्द्वसमुच्चयो नाम्नोर्वहूनां वापि यो भवेत् ।

(५) जीणं समासि विहुं नामनउ  
समुच्चयुः अथ घणां नामनउ  
समुच्चयु ते समासु द्वंद्व जाणिवउ ।

नरश्च नारायणश्च—नरनारायणौ । पीठं  
च छत्रं च उपानच्च पीठछत्रोपानहम् ।

ब्राह्मणाश्च क्षत्रियाश्च वैश्याश्च शूद्राश्च ब्राह्म-  
णक्षत्रियविदूशूद्राः ।

—चकारबहुलो द्वंद्वः ।

पूर्वं वाच्यं भवेद्यस्य सोऽव्ययीभाव इष्यते ॥

(६) जीणं समासि अव्ययपदसंयुक्त  
पूर्वपद वाच्यु हुइ सु समासु अव्ययी-  
भाव जाणिवु ।

गामनइ पाषइ अधिकरी प्रवर्तइ  
अधिग्रामं नरः ।

सामीप्ये अव्ययीभावः—

घर कन्हलि वृक्षु उपगृहं वृक्षः ।

वृक्ष कन्हलि घरु उपवृक्षं गृहम् ।

वांभणनउ अभावु ब्राह्मणानामभावः  
अब्राह्मणम् ।

मापीनउ अभावु मक्षिकानामभावो  
निर्मक्षिकम् ।

अनुयोगः पश्चादर्थे—

वांभण पाछलि शिष्य अनुविप्रं शिष्यः ।

राजा पाछलि सेना अनुराजं सेना ।

वर पाछलि गीत गाती स्त्री अनुवरं  
गानगायन्त्यो नार्यः ।

केदारसमीपि सरस्वती अनुकेदारं सर-  
स्वती ।

ये ये वडा ते ते मान लहइं यथावृद्धं  
मानं लभन्ते ।

ये ये लहुडा ते ते यमिवा बइसइं  
यथालघु भोक्तुमुपविशन्ति ।

एयु जेतला वांभण तेतला निर्वाप  
दिइ असौ यावद्विप्रं निर्वापान् ददाति ।

जेतलां खांडां तेतला राजपुत्र याव-  
त्खड्गं राजपुत्राः ।

जेतला छात्र तेतला पोथां यावच्छात्रं  
पुस्तकानि ।

ब्राह्मणसिउं जाइ सविप्रो याति ।

साकरसिउं दूध पीइं सशर्करं पयः पिवति ।

पुत्रसिउं यमइ सपुत्रो भुङ्के ।

अव्ययीभावे सहशब्दस्य सभावः ।

पारे मध्ये अन्ते योगे द्वितीया—

समुद्रमाहि रत्न नीपजइं मध्येसमुद्रं  
रत्नानि निष्पद्यन्ते ।

नइमाहि माछा हींडइं मध्येनदीं मत्स्या  
विचरन्ति ।

पाणीनइ पारि देवाल्यु पारेजलं देवा-  
लयानि ।

पाणीनइ छेहि वृक्षु अन्तेजलं वृक्षः ।

तलाव विचि देहरउं अन्तस्तडागं देव-  
गृहम् ।

गाम विचि वडु मध्येग्रामं वटः ।

परिशब्दो वर्जने—

पाटण टाली किहां वसीइ परिपत्तनं  
क्वापि नोष्यते ।

नास्तिक टाली कुण पापीउ परिनास्तिकं  
कोऽपि न पापी ।

आडू यावदर्थे मर्यादाभिविधौ—आ गृहं  
यावद्गृहम्, आ ग्रामं यावद्ग्रामम् ।

एवं अव्ययीभाव समास नपुंसक-  
लिंगीयु जाणिवउ ।

अथ तद्धितप्रत्यया लिख्यन्ते-

मजीठ राती साडी माञ्जीष्ठा साटिका ।

हलद्भूआं वडां हारिद्राणि वटकानि । इति  
रागयोगात् अण् ।

मघाभियुक्ता रात्रिः दिनं मासो वा-माघी  
रात्रिः, माघं दिनम्, माघो मासः ।

फागुण मासतणी पूनिम फाल्गुनी  
पूर्णिमा ।

एवं सर्वत्र नक्षत्रयोगे अण् ।

लाष रातउ कांबलउ लाक्षिकः कम्बलः ।

..... लाक्षिकी साडी ।

इति लाक्षारक्तार्थे इकण् ।

कागनउं टोलउं वायसं वृन्दम् ।

अंगनानउं वृन्दु आंगनं वृन्दम् ।

पुरुषतणुं समवायु पौरुषम् ।

इति समूहे अण् ।

पुरुषात् समूहे एयण्-

पुरुषतणउ समूहु पौरुषेयम् ।

स्त्रीतणउ समूहु स्त्रैणं वृन्दम् ।

स्त्रीनी सभा स्त्रैणी परिषत् ।

स्त्रीनुं धनु स्त्रैणं धनम् ।

पुरुषनउं वृन्दु पौंसं वृन्दम् ।

स्त्रीपुंसाभ्यां नण्-स्त्रणौ ।

उष्ट्रा उक्ष राजन्य राजन् वत्स मनुष्याणां

समूहेऽकण्-

ऊंटनउ समूहु औष्ट्रकम् ।

वृषभनउ समूहु औक्षकम् ।

रायतणउ समूहु राजन्यकं, राजकम् ।

वत्सनु समूहु वात्सकम् ।

मनुष्यनउ समूहु मानुष्यकम् ।

ग्रामजनबन्धुसहायानां समूहे तद्ध-

ग्रामतणु समूहु ग्रामता ।

जननउ समूहु जनता ।

बंधुनउ समूहु बन्धुता ।

सहायीयांनउ समूहु सहायता ।

गजात् समूहे घटा-

हाथीयांनउ समूहु गजघटा ।

धेनुहस्तिशब्दात् समूहे कण्-

धेनुनउ समूहु धेनुकम् ।

हाथीयांनउ समूहु हास्तिकम् ।

गुणतत्त्वभूतेन्द्रियविषयशब्दास्त्रकरणानां

समूहे ग्रामो वक्तव्यः-

गुणानु समूहु गुणग्रामः । एवं तत्त्वग्रामः,

भूतग्रामः, इंद्रियग्रामः, विषयग्रामः,

शब्दग्रामः, अस्त्रग्रामः, करणग्रामः,

केशशब्दात् समूहे हस्तपक्षपाशा

भवन्ति-

केशनउ समूहु केशहस्तः, केशपक्षः,

केशपाशः ।

तरुपद्मिनीकुमुदकमलादिभ्यः समूहे

खण्डो वक्तव्यः । समस्तवृक्षतृणगुल्म-

जातिभ्योऽपि-

तरूनउ समूहु तरुखण्डम् । [ एवं ]

पद्मिनीखण्डम्, कुमुदखण्डम्, कमल-

खण्डम् ।

कर्मदूर्वादितृणादिभ्यः काण्डो वक्तव्यः-

कर्मनउ समूहु कर्मकाण्डम् ।

दूर्वानउ समूहु दूर्वाकाण्डम् ।

तृणानु समूहु तृणकाण्डम् ।

आदिग्रहणात्-

अंधारानउ समूहु तमस्काण्डम् ।

गणिकानां समूहे यण्-

गणिकानु समूहु गाणिक्यम् ।

अश्वानां समूहे ईयः—

अश्वनउ समूहु अश्वीयः ।

प्रमाणे अर्थे द्वयसट् दघट् मात्रट् प्रत्यया  
भवन्ति—

कडि समा गहं कटिदघ्ना गोधूमाः ।

गूडां समी षाड् जानुद्वयसी परिखा ।

कांध समुं पाणी स्कन्धद्वयसं जलं  
स्कन्धमात्रं वा ।

पदन्त्यात् इति अदितिभ्यो यण् ।

दैत्यानां समूहो दैत्यम्, आदित्यानां  
समूह आदित्यम् ।

एयु व्याकरणु जाणइ इत्यर्थे वैयाकरणः ।

सूत्रपुराणन्यायमीमांसेतिहासवेदेभ्यो वेत्य-  
धीतेऽर्थे इकण्—

सूत्रु पढइ जाणइ असौ सूत्रिकः । एवं  
पौराणिकः, नैयायिकः, मैमांसिकः,  
ऐतिहासिकः, वैदिकः ।

सुवर्णानां आभरण सौवर्णान्याभरणानि ।

रूपानां पात्र राजतानि पात्राणि ।

कर्पासनां वस्त्र कार्पासानि वस्त्राणि ।

हरिणनउं चांवडउं हारिणं चर्म ।

मृगतणउं मांसु मार्गं मांसम् ।

वाघतणां पद वैयाघ्राणि पदानि ।

तस्येदमर्थेऽण् ।

विकृतिवाचिनः प्रकृतावभिधेयायां हितेऽर्थे  
ईयो यश्च—

अंगाररहिं हितूउं काष्ठ अंगारीयाणि  
काष्ठानि ।

पीला योग्य हितूउं लाकडउं शङ्खव्यं  
दारु ।

वाणरहिं हितूउ शरकड इषव्यः शरः—  
काण्डः ।

कूडीरहिं हितूउं चर्म कुतव्यं चर्म ।

प्रासाद योग्य हितूई ईट प्रासादीया  
इष्टिकाः ।

भाणा योग्य हितूउं कांसउं भाजनीयं  
कांस्यम् ।

गाडा योग्यु हितूउं लोहडउं शाकटीयं  
लोहम् ।

करवतरहिं हितूउं चर्मु ... .. ।

विसनररहिं हितूउं काष्ठ कृशानव्यं  
काष्ठम् ।

षांड योग्य हितूई सेलडी खण्डव्या इक्षुः ।

इति उवर्णान्तशब्दात् यः हितेऽर्थे ।

अन्यत्र ईयः—

वत्सरहिं हितूउ वत्सीयः ।

घोडारहिं हितूउ अश्वीयः ।

पुरुषु राजानीं परि दीसइ इत्यर्थे उप-  
माने वति, पुरुषो राजवत् दृश्यते ।

चपलपणउं इत्यर्थे तत्त्वौ भावे चपलता,  
चपलत्वं, चापल्यम् ।

अभिव्याप्तौ संपद्यतौ च सातिर्वा देये  
त्रा च—

राजा गामु वांभणायतुं करइ राजा  
ग्रामं श्रोत्रियसात्करोति ।

देव आयतुं करइ देवत्राकरोति ।

वरुआयती कन्या संपजइ वरत्रासंप-  
द्यते कन्या ।

क्षेत्रु विमणइ त्रिमणइ [करइ] द्विगुणा-  
करोति त्रिगुणाकरोति क्षेत्रं—इत्यर्थे डाच् ।

दाडिमु नींकोलइ निःकुला करोति दाडि-  
मम् ।

मृगु वींधइ सपत्राकरोति मृगम् ।

महिषु वाणि आहणइ निष्पत्राकरोति  
महिषम् ।

कणनउ संचकारु आपइ सत्याकरोति  
कणान् ।

आंषिं ग्रहियि रूपु चाक्षुषं रूपम् ।

कानि सांभलीयि शब्दु श्रावणः शब्दः ।

पाहणि पीस्या सातू दार्षदाः सक्तवः ।

ऊखलि षांङ्या मुग औदूखला मुद्राः ।

घोडे वहीयि रथु आश्रो रथः ।

च्युहु वहीयि गाडुं चातुरं शकटम् ।

चौदसिं दीसइ राक्षसु चातुर्दशं रक्षः ।

इत्यर्थेऽण् ।

गामेचउ ग्राम्यः, ग्रामेयः, ग्रामीणः ।

नदीनउं जलु नादेयं जलम् ।

दक्षिणदिशिउ दाक्षिणाल्यः ।

पश्चिमीउ पाश्चिमाल्यः ।

पूर्वीयु पौरस्यः ।

अहांनउ इहल्यः ।

तिहांनउ तत्रल्यः ।

किहांनउ कुत्रल्यः ।

यहांनउ यत्रल्यः ।

..... पार्वतीयानि जलानि

वर्षाकालनउ मेघु प्रावृषेण्यो मेघः ।

शरत्कालनउ तिडकउ शारदिक आतपः ।

हैमंतनु वायु हैमनः पवनः ।

सांझूणउं सायंतनम् ।

घणदीहुं चिरन्तनम् ।

घणे दिहाडे आव्यु चिरेणागतः ।

थोडे दिहाडे आविउ अचिरेणागतः ।

वडी वार लगाडइ विलम्बते ।

साहइ अवलम्बते ।

म दीधु, म लीधु, म कीधु आक्षेपना-  
योगे शतृडानशौ ।

मा योगेऽन्वाक्रोशे इति सूत्रम्, मा कुर्वन्

मा कुर्वाणः, मा ददत्, मा ददानः ।

जु करत, जु लेत, जु देत इत्यर्थे क्रिया-  
तिपत्तिः ।

यद्-यदि-चेद्योगे क्रियातिपत्तिः ।

पाते वा सप्तमी ।

जु किमइ हुं घरि जात, तु एयु मइं  
गामि न मोकलत यदि अहं गृहं  
यायां तदयं मां ग्रामं न प्रस्थापयेत् ।

जु किमइ एयु गामि न जात, [तु]  
चोरु बलद न लयेत यदि असौ ग्रामं  
न गच्छेत् ततश्चौरौ बलीवर्दान्न हरेत् ।

जे किमइ एयु [गृहं?] लेत, तु द्राम  
न पडत असौ गोधूमांश्चेद् गृहीयात्  
द्रम्मास्ततो न ।

अतीते स्मृत्युक्तौ अभिज्ञा भविष्यन्ती-

जाण अहो पुरुष आपणि लहुडा थ्या  
[.....] वस्त्र पहिरता स्मरसि  
पुरुष वयं लघुत्वे बहुमूल्यानि वासांसि  
परिधास्यामः ।

पुरअहे दीहाडे मिष्टान्न यमता

[....] मिष्टान्नं भोक्ष्यामः ।

ननु शब्दयोगे पृष्ठप्रतिवचनोत्तरे अद्यतनी  
पूर्वादेः उत्तरपदे वर्तमानाभावात् । हस्तलेख्यं  
अकार्षीत् । ननु करोमि भोः । कथं ब्राह्मणं  
शूद्रान्नं भोजयेत् । अन्यायमेव । क्रियासमभिहारे  
सर्वत्र हि-स्त्रौ भवतः ।

ब्राह्मण यमिसिं यमिसिं ब्राह्मणा भुंक्व भुंक्व ।  
तम्हि कहउ कहउ आपणी वात यूयं  
कथय कथय निजां वार्त्ताम् ।

अम्हि गामि जास्युं जास्युं वयं ग्रामं  
गच्छ गच्छ (?) ।

कालपुरुषत्रयेऽप्येवम् । क्रियासमुच्चयेऽ-  
प्येवम् । नाम्न आत्मेच्छायायां यन् काम्य च  
गृहीते-। गृहकाम्यति ।

दासी वहवत् मानइ वधूयति दासीं नरः ।  
 एयु लहुडउ लवीयान् लघिष्टः । इत्यर्थे  
 गुणादिष्टे गुण्यसौ वा पृथ्वादिभ्यो भावेऽर्थे  
 इमनु वा ।

एयु अति पुहुलउ असौ प्रथीयान्, प्रथिष्टः,  
 प्रथिमा ।

एयु अति कूंअलउ असौ मदीयान्, मदिष्टः,  
 मदिमा । एवं लघिमा अणिमा महिमा वरिमा  
 गरिमा द्रदिमा कालिमा मलिनिमा ।

ईष्ट ईयस् ईमनु वा प्रत्यये प्रशस्यस्य श्रो<sup>१</sup>  
 भवति । वृद्धस्य च उय<sup>२</sup> । अन्तिकवाढयोर्नेद-  
 साधो<sup>३</sup> । युवाल्पयोः कन्य[वौ]<sup>४</sup> । स्थूलदूरयुवक्षि-  
 प्रक्षुद्राणां अन्तस्थादेर्लोपो गुणश्च<sup>५</sup> । वहोर्लोपि भू  
 च<sup>६</sup> । प्रियस्थिरस्त्रिफोरुगुरुवहुलतृप्रदीर्घह्रस्ववृद्ध-  
 वृन्दारकाणां प्रस्थस्फवर्गवंहत्रपृद्वावह्रस्वर्पवृन्दाः ।

तद्वदिष्टेमेयस्य बहुलं प्रत्ययादिलोपश्च ।

एयु अति प्रशस्यु असौ श्रेयान्, श्रेष्टः,  
 श्रेमा ।

एयु अति वडउ असौ ज्यायान्, ज्येष्टः,  
 ज्यायिमा ।

एयु अति दूकडउ असौ नेदीयान्,  
 नेदिष्टः, नेदिमा ।

एउ अति गाडउ साधीयान्, साधिष्टः,  
 साधिमा ।

एउ अति लहुडउ अति थोडउ असौ  
 कनीयान्, कनिष्टः, कनिमा ।

एयु अति मोटउ असौ स्थवीयान्,  
 स्थविष्टः, स्थविमा ।

एयु अति वेगलउ असौ दवीयान्,  
 दविष्टः, दविमा ।

एयु अति लहुडउ असौ यवीयान्, यविष्टः,  
 यविमा ।

एयु अति वहिलउ असौ क्षेपीयान्, क्षेपिष्टः,  
 क्षेपिमा ।

एयु अति क्षुडु असौ क्षोदियान्, क्षोदिष्टः,  
 क्षोदिमा ।

एयु अति घणउ असौ भूयान्, भूयिष्टः,  
 भूयिमा ।

एयु अति प्रियु प्रेयनुं हुयिवुं असौ  
 प्रेयान्, [प्रेष्टः], प्रेमा ।

एयु अति स्थिरु असौ स्थेयान्, स्थेष्टः,  
 स्थेमा ।

एयु [अति] गरूउ वरीयान्, वरिष्टः, व  
 रिमा । गरीयान्, गरीष्टः, गरिमा ।

एयु अति बहुलु असौ वंहीयान्, वंहिष्टः,  
 [वंहिमा] ।

एयु अति लज्जालु असौ त्रपीयान्, त्रपिष्टः,  
 [त्रपिमा] ।

एयु अति दीर्घु दीर्घनउं हुयिवउं असौ  
 द्राधीयान्, द्राधिष्टः, द्राधिमा ।

एयु ह्रस्वु असौ हसीयान्, हसिष्टः, हसिमा ।  
 अति वृद्धु वर्षीयान्, वर्षिष्टः ।

एकस्वराणामदन्तानां च आपागमः ।

एयु प्रशस्यु कहइ..... ।

.....

असौ श्रापयति ।

१ एतद्वाक्यसंवादकानि पाणिनिव्याकरण-  
 गतान्यमूनि सूत्राणि—

१ प्रशस्यस्य श्रः । ५-३-६०.

२ वृद्धस्य च । ५-३-६२.

३ ५-३-६३.

४ युवाल्पयोः कन्यतरस्यां ५-३-६४.

५ स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणां यणादिपरं  
 पूर्वस्य च गुणः । ६-४-१५६.

६ वहोर्लोपो भू च वहोः । ६-४-१५८.

७ प्रियस्थिरस्त्रिफोरुगुरुवहुलतृप्रदीर्घवृन्दा-  
 रकाणां प्रस्थस्फवर्गवंहिगर्विर्त्रपृद्वाधिवृन्दाः,

६-४-१५७.

एयु वडु कहइ असौ स्थापयति ।  
 एयु हूकडड कहइ असौ नेदयति ।  
 एयु गाढड कहइ असौ साधयति ।  
 एयु तरुणड कहइ असौ यवयति  
 कनयति ।  
 अतिहिं हुइ बोभूयते, बोभूवीति, बोभोति ।  
 अतिहिं जाइ, वली वली जाइ जङ्ग-  
 म्यते, जङ्गमीति, जङ्गन्ति ।  
 अतिहिं ज्वलइ जाज्वल्यते, जाज्वलीति,  
 जाज्वलित ।  
 अतिहिं हसइ जाहस्यते, जाहसीति,  
 जाहस्ति ।  
 अतिहिं रहइ तेष्ठीयते, तास्थायते ।  
 अतिहिं देषइ दरीदृश्यते, दरीदृशीति,  
 दरीदृष्टि ।  
 रीस्थाने लुकि रिरौ वा दरिदृष्टि, दर्दृष्टि ।  
 अतिहिं नाचइ नरीनृत्यते, नरीनृतीति,  
 नरीनर्त्ति, नर्नर्त्ति ।  
 अतिहिं वरसइ वरीवृषीति, वरीवृष्टि,  
 वरिवृष्टि, वर्वृष्टि ।  
 अतिहिं पूछइ परीपृच्छयते, परीपृच्छीति  
 परिपृष्टि, पर्पृष्टि ।  
 अतिहिं जाइ सरीस्त्रियते, सरीसरीति,  
 सरीसर्त्ति, सर्सर्त्ति ।  
 अतिहिं मरइ मरीम्रियते, मरीमरीति,  
 मरीमर्त्ति, मर्मर्त्ति ।  
 अतिहिं लिइ नेनीयते, नेनेति ।  
 अतिहिं पचइ पापच्यते, पापचीति,  
 पापक्ति ।  
 अतिहिं पढइ पापठ्यते, पापठीति, पापठ्ठि ।  
 अतिहिं भणइ वंभण्यते, वंभणीति,  
 वंभण्ठि ।

अतिहिं प्रेरइ चेक्षिप्यते, चेक्षिपीति,  
 चेक्षिति ।  
 अतिहिं लिखइ वावश्यते, वावशीति,  
 वावष्टि ।  
 अतिहिं मूकइ मोमुच्यते, मोमुचीति,  
 मोमोक्ति ।  
 अतिहिं सींचइ सेसिच्यते, सेसिचीति,  
 सेसेक्ति ।  
 अतिहिं छांडइ ताल्यज्यते, ताल्यजीति,  
 ताल्यक्ति ।  
 अतिहिं दहइ दन्दह्यते, दन्दहीति,  
 दन्दग्धि ।  
 अतिहिं जपइ जञ्जप्यते, जञ्जपीति,  
 जञ्जति ।  
 अतिहिं दोहइ दोदुह्यते, दोदुहीति,  
 दोदोग्धि ।  
 अतिहिं गात्रु नामइ जञ्जभ्यते, जञ्जभीति,  
 जञ्जब्धि ।  
 अतिहिं रमइ रंरम्यते, रंरमीति, रंरन्ति ।  
 अतिहिं नमइ नंनम्यते, नंनमीति, नंनन्ति ।  
 अतिहिं तरइ तेतीर्यते, तेतरीति, तेतर्त्ति ।  
 अतिहिं पिसइ शनीश्रस्यते, शनीश्रसीति,  
 शनीश्रस्ति ।  
 अतिहिं पडइ पनीपत्यते, पनीपतीति,  
 पनीपत्ति ।  
 अतिहिं लाइ पनीपद्यते, पनीपदीति,  
 पनीपत्ति ।  
 अतिहिं सूकइ चनीस्कद्यते, चनीस्कन्दीति,  
 चनीस्कन्ति ।  
 अतिहिं चूटइ, विणइ, चिणइ चेकीयते,  
 चेकीयति, चेकेति ।

हुइवा वांछइ बुभूषति ।  
रहिवा थाकिवा थाइवा [ वांछइ ]

तिष्ठासति ।

जाइवा वांछइ जिगमिषति ।

देषिवा ,, दिदृक्षति ।

बलिवा ,, जिज्वलिषति ।

हसिवा ,, जिहसिषति ।

लेवा ,, निनीषति ।

पचिवा ,, पिपक्षति ।

पठिवा ,, पिपठिषति ।

लाषिवा ,, चिक्षिप्सति ।

भणिवा ,, विभणिषति ।

पइसिवा ,, प्रविविक्षति ।

मेलिहवा ,, मुमुक्षति ।

सीचिवा ,, सिसिक्षति ।

छांडिवा ,, तिल्यक्षति ।

दहिवा ,, दिधक्षति ।

तरिवा ,, तितीर्षति ।

सांभलिवा ,, शुश्रूषति ।

चालिवा ,, चिचलिषति ।

फिरिवा ,, विभ्रमिषति ।

लिखिवा ,, लिलिखिषति ।

चरिवा ,, चुचूर्पति ।

पूछिवा ,, पिप्रच्छिषति ।

धरिवा ,, दिधरिषति ।

रमिवा ,, रिरंसति ।

मारिवा ,, जिघांसति ।

नाहिवा ,, सिष्णासति ।

कहिवा ,, चित्यासति ।

बोलिवा ,, विवक्षति ।

वायिवा वांछइ विवासति ।

आश्रयिवा ,, आशिशीषति ।

सूयिवा ,, शिशयिषति ।

दोहिवा ,, दुधुक्षति ।

चाटिवा ,, लिलिक्षति ।

बीहिवा ,, विभीषति ।

लाजिवा ,, जिहीषति ।

जूझिवा ,, युयुत्सति ।

सुकिवा ,, शुशुक्षति ।

नमिवा ,, निनंसति ।

खणिवा ,, चिखास(चिखनिष)ति ? ।

सूंघिवा ,, जिघ्रासति ।

पीवा ,, पिपासति ।

जीपिवा ,, जिगीषति ।

जीविवा ,, जिजीविषति ।

मरिवा ,, मुमूर्षति ।

देवा ,, दित्सति ।

धरिवा ,, धित्सति ।

आरंभिवा ,, आरिप्सति ।

लहिवा ,, लिप्सति ।

सेकिवा ,, सिसिक्षति ।

पडिवा ,, पिपतिषति ।

पामिवा ,, ईप्सति ।

फाडिवा ,, विभित्सति ।

जमिवा ,, बुभुक्षति ।

लेवा ,, जिघृक्षति ।

पूजिवा ,, अर्चिचिपति ।

निकोलिवा वांछइ निश्रुकोषिषति ।



रोयिवा वांछइ रुरुदिषति ।  
 जाणिवा ,, विविदिषति ।  
 चोरिवा ,, मुमुषिषति ।  
 चिणिक्क ,, चिचीषति ।  
 चूटिवा ,, ,, ।  
 बीणिवा ,, ,, ।  
 तुणिवा वांछइ लुल्लषति ।  
 पवित्रु करवा वांछइ पुपूषति ।  
 स्तविवा वांछइ तुष्टूषति ।  
 स्मारिवा वांछइ सुस्मूर्षति ।

करिवा वांछइ चिकीर्षति, चिकीर्षितवान्,  
 चिकीर्षन्, चिकीर्षमाणः, चिकीर्षिता,  
 चिकीर्षितुम्, चिकीर्षणाय, चिकीर्षितु-  
 कामः, चिकीर्षितुमनाः, चिकीर्षिता,  
 चिकीर्षकः, चिकीर्षितव्यम्, चिकीर्ष-  
 णीयम्, चिकीर्ष्यम् ।

अतिहि होउ बोभूयितः, बोभूयितवान्,  
 बोभूयमानम्, बोभूयते, बोभूयमानः,  
 बोभूयिता, बोभूयितुम्, बोभूयितुकामः,  
 बोभूयितुमनाः, बोभूयिषति, बोभूयित-  
 व्यम् । एवं सर्वत्र ।

॥ अविज्ञातविद्वत्संगृहीतानि औक्तिकपदानि समाप्तानि ॥

॥ शुभं भवतु ॥

## उक्तिरत्नाकरादि अन्तर्गत शब्दानुक्रम ।



अ	अडसठि २९, २	अतिहिं लिइ ८०, १
अउ ३५, २. ५५, २	अढार २८, १	अतिहिं लिखइ ८०, २
अउगनाइ ४२, १	अढारइ १८, १	अतिहिं वरसइ ८०, १
अउज १०, २	अढी २७, २	अतिहिं षिसइ ८०, २
अउधारिबुं ५३, २	अणगुक ६७, २	अतिहिं सिंचइ ८०, २
अउलवइ ४३, १	अणहारउ २४, १	अतिहिं सूकइ ८०, २
अउंगउ मुगउ ५६, २	अणावइ ४८, २	अतिहिं हसइ ८०, १
अऊठ ३२, १	अणाव्यउ ५०, २	अतिहिं हुइ ८०, १
अखत्र १६, १	अति ७९, १. ७९, २	अथाह ११, २
अखाडउ १६, २	अतिविस १९, २	अद्देसउ १७, २
अखोड २२, १	अति वृद्ध ७९, २	अधिकरी ७५, १
अगर ९, १	अतिहि होउ ८२, २	अधूरउ २१, २
अगेवाण ३२, १	अतिहिं गात्रु नामइ ८०, २	अनाड २२, १
अगेवाणू (प्र०) ६६, २	अतिहिं चूंटइ, } ८०, २	अनुमोदिबुं ५४, २
अग्गिम की ३१, १	विणइ, चिणइ } ८०, २	अनेकवार ६३, १
अग्गेवाणु ६६, २	अतिहिं छांडइ ८०, २	अनेतइ २७, १
अग्यारसि ३१, २	अतिहिं जपइ ८०, २	अनेति ६३, १
अग्नेतनु ५६, १	अतिहिं जाइ, वली } ८०, १	अनेथि ५७, १. ६३, २
अचरिज ६, २	वली जाइ }	अनेरिसिउ ५५, २
अछइ ७४, २	अतिहिं ज्वलइ ८०, १	अनेरि परि ५६, २
अछतउ ६०, २	अतिहिं तरइ ८०, २	अनेरीवार २७, १
अछिवउं ६२, १	अतिहिं दहइ ८०, २	अनेहं ५६, १
अछिवा ६१, २	अतिहिं देषइ ८०, १	अनेसउ २७, २. ६४, १
अछीउं ६०, २	अतिहिं दोहइ ८०, २	अन्नि ७२, १
अछूतउ १५, २	अतिहिं नमइ ८०, २	अन्यसरीषउ (प्र०) ६४, २
अजी ३१, २. ५६, १	अतिहिं नाचइ ८०, १	अन्येरीवार ५५, २
अट्टावीस २८, २	अतिहिं पचइ ८०, १	अपछर ६, १
अठतालीस २९, १	अतिहिं पडइ ८०, २	अपराधइ ४८, २
अठत्रीस २८, २	अतिहिं पढइ ८०, १	अपराधिबुं ५४, १
अठहत्तरि २९, २	अतिहिं पूछइ ८०, १	अपराध्यउ ५०, १
अठाणू ३०, १	अतिहिं प्रेरइ ८०, २	अभावु ७५, १
अठार ५७, २	अतिहिं भणइ ८०, १	अभोखउ २६, १
अठारमउ ३०, २	अतिहिं मरइ ८०, १	अभोखणुं ६९, १
अठावन २९, १	अतिहिं मूकइ ८०, २	अभ्यसइ ४१, २
अठाही ३३, २	अतिहिं रमइ ८०, २	अमावस ६, १
अठ्यासी २९, २	अतिहिं रहइ ८०, १	अमावसि ३१, २
अडइ ४३, २. ७०, १	अतिहिं लाइ ८०, २	अम्ह केरउ १५, २
अडवडइ ४२, २		अम्हनइ ५५, १

अम्हसरीषड २७, २. ६४, ३	असवार ९, २	आखंडली ६९, १
अम्हंसरीषड ६४, १	असी २९, २	आखलड १७, १
अम्हारडं ६३, २	असुण्ड ६८, १	आखा २३, २
अम्हारं २७, २. ५५, १	असुद्ध २४, १	आखात्रीज १८, २
अम्हारुं (प्र०) ६३, ३	असोई ६, २	आखुडइ ४३, २
अम्हासित ५५, २	अहांनड ७८, १	आखुडिड ६८, २
अम्हि ५५, १ ७८, २	अहिनाणि ७३, २	आगइ १५, १. १५, २. ५६, १
अम्हे ३५, २. ५५, १	अहिनाणु ६९, २	आगर ११, २
अरचइ ३७, २	अहिवा ६४, २	आगरड ११, १
अरडकमल्लु ६९, २	अहीणुं २६, ३	आगल ११, १. ३१, २
अरडूसड १९, २	अहुण २७, १. २७, २	आगलि (प्र०) ६४, १
अरणइ ५७, १. ६७, २	अहूण ५५, २	आगास ६, १
अरत ६६, २	अहो ७८, २	आगिलड (प्र०) ६४, १
अरतपरत ६६, २	अहोरात ६, १	आगिलुं ५५, १. ६४, १
अरतपरत २६, २. ६६, २	अंकोडड १७, १	आगी १८, २
अरथइ ३७, २	अंकोल २३, २	आघड ५६, १
अरहट २०, १	अंग ३५, १	आचमइ ४३, १
अरहट्टु ६८, २	अंगन ७६, १	आचरइ ७०, १
अरहु ६४, १	अंगरखी ९, २	आचारिज ५, १
अरिस ६२, २	अंगार ७७, १	आचार्यास ३४, १
अरिहंत ५, १. १५, १	अंगारसगडी ११, १	आच्छिदइ ४०, २
अरीठड १९, २	अंगीठड २६, २	आछड ११, २
अरीम २७, १	अंगूठड ८, २	आछोटइ ४०, १
अरीरम (प्र०) ६२, २	अंतेडर ९, २	आज २७, १. ५५, २. ६२, २
अर्थ ७२, २	अंतेडरी १९, १	आजिकाहि २०, २
अलजु ५६, १	अंधमूंघपणइ २६, १	आजु ६२, २
अलतड ९, २	अंधारड ६, १	आजु लगइ ५६, १
अलसिवेल २१, १	अंधारानड ७६, २	आजूणड २७, १
अलसी ३४, १	अंबोडड ६६, १	आजूणडं ६२, २
अलंकरइ ४८, २	आ	आजूनुं ५६, १
अलंकरिड ५१, १	आडवड १४, २	आजूनुं (प्र०) ६२, २
अलंकरिवुं ५४, २	आक १९, १	आटड २४, १
अवतरइ ४८, २	आकर्षइ ४७, २	आठ २८, १. ५७, २
अवतरिवुं ५४, १	आकलइ ४९, १	आठड २७, २
अवधारिड ५०, १	आकलिड ५१, २	आठमड ३०, २. ५७, १
अवहथइ ४२, २	आक्रमइ ३९, १. ४६, १	आठमि ३१, २
अवाज ६, २	आक्रमिड ५, २	आडड ५६, १. ६४, १
अवाडड ६८, २	आक्रंदइ ३८, १	आडण ३२, १
अश्व ७७, १	आक्रुसिड ५१, १	आडावंग ६९, २
असलेस ५, २	आखइ ४१, २	आडि १४, १
	आखड २३, २	आडु (प्र०) ६४, १

- आढउ ३४, २  
 आढवइ ४०, २  
 आण ६, २  
 आणइ ४८, २  
 आणतउ ६०, १  
 आणतु (प्र०) ६०, २  
 आणनहार (प्र०) ६१, ३  
 आणनहारु ६१, २  
 आणंद ३५, २  
 आणिवउं ६२, १  
 आणिवा ६१, १  
 आणिवुं ५४, १  
 आणिवूं (प्र०) ६२, १  
 आणी ६१, १. ७३, १  
 आणीतउं ६०, २  
 आणीतूं (प्र०) ६०, ४  
 आण्यउ ५०, २  
 आण्यउं ६०, १  
 आण्युं (प्र०) ६०, १  
 आथमइ ४१, २. ४६, १  
 आथम्यउ ५०, २  
 आथर ९, २  
 आदउ ३३, २  
 आदरइ ३७, १  
 आदरा ५, २  
 आदिशवुं ५३, २  
 आदिस्यउ ५०, २  
 आद्रहणु ६९, २  
 आधरण ३३, १  
 आधासीसी २६, १  
 आधु ३१, २  
 आपइ १८, २. ३८, २. ४७, २  
 आपइणी ५६, १  
 आपडइ ३८, १. ४८, १  
 आपडिउ ५२, १  
 आपणउ ८, १  
 आपणी ७८, २  
 आपणी घायउ ७, २  
 आपणुं ५५, १  
 आपिउ ५२, १  
 आपिवुं ५४, १  
 आफलइ ३९, १  
 आवू २३, २  
 आभउं ७३, २  
 आभरण ७७, १  
 आभिडइ ४०, २. ४४, १  
 आभूयानुं ६७, १  
 आमलवेतस ७, १  
 आमलसारउ २२, १  
 आयउ १८, २  
 आयती ७७, २  
 आयतुं ७७, २  
 आयसइ ४३, २  
 आयसिइ ७०, २  
 आर १०, २  
 आरति २३, १  
 आरती १६, १. ३३, १. ६८, २  
 आरतीयासरु ६८, १  
 आरंभइ ४१, १  
 आरंभिवा वांछइ ८१, २  
 आराधइ ३८, २  
 [आराध्यउ] ५१, २  
 आरीसउ ९, २  
 आरुह्यउ ४९, २  
 आरोपइ ४६, १  
 आरोपिवउं ५२, २  
 आरोप्यउ ४९, २  
 आरोहइ ४६, १  
 आरोहिवउं ५२, २  
 आलउ १५, १  
 आलजाल १९, १  
 आलस ६, २  
 आलाणथंभ ३४, २  
 आलावउ १७, २  
 आलिंगइ ४२, २  
 आलीगारउ २६, २  
 आलूजइ ४२, २  
 आलोचइ ४६, २  
 आलोच्यउ ५०, १  
 आवइ ४१, २. ४६, २  
 आवणहार (प्र०) ६१, ३  
 आवणहारु ६१, २  
 आवतउ ६०, १  
 आवतु (प्र०) ६०, २  
 आविउ ७८, १  
 आविवा ६१, १  
 आविवुं ६२, १  
 आविवूं (प्र०) ६२, १  
 आवी ६१, १  
 आवीतउं ६०, २  
 आवीतूं (प्र०) ६०, ४  
 आव्यउ ४९, २  
 आव्यउं ६०, १  
 आव्यु ७८, १  
 आव्युं (प्र०) ६०, १  
 आपुडइ ७०, २  
 आशंक ६, २  
 आश्रइ ४६, १  
 आश्रयिवा ८१, २  
 आश्लेषिउ ५२, १  
 आसाढ ६, १  
 आसू ६, १  
 आस्वादिवूं ५२, २  
 आस्वासइ ४७, १  
 आहणइ ७७, २  
 आहर जाहर २६, १. ६९, १  
 आहार १८, २  
 आहीर १०, १  
 आहेडउ १०, २  
 आहेडी १०, २  
 आंक २४, १  
 आंकुस १३, १  
 आंखि ८, १  
 आंगडणु ६७, १  
 आंगणउ ३२, १  
 आंगुली ८, २  
 आंजइ ३७, २  
 आंड ८, २  
 आंत्र ८, २  
 आंवइरा १८, २  
 आंवउ १२, १  
 आंवा १९, १  
 आंवाफाड २१, २

आंबामाहि ७३, २  
 आंबिल ३१, १  
 आंबिली १९, २ ६९, १  
 आंषिं ग्रहियि रूपु ७८, १  
 आंसू ६, २

इ

इ ५५, १. ५६, १  
 इकवीस २८, २  
 इकाणू ३०, १  
 इकावन २९, १  
 इक्यासी २९, २  
 इगतालीस २९, १  
 इगसठि २९, १  
 इगहत्तरि २९, २

इगु

इगुणचालीस २८, २  
 इगुणत्रीस २८, २  
 इगुणपचास २९, १  
 इगुणवीस २८, १  
 इगुणसठि २९, १  
 इगुणहत्तरि २९, २  
 इगुणीसमउ ३०, १  
 इगुण्यासी २९, २  
 इग्यार ५७, २  
 इग्यारइ २८, १  
 इग्यारमउ ३०, २  
 इग्यारमी ३१, १  
 इणि परि ५५, २. ६२, ४  
 इम ५५, २  
 इमै ६३, २  
 इसउ २७ २. ६४, १  
 इसुं ६३, २  
 इस्यउं (प्र०) ६३, ४  
 इहां २७, १  
 इहांतणू ५५, १

ई

ईट ७७, २  
 ईणपरि ६२, २  
 ईणं लाजीइ ७१, १  
 ईणं हु व्यारीउ ७३, १

ईधण १०, १  
 ईमहइ (प्र०) ६३, ४  
 ईस २३, १  
 ईसउ (प्र०) ६४, २  
 ईहां ६३, १. ६३, २  
 ईडउ ३१, १

उ

उइलउ ३२, १  
 उइसइ ४४, १  
 उकरडी (प्र०) ६४, ४  
 उखुडइ ४०, २  
 उखेलइ ४३, २  
 उगउमुगउ ६४, २  
 उगणीस ५७, २  
 उगमुगउ ३१, १  
 उग्रहणी २१, २  
 उघड दूघडउ २६, २  
 उच्छव १४, २  
 उच्छाहिवउं ५४, २  
 उच्छुकपणउ ६, २  
 उच्छंग ८, २  
 उछाह ३४, १  
 उजालइ ४२, १  
 उठिउ ४९, २  
 उतावलउ १८, २  
 उत्तर ६, १  
 उत्तराणउं (प्र०) ६४, ४  
 उदेगइ ४३, २  
 उदेगामणउ ३२, १  
 उदेगामणुं ५७, १  
 उदेही १३, १  
 उद्यमइ ४९, १  
 उधार १०, १  
 उध्रकइ ४१, २  
 उन्मूलइ ४६, १  
 उन्मूल्यउ ४९, २  
 उन्हालउ २०, १  
 उपकरइ ४७, २  
 उपगरइ ४४, १  
 उपचईइ ४९, २

उपराठउ ५६, १  
 उपरि २१, १. २४, २  
 उपरि ठाई २६, २  
 उपरियामणु ६४, २  
 उपवासी ६९, १  
 उपवासीउ २६, १  
 उपाध्यायांस ३४, १  
 उपारजइ ३७, २  
 उमाड १२, १  
 उरलिउं (प्र०) ६४, ४  
 उरहु (प्र०) ६४, ३  
 उलषि(खि)वुं ५३, १  
 उलूरइ ४०, २  
 उल्लावइ ४१, २  
 उल्लीचइ ४१, २  
 उवाणउ २१, १  
 उवेखइ ४१, २  
 उसीयालु २६, १  
 उसीसउ ९, २  
 उसूर ३१, २  
 उहरउं ५६, १  
 उंघइ ४०, १  
 उंचउं ५६, १  
 उंचानीचुं ५६, २  
 उंजइ ४३, १  
 उंबर १२, १  
 ऊकइ (प्र०) २०, २  
 ऊकदइ ४३, २  
 ऊकरडउ २२, १  
 ऊकरडी २०, १. ६४, २  
 ऊकुडउ २०, २  
 ऊखलउ ११, १  
 ऊखलि षांड्या ७८, १  
 ऊखेडइ ७०, १  
 ऊगइ ४१, २  
 ऊगटइ ४३, १  
 ऊगिउ, ५०, २  
 ऊगिउ वृक्षु ७४, २  
 ऊघडइ ४३, १  
 ऊघडदूघडउ ६७, २

ऊघाडइ ४३, १	ऊपरि १५, १. ५६, १, ६४, १	एकवार २७, १. ६३, १
ऊघाडिवउ २१, २	ऊपरि ऊपरि ७३, २	एकवीसमउ ३०, १
ऊचाटइ ४८, २	ऊपरिलुं ५६, १	एकासणउ ३१, १
ऊचाटिउ ५१, १	ऊपरुं ५६, १	एकु ७३, २
ऊच्छालियउ १९, २	उपार्जइ ७३, १	एकोत्तर सउ ३०, १
ऊछलइ ४१, १	ऊफिरीयामणू (प्र०) ६४, ४	एतलउं ६३, २
ऊछालइ ४१, १. ४६, १	ऊमउ १९, १	एतला ऊपरुं ५६, १
ऊछीनउ २१, १	ऊमटइ ४२, १	एतलुं २७, २. ५५, २
ऊजयणी १०, २	ऊलडइ ४१, १	एतलूं (प्र०) ६३, ३
ऊजलउ १४, २	ऊललइ ४६, १	एमात्र के ३१, १
ऊजाइ ४२, २	ऊललियइ ४१, १	एयु ७८, २
ऊजाणी २६, २	ऊलसइ ४९, १	एयु अति कूंअलउ ७९, २
ऊटंइ ७०, २	ऊलालइ ४६, १	एयु अति क्षुद्रु ७९, २
ऊटाटीयुं ६९, २	ऊलिषउ ६९, १	एयु [अति] गरूउ ७९, २
ऊठइ ४३, १. ४६, १. ७०, १.	ऊवट ३३, १	एयु अति घणउ ७९, २
ऊठाडइ ४६, १	ऊवटइ ४७, २	एयु अति दूकडउ ७९, १
ऊठिवउ ३४, २	ऊवटणउ ३४, २	एयु अति दीर्घु ७९, २
ऊड २१, २	ऊवलतउ २५, २	एयु अति पुहुलउ ७९, १
ऊडइ ३७, १. ४६, १. ७०, १	ऊवेढइ ४३, १	एयु अति प्रशस्यु ७९, १
ऊडिउ ५१, २	ऊवेषि(खि)उ ५२, २	एयु अति प्रियु ७९, २
ऊतर ६, २	ऊसलसीधुं (प्र०) ६६, ३	एयु अति बहुलु ७९, २
ऊतरिण्यु ६४, २	ऊससइ ३९, २	एयु अति मोटउ ७९, १
ऊतन्यउ ४९, २	ऊसीसउं ६७, १	एयु अति लज्जालु ७९, २
ऊतारणउ १९, १	ऊहाडउ १३, २	एयु अति लहुडउ ७९, २
उत्तर ७४, १	ऊंचउ १९, २	एयु अति वडउ ७९, १
ऊदलइ ४०, २	ऊंट १३, २	एयु अति वहिलउं ७९, २
ऊदेगामणउं ६८, १	ऊंटनउ ७६, १	एयु अति वेगलउ ७९, २
ऊदेही ६९, २	ऊंडहणुं ६९, २	एयु अति स्थिरु ७९, २
ऊधंधलु २६, १	ऊंदिरउ १३, २	एयु अग्नि ध्रायु ७२, १
ऊधारइ १६, १	ए	एयु एकलउ ७३, १
ऊधांधलुं ६४, २	ए ५६, १. ७१, २	एयु गाढउ कहइ ८०, १
ऊधांधलुं (प्र०) ६४, ३	एउ अति गाढउ ७९, १	एयु जीवइ ७१, १
ऊन २३, १	एउ अति लहुडउ } ७९, १	एयु जेतला ७५, २
ऊपजइ ३८, २. ४९, १	अति थोडउ }	एयु दूकडउ ८०, १
ऊपजावइ ४९, १	एक २७, २. ५७, १	एयु तरुणउ ८०, १
ऊपजाविउ ५१, २	एकउडउ ६८, २	एयु तेलु ७३, १
ऊपडइ ३८, १	एकत्रीस २८, २	एयु दुःखि द्रव्यु ७३, १
[ऊपडिउं] ५२, २	एकपरि २७, २. ५६, २.	एयु देव तणइ ७२, २
ऊपणइ ४३, १. ७०, १	६३, १	एयु देवदत्तु ७१, २
[ऊपनउ] ५२, १	एकलउ १५, २. ७३, १	एयु दोरी सापु ७३, १

एयु पोष्यवर्गरहि ७२, १  
 एयु प्रधानरहि ७२, १  
 एयु प्रशस्यु कहइ ७९, २  
 एयु बोल्या प्रयोग ७२, २  
 एयु ब्राह्मणप्रति ७३, २  
 एयु भुंडउ ७४, १  
 एयु लहुडउ ७९, १  
 एयु वडु कहइ ८०, १  
 एयु वाधइ ७१, १  
 एयु वेद पढणहार ७२, १  
 एयु व्याकरणु जाणइ ७७, १  
 एयु शास्त्र वाचणहार ७२, १  
 एयु श्राद्धतणउ ७२, २  
 एयु सुखिहिं ७३, १  
 एयु हस्वु ७९, २  
 एलियउ १७, २  
 एव ५७, १  
 एवडुं ६३, २  
 एवाल ३४, २  
 एह ३५, २  
 एह ठाम हुंतउ ५६, २  
 ओघउ २१, १  
 ओझउ ५, १  
 ओटइ ४८, १  
 ओठी १६, २  
 ओढणउं ६७, २  
 ओरस (प्र०) ६६, १  
 ओरसु ६६, २  
 ओलंडइ ३८, १  
 ओल्यउ ६४, २  
 ओवउ १९, १  
 ओस ११, २  
 ओसड २५, १  
 ओही २०, २  
 ओंगालइ ४०, १  
 ओठंभइ ४४, १  
 ओंड २१, २  
 ओंडक ६७, २  
 ओढइ ४२, २  
 ओघाइली ३५, २

औरहुं २७, २  
 ओरीसउ ३२, १  
 ओलउ २६, २  
 ओलखइ ४४, १. ४८, १  
 ओलखउ २६, १  
 ओलखाणउ ३१, १  
 ओलखिउ ५०, २  
 ओलग १६, १  
 ओलगइ ४८, २  
 ओलगिवुं ५४, २  
 ओलग्यउ ५०, २  
 ओलवइ ४८, २  
 ओलविउ ५१, २  
 ओलंभइ ७०, २  
 ओलंभउ ६, २  
 ओली ३४, १  
 ओसरइ ४०, १

क

क ३१, १  
 कउछ १२, २  
 कउठ १२, २  
 कउडी १३, १  
 कउसीसउ २६, २  
 कचोलउ १८, १  
 कचोलउ १६, १  
 कच्छोटउ ९, १  
 कडउ ९, १  
 कडकडइ ४३, २  
 कडणि २२, २  
 कडव ३२, २. ६८, २  
 कडहटउ ३४, १  
 कडाहउ ११, १  
 कडि ८, २  
 कडिदोरउ ३२, २  
 कडि समा ७७, १  
 कडुछउ २१, १  
 कडुछी २१, १  
 कडू २१, १  
 कणउज ३५, १  
 कणनउ ७८, १

कणयर ३३, १  
 कणहतउ १६, १  
 कणि ७२, १  
 कणियार ३४, १  
 कणी २३, १  
 कशीर ११, २  
 कन्या ७७, २  
 कन्हइ ५६, २  
 कन्हलि ७३, २. ७४, १. ७५, १  
 कपास १२, १  
 कपीलउ २४, २  
 कपूर ९, १  
 कमलउ २३, १  
 कम(व)ली ३४, १  
 कयर १२, २  
 करइ १८, १. १८, २. ३७, १  
 करडइ ४२, १  
 करणहार ३६, पं० २२. ६१, ३  
 करणहार ६१, २. ६२, २  
 करणाहर ३६, पं० ३३  
 करत ७८, २  
 करतउ २६, १. ७०, १  
 करतु (प्र०) ६०, २  
 करतुं ६२, १  
 करमदउ २५, १  
 करवत १०, २  
 करवतरहिं हितूउं ७७, २  
 करवती ३५, १  
 करवा ८२, १  
 करसउ १०, १  
 करसणु ७३, १  
 करहउ १३, २  
 करंवउ २२, २  
 करा ६, १  
 करालियउ २०, १  
 कराथइ ४४, २  
 कराचइ ४७, १. ७३, १  
 करि ३५  
 करिजे ३५  
 करिवई ३६, पं० ३१. ५२, २

करिवा ३६, ६१, १. ६२, १	कंकोडउ १२, २	कापडइ १८, १
करिवा वांछइ ८२, १. ८२, २	कंपावइ ४०, १	कापडी १६, २
करिवा होउ ८२, २	कंसाल १७, २	कावरउ १४, २
करिवुं ६१, २. ६२, २	का ३१, १	काम १८, २
करिवुं (प्र०) ६१, ४	काउसग ३३, २	कामइ ३९, १
करिसिइ ३६	काकडासींगी २६, १	कामण १४, २
करी ६१, १. ६२, १	काकडी २३, १. २५, २	कामरू ३४, २
करीउ ३६	काकडीरउ १८, १	कायर ७, १
करी जाणउं ६२, २	काकरउ १८, २	कारटउ २२, २
करी जाणुं ३६, पं० २९	काकींडउ २५, १	कारटियउ २२, २
करीस १५, १	काख ८, २	कारू १०, १
कर्पासनां वस्त्र ७७, १	कागनउं टोलउं ७६, १	कारेलउ १२, २
कर्मनउ समूहु ७६, २	कागु ६७, १	कालाखरिउ ६७, १
कलइ ३७, १	काछउ ३४, २	कालि ६२, २
कलकलइ ४३, २	काछडी ९, १	कालिजउ ८, २
कलपइ ३८, २	काछवउ १४, १	कालियु ६७, १
कलाई ८, २	काज १५, १. २१, १	काली ७२, २
कलाल १०, १	काजल ९, २	कालूनुं (प्र०) ६२, ३
कली १२, १	काट ११, २	कालहनउं ५६, १
कलेवउ ७, २	काटइ ४२, १	काल्हि २७, १. ५५, २
कल्पइ ४९, १	काटी ११, २	कालहूणउ २७, १
कलहोडउ २६, २	काठ १२, २	कालहूणउं ६२, २
कचउउ १३, १	काठउ १५, २	कावजि (प्र०) ६६, २
कचाड ११, १	काठिया २०, १	कावडि १६, १. ३२, २
काविलउ १४, २	काठीहारउ २३, २	काष्टि ७२, १
कसइ ४२, २	काढइ ३९, २. ४७, २	काष्ठ ७७, १. ७७, २
कसमीर ३५, १	काढउ ३३, १	काष्ठा २४, १
कसी २५, २	काणि २३, २	कासुंदउ १७, २
कहइ ३७, १. ४७, १. ७९, २.	कातती २०, २	कांड ३२, १
कहउ ७८, २	कातरणी १०, २	कांडई ५५, १
कहाणी १७, १	कातरि १०, २	कांकसी ९, २. २६, २
कहिउ ५१, २	कातली १९, १	कांग १२, २
कहियउ २१, १. २७, १. ५५, २	काती ६, १	कांगउ १८, १
कहिवा वांछइ ८१, १	कादम १२, १	कांचली ९, १
[ कहिबुं ] ५३, २	कान ८, १	कांजी ७, १
कहीइं (प्र०) ६३, १	कानइ का ३१, १	कांठउ २६, १
कहींय ६३, १	कानमात को ३१, १	कांठलउ १६, १
कहूआलउ ६७, २	कानि सांभलीयि ७८, १	कांडी १७, २
कं ३१, २	कानी ३५, १	कांदउ २३, २
कंदोई १०, २	काप १८, २	कांध समुं पाणी ७७, १
	कापइ ४७, २	



कांपइ ३८, २. ४६, १	कीधुं ५०, १. ६०, १	कुंभतणु ७१, २
कांपिउ ५२, १	कीर्तइ ३८, १	कुंभार १९, २
कांबडी १६, २	कींगायइ ४२, २	कुंभाररउ २४, २
कांबलउ ७६, १	कु ३१, १	कुंभी १७, २
कांबी २४, १	कुघाट १६, १	कुंमारउ २५, १
कांसउ ११, २	कुचेल २५, २	कू ३१, १
कांसउं ७७, २	कुच्छित ७, १	कूआकंठइ २४, १
कांसीवाजउ २४, २	कु जि ६८, २	कूउ ६७, १
कि ३१, १	कुट्टि २३, २	कूकइ ४१, १
किडउ ११, १	कुडी ३५, १	कूकडउ १४, १
किम ५५, १. ६२, २	कुडीरहिं हितूउं ७७, २	कूकर १३, २
किमइ ७८, २	कुडुंबी ३४, २	कूका ५६, २
किमहइ ३१, २	कुठि २३, २	कूचउ १६, १
क्रियउ २४, १. २५, २	कुण ३५, २. ७५, २	कूजइ ३७, २
क्रिर ५७, १	कुण्डी २४, २	कूटइ ३८, १. ४, १
क्रिरगिरइ ७०, १	कुतिगीउ ६७, २	कूटणउ २१, २
क्रिरातउ १९, २	कुपइ ३८, २. ७०, २	कूटिउ ५१, १
क्रिरि ६७, २	कुपिउ ५१, १	कूड ६, २. २४, २
किलकिलाट १६, १	कुपियउ २१, २	कूडछी ६९, २
किवाडी १६, २	कुरुखेत ३४, २	कूदइ ३८, १
किसउ २७, २. ५५, १. ६४, १	कुरुटतउ २५, २	कूपइ ४९, १
किहां २७, १. ६३, १. ५५, २	कुलथ १२, २	कूल्ह १२, १
किहांतणू ५५, १	कुलथी १२, २	कूवडउ २५, १
किहांनउ ७८, १	कुसइ ४२, २	कूंअलउ ७९, १
किहांहुंतउ ५६, २	कुसणउ ४१, २	कूंढली ६६, २
की ३१, १	कुसि २५, २	कूंपल १५, १
कीकी ८, १	कुहइ ३८, १	कूंभट १७, २
कीजइ ३५. ५५, १	कुहणी ८, २	कूंभी २४, २
कीजउ ३५	कुहिउ ५१, २	के ३१, १
कीजतउ ३६	कुंअर ७, १	केत ६, १
कीजतउं ६०, २	कुंअरि १९, १	केतलउ ५५, २
कीजतुं ६२, १	कुंअलउ १४, २	केतलउं ६३, २
कीजतू (प्र०) ६०, ३	कुंआरीरा २५, १	केतलुं २७, २. ५५, २
कीजिसिइ ३६	कुंकू ९, १	केतलू (प्र०) ६३, ४
कीटी २१, १	कुंची ११, १	केदार ७५, १
कीडउ १३, १	कुंठसख २४, १	केला १८, १
कीधउ ३६, पं० २४	कुंड २४, २	केलि १८, १
कीधउं ६२, १	कुंढ २४, १	केवडुं ६३, २
कीघा ७४, २	कुंढगोठि २४, १	केवडू ५७, १
कीधु ७८, १	कुंपी १८, १	केवलउ क ३१, १

केशनड समूह ७६, २

केसू १२, १

कै ३१, १

को ३१, १

कोइल १४, १

कोइलि ७३, २

कोइली १४, १

कोई ५५, १

कोट १०, २

कोटडडं ६९, २

कोटवाल २१, २

कोटीलडं ६९, २

कोठड २०, २. २४, १. ६६, २

कोठड कणि भरिड ७२, १

कोठार २०, १

कोठीभडड ३३, १

कोड १५, २

कोडि २४, १. ३०, २

कोडिमड ३१, १

कोढ ७, २

कोथली (प्र०) ६६, २

कोदालड १०, १

कोरियड १८, १

कोरिवड १८, १

कोस १०, १

कोसंबी ३५, १

कोसीटड ६७, १

कोहलड १२, २

कोहली १५, २

कौ ३१, २

कः ३१, २

क्यारड २३, २

क्रमइ ७०, २

क्रयाणा २५, २

क्रीडड ३८, १

क्षमिड ५१, २

क्षरइ ७०, १

क्षुडु ७९, २

क्षेत्र ७३, २

क्षेत्रि ७४, २

क्षेत्रु ७७, २

ख

खजूअड १३, १

खजूर २४, १

खजूरड २४, १

खटमल १७, १

खड १३, १

खडखडइ ४४, १

खडगर २५, २

खडहडइ ४३, १

खडी ११, २

खडोखली ६७, १

खण २२, २. २४, २

खणइ ३८, २

खणिवा ८१, २

खणेप्रड १०, १

खत २१, १

खणपर २२, २

खमइ ३९, १

खमासण ३३, २

खयडड ९, २

खयरवडी १७, १

खरहडी १८, २

खलड १०, २

खलहाण १०, २

खली २३, १

खली (प्र०) २४, १

खसइ ३९, २

खंडइ ३८, १

खंडायितु ७६, १

खंडी २४, २

खंधार १०, २

खाई (प्र०) ६१, २

खाज ७, २

खाजइ ४४, २. ७०, २.

खाजलु ६९, १

खाजहलड २६, २

खाजा २०, १

खाट ३३, १

खाटकी २५, १

खाटि ९, २

खाणि ११, २

खातु (प्र०) ६०, २

खात्र २०, २. २२, २

खापरड २२, २

खामणड ३३, २

खायइ ३८, १

खार २१, १

खारड २२, २

खारिक ३३, १

खाली २३, १

खास ७, २

खासइ ३९, २

खांडड २४, २

खांडां ७५, २

खांधड ८, २

खिरइ ३९, १

खिसरहंडी ६६, २

खीच ३३, १

खीचडड १६, १

खीचडी ३३, १

खीजइ ४३, १

खीरणी १७, २. २३, २

खीरि ७, १

खीलइ ४२, १. ४३, २

खीलड १३, २

खीसड (प्र०) ६६, २

खुभइ ३९, १

खुभिड ५२, १

खुरड २४, २

खूणड ३२, १

खूपइ ४०, २

खूंदइ ४३, १

खेड १०, २

खेडइ ३८, १

खेडड २२, २

खेती १०, १

खेलणड २५, २

खोडड १५, १. ३३, २. ६९, २

खोडायइ ४२, २

खोभइ ३९, १

खोल २५, १.

चउसट्टि २९, १	चालीस २८, २	चुंठिउ ५१, १
चउसालउ ३३, १	चालीसमउ ५७, १	चुंठिवुं ५४, १
चउहत्तरि २९, २	चावइ ३९, १	चुंबइ ३८, २
चकरडी १६, २	चास १४, १	चूअइ ४२, १
चक्यउ ३४, २	चांच १४, १	चूक ७, १
चडइ ४०, २. ४३, १. ४८, २	चांदलउ १४, १	चूकइ ४४, २
चडिउ ५१, १	चांद्रिणानी लांप ६९, २	चूकउ १६, १
चणउ १२, २	चांद्रिणु २६, १	चूटिवा वांछइ ८२, १
चपलपणउं ७७, २	चांप ३५, १	चूणि १६, २
चमार २०, १	चांपइ ४१, १	चूति ८, २
चरउ २५, १	चांपउ १२, २	चून २४, १
चरचइ ३७, २	चांबडउं ७७, १	चूनउ २४, १
चरिवा वांछइ ८१, १	चांमडी ९, १	चूल्ही ११, १
चरू २२, २	चिडउ १४, १	चूसइ ३९, २
चर्म ७७, २	चिडी १४, १	चूटइ ३८, १. ८०, २
चर्मु ७७, २	चिणइ ३७, १. ४९, २. ८०, २	चेत ६, १
चलणी ९, १	चिणु ५१, १	चेतिउं ५२, १
चलू ८, २	चिणिवा वांछइ ८२, १	चेलउ २१, १
चवदइ ५७, २	चिणिवुं ५४, १	चोगखउ १४, २
चवलांरी १८, १	चिणोढी ६७, २	चोज ६, २
चहुंटी ३२, २	चित्रावेलि २२, १	चोपडइ ४०, २
चंदन २५, २	चिहुं परि ( प्र० ) ६३, २	चोपड्यउ ५२, १
चंदौउ ६९, १	चीकणउ २२, १	चोरइ २२, २. ३९, १. ४८, २
चंद्रयउ ९, २	चीखल २३, १	चोरडउ २२, १
चाउंडा ६, २	चीचूअइ ४४, २	चोरिवा वांछइ ८२, १
चाक २४, २	चीठी १८, १	चोरिवुं ५४, १
चाकी १६, २	चीणउ १२, २	चोरी ७, १
चाचर ३३, १	चीत्रइ ३७, १	चोरु ७८, २
चाचरि २३, १	चीत्रउ १३, २	चोलवटउ २१, १
चाटिवा वांछइ ८१, २	चीपडीउ ६७, १	चोषा ७२, २
चाट्टुकारिया वचन ६. २	चीपिडउ २५, १	चौदसिं दीसइ राक्षसु ७८, १
चाथ ( प्र० वाघ ) रि १८, १	चीफाड २६, २	च्यहु परि ६३, १
चावण ७, २	चीभडी १२, २	च्यारइ ७३, १
चामाचेड १४, १	चील्ह १४, १	च्यारि ५७, २
चारि २८, १	चील्हसाग १७, २	च्यारिवार ( प्र० ) ६३, १
चारोली ३१, १	चीपलालुं ६८, १	च्युहु वहीयि गाडुं ७८, १
चान्यउ ५०, १	चींतवइ ३८, १	
चालइ ४६, २	चुहुटली ( प्र० ) ६६, २	छ
चालणी २०, १	चुंकलइ ४६, २	छ २८, १
चालिउ ५२, १	चुंठइ ४८, २	छइ २०, २. ४१, २. ४७, २.
चालिवा वांछइ ८१, १		छट्टु ३०, २. ५७, १

छट्टील्लिखित २४, २  
 छठि ३१, २  
 छतु ( प्र० ) ६०, ३  
 छत्रीस २८, २  
 छपन २९, १  
 छप्पई १३, १  
 छमकारिउ ५१, २  
 छमकाव्यउं ६८, २  
 छयकारु ६७, २  
 छयालीस २९, १  
 छ रितु ६, १  
 छहत्तरि २९, २  
 छाजइ ४०, २  
 छाजउ २२, १  
 छाणउ १३, २  
 छाणावलि ६९, २  
 छात्र ७५, २  
 छानउ १९, १  
 छायइ ४२, २  
 छार १०, १  
 छालउ १३, २  
 छालि १२, १  
 छाली ७१, २  
 छावडउ ६, २  
 छावति ११, १  
 छावीस २८, २  
 छासठि २९, १  
 छांडइ ४१, २. ८०, २. ४६, २  
 छांडिवा वांछइ ८१, १  
 छांडिवुं ५३, १  
 छांह १५, १  
 छिछ ( प ? ) इ ७०, १  
 छिन्नु ३०, १  
 छिवइ ४०, २. ४३, २  
 छीकउ १९, १  
 छीकणी २५, २  
 छीडणि ( प्र० ) ६६, ४  
 छीतर २२, २  
 छीपउ ६७, २  
 छीकइ ४४, २. ४७, २

छींडणि ६६, २  
 छींडी २१, २  
 छुरउ २४, २  
 छूटइ ४३, २. ४८, २. ७०, १  
 छेकइ ४४, २  
 छेकडि ६६, २  
 छेतरीयउ २६, २  
 छेदइ ४२, २. ४८, ९  
 छेदियउ १४, २  
 छेहि ७५, २  
 छेहिलुं ५५, १  
 छोडिउ ५०, २  
 छोति १५, २  
 छोह ३२, १  
 छः ५७, २  
 छयासी २९, २

ज

जइ ५६, १  
 जइ करत ३६  
 जइ किमइ ६३, २  
 जइ किमइइ ३१, २  
 जइ कीजत ३६  
 जइ दीजत ३६  
 जइ देत ३६  
 जइ लीजत ३६  
 जइ लेत ३६  
 जई ( प्र० ) ६१, १  
 जईतउं ६०, २  
 जईतूं ( प्र० ) ६०, ४  
 जईयइ किमइ ( प्र० ) ६३, ४  
 जउ ५५, २  
 जउणा २२, १  
 जउराणउ ६, १  
 जगाडइ ४७, २  
 जट्ट १५, १  
 जड १२, १  
 जडपणउ २७, २  
 जडी १७, १  
 जणउ ३४, १  
 जणाइ ४४, २

जणावइ ४७, १  
 जतियारउ २०, २  
 जननउ समूहु ७६, २  
 जनम १४, १  
 जनोई १०, १  
 जपइ ३८, २. ८०, २  
 जपमाली २१, १  
 जमवारउ १८, १  
 जमाई ६७, २  
 जमिवा वांछइ ८१, २  
 जयणा १८, १  
 जरिउ ५०, १  
 जल ७८, १  
 जलो १३, १  
 जव ३३, १  
 जवखार १०, २  
 जस ३४, २  
 जहियइ २७, १. ५५, २  
 जहीइं ( प्र० ) ६२, ४  
 जहींय ६२, २  
 जं ६३, २  
 जंभाआइ ४०, २  
 जाइ १२, २. ७५, २. ८०, १  
 जाइफल ९, १  
 जाइवउं ६२, १. ७२, १  
 जाइवा ( प्र० ) ६१, १  
 जाइवा वांछइ ८१, १  
 जाई ६१, १  
 जागइ ३७, १. ४७, २. ७० १.  
 जागीइ ७१, १  
 जाग्यउ ४९, २  
 जाजरउ २२, १  
 जाडउ १७, १  
 जाण अहो पुरुष  
 आपणि लहुडा  
 थ्या [ ... ] वस्त्र  
 पहिरता } ७८, २  
 जाणइ ४१, १. ४७, १. ७३, १.  
 जाणउं ६२, २  
 जाणतउ ६०, २  
 जाणनहारु ६१, २

जाणहार ( प्र० ) ६१, ३.	जिमिवुं ५३, १	जूसरू ६९, २
जाणहार ६१, २	जिमिवूं ( प्र० ) ६२, १	जे किमइ एयु } ७८, २
जाणिउं ६०, १	जिमी ( प्र० ) ६१, २	[ गहुं ] लेत,
जाणिवउं ६२, १	जिमीतूं ( प्र० ) ६०, ४	तु द्राम न पडत }
जाणिवा ६१, २	जिम्युं ( प्र० ) ६०, १	जेठ ६, १
जाणिवा वांछइ ८२, २	जिसउ २७, २. ५५, २	जेतला ७५, २
जाणिवुं ५३, २	जिहां २७, १. ५५, २	जेतला छात्र } ७५, २
जाणिवूं ( प्र० ) ६२, १	जिहांतणू ५५, १	तेतला पोथां }
जाणी ६१, १	जीण ७४, २. ७४, २	जेतलां खांडां } ७५, २
जाणीतउं ६०, २	जीणइं ७४, २	तेतला राजपुत्र }
जाणीतूं ( प्र० ) ६०, ४	जीणं ७४, २. ७४, २.	जेतलुं २७, २. ५५, २. ६३, २.
जाण्यउ ४९, २	जीपइ ४१, १	जेतलूं ( प्र० ) ६३, ३
जाण्युं ( प्र० ) ६०, १	जीपिवा वांछइ ८१, २	जेवडउ १५, २
जात ७८, २	जीभ ८, १	जेह ठाम हुंतउ ५६, २
जातउ ६०, १. ७३, १.	जीमइ ३९, १. ४६, २.	जेहनउं ७४, २. ७५, १.
जातु ( प्र० ) ६०, २	जीमिउ ५०, १	जेहि ७४, २
जानावासउ ६८, २	जीरउ ७, २	जो ३५, २
जानी ७, २	जीवइ ३९, १. ४७, २. ७१, १.	जोअण १०, १
जानीवासउ २६, १	जीवापोता १९, २	जोइउ ४९, २
जानुत्र ६८, २	जीविवा वांछइ ८१, २	जोइवुं ५२, २
जामइ ३८, २	जीविसिइ ३६	जोगवटउ २१, १
जाम ( य ? ) इ ७०, २	जु ५६, १. ६३, २.	जोडइ ३८, १. ४९, १.
जायइ २१, २. ३७, १. ४६, २.	जुआ जुआ १५, २	जोडउ २४, १
जायउ २४, २	जुआरि ३३, २	जोडिवुं ५३, २
जालउर ११, १	जु करत ७८, २	जोड्यउ ५१, १
जाली १९, २	जु किमइ एयु गा- } ७८, २	जोतिषी ३४, २
जावेल २१, १	मिन जात, चोरु }	जोत्र १०, १
जास्युं ७८, २	बलद न लयेत }	जोत्रु ६९, २
जाहउ १४, १	जु किमइ हुं घरि } ७८, २	जोयइ ४७, १
जां २७, १. ५६, १. ६३, २.	जात, तु एयु मइ }	जोवन ७, १
जांघ ८, २	गामि न मोकलत }	जोहार ५७, १
जिणइ ४९, १	जु देत ७८, २	ज्यार ६३, १
जिणचंद भट्टारक ६, २	जु लेत ७८, २	ज्वलइ ८०, १
जिणिसिइ ३६	जुवान २२, २	झ
जिण्यउ ५०, २	जुहार ६८, १	झखइ ४०, २
जिम २७, १. ५५, १.	जू १३, १	झगडउ १५, २. ६७, १.
जिमणउ ( प्र० ) ६४, १	जूआरउ ७, २	झटकइ २७, १
जिमणुं ५६, २	जूउ २७, १. ५७, १.	झटकई ६३, १
जिमतउ ६०, २	जूउं ६३, १	झणझणइ ४३, २
जिमतु ( प्र० ) ६०, ३	जूझिवा वांछइ ८१, २	झलझांपसउ ६४, २
जिमाउइ ४७, १	जूपइ ४०, २	

झंपावइ ४४, १  
 झाकइ ४४, २  
 झाड १९, २  
 झामलउ २५, २  
 झालरि २२, १  
 झांप १४, २  
 झीणउ १५, १  
 झूझइ ३८, २  
 झूखइ ४०, २

ट

टलइ ३९, १  
 टलवलइ ४३, २  
 टसर ३५, १  
 टंका २४, १  
 टार २४, २  
 टाली ७५, २  
 टांक १९, १  
 टांकुलउ १०, २  
 टीपणउ ३२, १  
 टीलउ ३२, १  
 टींटीहडी १४, १  
 टोपरउ ३३, १  
 टोलउं ७६, १

ठ

ठवणारी ५, १  
 ठवणी ३४, १  
 ठंभीजइ ४०, १  
 ठाई २६, २  
 ठाण २१, १  
 ठाणउ २०, २. २४, २  
 ठाणांग ६, २  
 ठाम ५६, २  
 ठालउं ५६, २  
 [ ठिउ ] ४९, २

ड

डर २४, २  
 डरइ ४०, २  
 डस्यउ ३४, २  
 डसइ ३९, २  
 डहर १७, १  
 डहरउ २२, २

उ०२० १३

डाकर १७, १  
 डावउ ६३, २  
 डावउं ५६, २  
 डाभ १३, १  
 डावउ ( प्र० ) ६३, ४  
 डांभइ ७०, १  
 डांस १९, २  
 डेहली ३२, १  
 डोइलउ १६, १  
 डोकरउ ३२, २  
 डोकर ६६, २  
 डोडी २३, २  
 डोहलउ ७, २

ढ

ढल २०, १  
 ढंढोलइ ४०, २  
 ढांकइ ४०, १. ४७, २.  
 ढांकणउं ६७, २  
 ढांक्रिउ ५२, १  
 ढीलउं ५६, २  
 ढूकइ ४१, १  
 ढूकडउ ७४, १. ७९, १.  
 ढूकडी ७३, २  
 ढूकडी गंगा जीणइं देशि ७४, २  
 ढोकइ ४१, १

त

तइसउं वात करइ ७३, २  
 तइ ५५, १  
 तइं गामि जाइवउं ७२, १  
 तइं भलइं हुईइ ७१, १  
 तइं वयरी आणी  
 बांधीवउ ७३, १  
 तउ ५५, २. ५६, १.  
 तक १८, २  
 तका १८, २  
 तज २१, १  
 तडफडइ ४४, १  
 ततकाल ६, १  
 तन्तुअउ १४, १  
 तपइ ३८, २. ४९, १  
 तपिउ ५१, २

तपरी २४, १  
 तमक २२, १  
 तम्हसरीपु ( प्र० ) ६४, २  
 तम्हंसरीपउ ६४, १  
 तम्हारउं ६३, १  
 तम्हारं ( प्र० ) ६३, ३  
 तम्हि कहउ कहउ } ७८, २  
 आपणी वात }  
 तरइ ३७, २. ४७, १. ८०, २  
 तरिवा वांछइ ८१, १  
 तरिखुं ५३, २  
 तरी २०, २. २४, २  
 तरुणउ ८०, १  
 तरूनउ समूहु ७६, २  
 तर्जइ ३७, २  
 तन्यउ ४९, २  
 तलाउ ३२, २  
 तलागु ६७, १  
 तलार १६, २  
 तलाव विचि देहरउं ७५, २  
 तस्करइ ४८, २  
 तहियइ २७, १. ५५, २  
 तहींय ६३, १  
 तं ६३, २  
 तंगोटी ३३, १  
 तंत्र ९, १  
 तंबोल बीडउ १९, १  
 तंबोलरी थई ९, २  
 तंबोली १९, १  
 ताकइ ४१, १  
 ताठउ ३४, २  
 ताड ३५, १  
 ताडइ ४९, १  
 ताडिउ ५०, २  
 ताण ( प्र० ) ६३, ३  
 तापसरी २४, २  
 तारइ ४७, १  
 ताल २३, १  
 तालउ ११, १  
 ताली ८, २. ३४, २  
 तालुयउ ८, २

ताहरउ ६३, २	तुलाई ३२, २. ६७, १	त्रासइ ३९, २. ४६, १
ताहरुं २७, २. ५५, १. ६३, १	तुहइ ५६, १	त्रासवइ ४६, १
ताहरुं (प्र०) ६३, ३	तुं ३५, २. ५५, १	त्रिगडू ७, १
तां २७, १. ५६, १. ६३, २	तू कन्हलि ७४, १	त्रिगुणु ६८, १
तांइ ३१, २	तूठउ १८, २. ५१, १	त्रिणउ १३, १
तांगणी ६४, २	तूणियउ १८, १	त्रिणि ५७, २
तांवउ ११, २	तू पाषइ ७४, १	त्रिणि वार (प्र०) ६३, १
तिउणउ ३२, २	तूरी ११, २	त्रिणह २८, १
तिजह ३७, २	तूली २३, १	त्रिपणउ ३४, १
तिडकउ ७८, १	तूसइ ३९, २	त्रिपन २९, १
तिडोत्तर सउ ३०, १	तूंअरि १२, २	त्रिमणइ ७७, २
तिम २७, १. ५५, १. ६२, २	तूंसरीपउ २७, २. ६४, १	त्रिवायउ ३१, १
तिमइ ६३, १	तूंहइ ५५, १	त्रिसियउ ७, १
तिरछउ ५६, १. ६४, १	तृणानु समूहु ७६, २	त्रिहत्तरि २९, २
तिरिछउ (प्र०) ६४, १	तृहुपरि ६३, १	त्रिहुं परि ५६, २
तिर्येच १३, १	तेजिउं ५२, १	त्रीजउ ३०, २. ५६, २
तिल २५, १	तेडइ ४७, २	त्रीस २८, २
तिलउ ३४, २	तेतला ७५, २	त्रीसमउ ५७, १
तिली ८, २	तेतलुं २७, २. ५५, २. ६३, २	त्रुटी ६७, १
तिसउ २७, २. ६४, १	तेतलूं (प्र०) ६३, ३	त्रुटइ ३८, १
तिहां २७, १. ५५ २. ६३, १	ते ते ७५, १. ७५, २	त्रेगति ( डि ) २०, १
तिहांतणूं ५५, १	तेत्रीस २८, २	त्रेवीस २८, २
तिहांनउ ७८, १	तेर ५१, २	त्रेसठि २९, १
तीज ३१, २	तेरह २०, १. २९, १	त्रोडिउ ५१, २
तीतिर १४, १	तेरमउ ३०, २	त्र्याणू ३०, १
तीन्हउं ६९, २	तेरसि ३१, २	त्र्यासी २९, २
तीमइ ४२, २	तेली १९, १	थ
तीमण ७, १	तेलु ७३, १	थडउ २१, २
तीरथइ २४, २	तेवडउ १५, २	थण ३२, २
तीर्यु ७३, २	तेह ठाम हुंतउ ५६, २	थली २२, ३
तु ५६, १. ६३, २. ७८, २	तोडइ ३८, १	थवइ ४२, १
तुणिवा वांछइ ८२, १	तोलइ ४०, १. ७०, २	थाइवा ८१, १
तु पूठि ७३, २	त्यजिउ ५०, २	थाकइ ४०, २. ७०, २
तुम्हकेरउ १५, २	त्रउअउ ११, २	थाकउ ५१, १
तुम्हनइ ५५, १	त्रडत्रडइ ४४, १	थाकिवा ८१, १
तुम्हसरीषउ २७, २	त्रतालीस २९, १	थापइ ४६, १
तुम्हारुं २७, २. ५५, १	त्राकडीवेलउ १७, २	थाल २०, २
तुम्हासित ५५, २	त्राकलउ १०, २	थाली २०, २. २४, २
तुम्हि ५५, १. ५५, १	त्राठउ ५०, २	थाहरइ ४३, २
तुम्हे ३५, २. ५५, १. ५५, १	त्रापउ २२, २	थांपणि १८, २

थांभइ ४१, १  
 थांभउ १९, २. २४, २  
 थिउं ( प्र० ) ६०, १  
 थीजइ ४२, १  
 श्रीणउ घी ३१, १  
 थुम ३१, १  
 थूकइ ४४, २  
 थूणी १९, १  
 थूथउ १९, २. ३५, १  
 थूम २१, २  
 थूली २६, १  
 थूंकु ६७, १  
 थै ६१, १  
 थोडउ १४, २. ७९, १  
 थोडे दिहाडे आविउ ७८, १  
 थ्या ७८, २  
 थ्युउं ६०, १

द

दउठ २७, २  
 दक्खिण ६, १  
 दक्षिणदिशिउ ७८, १  
 दडउ ३२, २  
 दडवडाइउ २६, २  
 दमइ ३९, १  
 दयामणउ २०, २  
 दर २४, २  
 दश ५७, २  
 दस २८, १  
 दसमउ ३०, २. ५७, १  
 दसमि ३१, २  
 दसी ९, २  
 दसे आगलउ १८, १  
 दहइ ४०, १. ८०, २  
 दहिवा वांछइ ८१, १  
 दही ७, १  
 दंडइ ७१, २  
 दंडाउंछणउ २०, २  
 दंतसूकट १६, १  
 दंतूसल १७, १  
 दंभइ ४३, २

दाखवइ ४०, १  
 दाझइ ४४, २  
 दाडिमु नींकोलइ ७७, २  
 दाढ ८, १  
 दाठी ८, १  
 दाणउ १६, २  
 दाणमंडही १६, २  
 दात्रउ ३४, २  
 दादर २२, १  
 दादुर १४, १  
 दादुर वाजउ २५, १  
 दाघउ १४, २. ५०, १  
 दाबडउं ६८, २  
 दाम १८, २  
 दामण १३, १  
 दारीवाडउ ३३, १  
 दासी वहू वत् मानइ ७९, १  
 दाहिणउ १५, २  
 दाहिण गमइ ७३, २  
 दांडी ३४, १  
 दांतिलउ ३३, २  
 दि ७०, १. ७२, १. ७२, १  
 दिइ ४७, १. ७५, २  
 दियइ ३५  
 दिवरावइ ४७, १  
 दिषा ( खा ) डइ ४७, १  
 दिहाडउ ३१, १  
 दिहाडे ७८, १  
 दीख १०, १  
 दीखइ ४२, १  
 दीजइ ३५,  
 दीजउ ३५  
 दीजतउ ३६  
 दीजतउं ६०, २  
 दीजतुं ६२, १  
 दीजतूं ( प्र० ) ६०, ४  
 दीजिसिइ ३६  
 दीठउ ४९, २  
 दीठउं ६०, १  
 दीघउ २१, १ ३६, पं. २४  
 दीघउं ६०, १. ६२, १

दीधु ७८, १  
 दीधुं ५०, १  
 दीपइ ३८, २  
 दीरघइ कू ३१, १  
 दीर्घनउं ७९, २  
 दीर्घु ७९, २  
 दीवउ ९, २  
 दीवटीउ ६९, २  
 दीवडी १९, २  
 दीवमंदिर २३, २  
 दीवाकाणउ २१, २  
 दीवाली १८, २. ६७, १  
 दीवी २६, २  
 दीसइ ७३, २. ७७, २. ७८, १  
 दीसतउं ६०, २  
 दीह २०, २  
 दीहाडा ७३, १  
 दीहाडी ७३, २  
 दीहाडे ७८, २  
 दुक्खइ २०, १  
 दुःखिं ७३, १  
 दुगुंछइ ४०, १  
 दुषमाअरउ ६, १  
 दुघडउ २६, २  
 दुध ७, १. ७५, २  
 दुधु ७२, २,  
 दूवलउ ३२, १  
 दूमइ ४०, १. ४२, १  
 दूर्वानउ समूहु ७६, २  
 दूषइ ३७, १. ४९, १  
 दूहवइ ४६, १  
 देइ ३५  
 देई ६१, १. ६२, १  
 देउली ३३, १  
 देखइ ४०, २  
 देखतउ ६०, २  
 देखाविखि २७, १  
 देखी ६१, १  
 देजे ३५  
 देणहार ३६, पं० २२



देणहारु ६१, २. ६२, २	दोतडि १५, २	धरिवुं ५२, २. ५३, २
देणाहारु ३६, पं० ३३	दोरउ २२, २. ३२, २	धवलइ ४०, १
देत ७८, २	दोरी ७३, १	धाई ८, १
देतउ ३६. ६०, १	दोसी ३३, २	धाईउ ५२, १
देतु (प्र०) ६०, २	दोहइ ४०, १. ९०, २	धाडि ९, २
देतुं ६२, १	दोहडउ २५, १	धाणा ७, १
देव आयतुं करइ ७७, २	दोहणी १६, २	धाणी १९, २
देवउं ३६, पं० ३१	दोहिलउं ६८, १	धातइ १५, २
देवतणइ ७२, २	दोहिलुं ५७, १	धातस्वायु ६९, २
देवदत्त २१, २	दोहिवा वांछइ ८१, २	धान २४, २
देवदत्तु ७१, २	दोही ५१, १	धान घीरी
देवा ३६, पं० २८ ६१, १. ६२, १	दोहीत्रउ ७, १	धामण १७, २
देवालय कन्हलि } ७३, २	द्रउडइ ४२, २	धायउ ७, २. १८, २
तीर्थु छइ } ७३, १	द्रमद्रमइ ४४, १	धावइ ३९, १
देवालय विहुंगमे } ७३, १	द्रम्मामु ६८, १	धाहडी १२, २. ३१, १
वड दीसइ }	द्रम्मु ७३, २	धीया न पुत्ता १८, १
देवालयु ७५, २	द्रव्यु ७३, १	धीरवइ ४१, १
देवालि १७, २	द्रहद्रहवार ६४, २	धींगउ २२, १
देवा वांछइ ८१, २	द्राख १२, २	धुलहडी ६७, १
देवुं ६१, २. ६२, २	द्राम ७८, २	धूअउ १२, १
देवूं ५२, २	द्वि ५७, २	धूअरि १२, १
देषइ ८०, १		धूआ २३, १
देषतु (प्र०) ६०, ३	ध	धूणइ ३७, १
देषिवउं ६२, १	धड २२, २	धूणियउ २५, २
देषिवा ६१, २	धडहडइ ४४, २	धूपइ ३८, २. ७०, १
देषिवा वांछइ ८१, १	धणिउ ६७, १	धूपधाणउ ६८, २
देषिवूं (प्र०) ६२, १	धणिय १७, १. २५, १	धूंसइ ४४ १
देषिव्युं ५२, २	धणीवउ २६, १	धेणू २१, १
देषी (प्र०) ६१, २	धत्तूरउ १२, २	धेनुनउ समूहु ७६, २
देशांतरी ६९, १	धत्तूरियउ १६, १	धोअइ ४२, १
देशि ७४, २	धनागरउ १८, १	धोईउ ५१, २. ५२, १
देसानी ६७, २	धनु ७६, १	धोयण ३३, २
देसिइ ३६	धनुष ९, २	धोरी १३, २
देहउ ३६	धमइ ३७, १	धोवणी १८, १
देहरइ २२, १	धमिउं ५२, १	ध्यायइ ३७, २
देहरइरउ २५, २	धरइ ३७, १. ४७, १. ७० १	ध्रायइ ३७, २
देहरउं ७५, २	धरणइ १६, १	ध्रायु ७२, १
देहरासरु ६८, १	धरती १०, २	ध्रुवउ १६, २
दैत्य ७२, २	धरावइ ४१, १	ध्रू २३, १
दो [गुं] छइ ४६, १	धरिउ ५०, १	ध्रेठउ ७, २
दोटी ३२, २	धरिवा वांछइ ८१, १. ८१, २	ध्रोव १३, १

न

न १८, १. ७२, १. ७८, २

नइ ७३, १

नइमाहि माछा हींडई ७५, २

नउद ९, १

नउल १४, १

नखारउ १८, १

नगरनइं उत्तर गमइं } ७४, १  
दूकडउ पर्वतु }

नगरु ७३, २

नचावइ ४८, १

नणदोई ६७, २

नणंद ८, १. ६७, २

नदि ७४, २

नदी २५, २. ७४, १

नदीनउं जलु ७८, १

नमइ ३९, १. ८०, २

नमस्करइ ४१, २. ४६, २

नमस्करिव्युं ५३, १

नमिवा वांछइ ८१, २

नमो १५, १

नयडउ १४, २

नरनरइ ४२, १

नव २८, १. ५७, २

नवकारवाली २१, १

नवकारसही ३३, २

नवमउ ३०, २. ५७, १

नवमि ३१, २

नवलउ १५, २

नवाणू ३०, १

नवारसउ १७, २

नव्यासी २९, २

नस ९, १

नसावइ ४०, १

नहरणी १८, १

नहि तु ( प्र० ) ६२, ३

नही ३३, २

नही करइ ३६

नही दियइ ३६

नही लियइ ३६

नहीत ५६, २

नहीं तु ६२, २

नहुतरिउ ५२, १

नाक ८, १

नागरवेलि १२, २

नाचइ ३८, १. ४८, १. ८०, १

नाचिउ ५१, १

नाचिवुं ५३, २

नाठउ ५०, १

नाणउ २३, २

नाणिद्रउ ६७, २

नातणउ ९, १

नात्रा १८, १

नाथइ ४४, १

नाथियउ १६, २

नान्हउ ६८, २

नामइ ८०, २

नामु ७४, १

नारिंगं रूख २२, १

नालेर १२, २

नाव १०, १

नावी १०, २

नासइ ३९, २. ४८, २

नासिवा २६, १

नासिवुं ५४, २

नास्तिक टाली } ७५, २  
कुण पापीउ }

नाहर १७, १

नाहिवा वांछइ ८१, १

नाहिवुं ५४, १

नांखइ ४२, १

नांगर २५, १

नांप ( ख ) इ ४७, २

नांषि ( खि ) उ ५२, १

निउंजइ ४२, २

निऊ २९, २

निकरउ २५, २

निकोलिवा वांछइ ८१, २

निजंत्रइ ३९, १

निद्वंधस २०, २

निद्रालखउ ३२, २

निवीजइ ७०, २

निमिती ३४, २

नियोजिवुं ५३, २

निरखइ ४१, २

निरभरछइ ३९, २

निराकरइ ४४, २

निरोध १८, १

निर्घाटइ ४१, १

निर्मलबुद्धि ७४, २

निर्मलां ७४, २

निर्वाप ७५, २

निलखणउ २६, २

निलाड ८, १. ६७, २

निवडियउ २१, १

निवायउ २४, १

निवारइ ४३, २. ४६, २

निवारिउ ४९, २

निर्वी ३१, १

[ निवेदिवुं ] ५३, २

निपेघइ ४६, २

निष्ठा २४, १

निसरावउ १७, १

निसूग २०, २

निसेजा २१, १

निसोत २१, १

निस्तच्यउ ४९, २

निंदइ ३८, १. ४६, १

नीक २३, १. ६६, ३

नीकउ २६, २

नीकलइ ४६, २

नीकल्यउ ४९, २

नीकोलइ ४६, २

नीखणियामउ २६, १

नीचउं ५६, १

नीठ २४, १

नीठइ ४३, १. ७०, १

नीठि २३, १

नीठियउ २५, २

नीठुर १४, २

नीद्रालूखउ ६९, २

नीपजइ ३८, २

नीपजइं ७५, २

नीमी १५, १	पच्छिम कि ३१, १	पढइ ४२, १. ७७, १. ८०, १
नीवडइ ४०, १	पच्छोकडु ६९, १	पढणहारु ७२, १
नीसरइ ४०, १	पछइ १८, २. ३१, २. ५५, १	पढतउ ६०, २
नीसरणी २०, १	पछेवडइ ९, १	पढमाली २०, १
नीसरिउ ४९, २	पछेवडी २१, १	पढिउं ६०, १. ६२, १
नीससइ ३९, २. ४६, २	पछोकडउ २६, १	पढिवा ६१, १
नीसा २०, १	पजूसण ३३, २	पढिवा वांछइ ८१, १
नीसाण १६, १	पटउ २३, १	पढिवुं ५३, १
नींकोलइ ७७, २	पटांतरं ६६, २	पढिवूं (प्र०) ६२, २
नींगमइ ७३, १	पटांतरूं (प्र०) ६६, ४	पढी ६१, १
नींद ६, २	पठणहार (प्र०) ६१, ४	पढीतउं ६०, २
नींपजावइ ७२, २	पठणहारु ६१, २	पढीतूं (प्र०) ६०, ४
नींबू १९, १	पठतु (प्र०) ६०, २	पढी सकउं ३६, पं० २९
नेउर ९, १	पठावियउ १४, २	पढी सकुं ६२, २
नेत्रउ २५, १	पडइ ३८, १. ४८, १. ८०, २	पडू ६४, २
नोमाली ३४, १	पडखइ ४१, २	पडूच ६४, २
नोहली ३१, १	पडघउ २१, १	पडूचूं (प्र०) ६४, ४
न्युंछणउं ६९, २	पडजीभी २०, २	पडूयउं (प्र०) ६०, १
न्युंजणउं ६९, २	पडत ७८, २	पणीहारि ७, २
न्हवारइ ४७, २	पडल २३, २	पतीजइ ४३, १ ७०, २
न्हाइ ४७, २	पडलउ ३४, १	पतंग १७, २
न्हाइ ५०, १	पडली २५, २	पथरणउं ६७, २
न्हायइ ३७, १	पडवास ९, १	पद ७७, १
	पडसाल ३२, १	पधारउ ४१, १
	पडहउ ६, २	पनर २८, १
	पडहू १०, १	पनरइ ५७, २
	पडाई २६, २	पनरमउ ३०, २
	पडिउ ५०, १	पमार २१, २
	पडिकमणउ ३३, २	पमावइ ४१, १
	पडिगरिउ ५२, १	पमोडी १७, १
	पडिलेहण ३३, २	पयलु ६४, २
	पडिवा ३१, ३	पयंतरउ ३३, २
	पडिवा वांछइ ८१, २	परखइ ४१, २
	पडिवुं ५३, १	परचूरणि २५, २
	पडीआर २५, २	परत २६, २. ६६, २
	पडीगइ ४१, २	परतइ ४४, १
	पडीगरइ ४६, १	परताति १९, १
	पडीसारउ ६८, २	परनालि १२, १
	पडूछइ ४४, १	परम २७, १. ६२, २
	पडूंचउ ३१, २	परमइ ५५, २
	पडोसु ६९, १	

प

- परमूणउं ६७, २  
 परलउ ३२, १  
 परव ११, १. ६८, २  
 परवारइ ४३, २  
 परवाली ११, २  
 परसु १८, १  
 परहउ २७, २. ५६, १  
 परहु ६४, २  
 पराणी १०, १  
 परायउ ३१, २. ५५, १  
 परालु ६९, २  
 परि ५५, २ ७७, २  
 परिचउ १५, १  
 परिणइ ४१, २. ४७, २  
 परिणवुं ५४, १  
 परिणावइ ४८, २  
 परिण्यउ ५१, १  
 परिधान २५, १  
 परिवारिउं ५७, १  
 परिवाच्युं ६८, १  
 परिसीजइ ४६, १  
 परिसीनउ ५१, २  
 परीछइ ४१, १  
 परीयच्छि ६९, १  
 परीयट्टु ६७, २  
 परीषि (खि) वुं ५३, १  
 परीसइ ४३, १  
 परीसिउ ५१, २  
 परीसिच्युं ५२, २  
 परूवइ ३७, १  
 पर्वतनइ अहिनाणि } ७३, २  
 गामु वसइ  
 पर्वतु ७४, १  
 पलवटि ६९, १  
 पलाण १३, २  
 पलाणइ ४१, १. ४४, १  
 पली ८, १  
 पलीवणउ २१, १. ३४, १  
 पलेवलउं ६९, २  
 पलोटइ ४०, २
- पल्हालइ ४३, २. ७०, १  
 पवित्रइ ७०, १  
 पवित्री १७, २  
 पवित्रु करवा वांछइ ८२, १  
 पवीत्रइ ४३, १  
 पश्चिमीउ ७८, १  
 पसवइ ३२, १  
 पसीअइ ४२, २  
 पसीजइ ४२, २  
 पह २२, २  
 पहर २०, १  
 पहिरइ ४२, २, ४८, १  
 पहिरणउ ३२, १  
 पहिरता ७८, २  
 पहिरवुं ५२, २  
 पहिरावइ ४८, १  
 पहिराविउ ५२, १  
 पहिरिउ ५२, १  
 पहिस्यउ २६, १  
 पहिलउ १८, २, ५६, २  
 पहिलुं ५५, १  
 पही ३९, १  
 पहुरइ १६, १  
 पहूआ १९, १  
 पहेली ६, २  
 पंखी १४, १  
 पंचवीस २८, २  
 पंचहत्तरि २९, २  
 पंचाणू ३०, १  
 पंचावन २९, १  
 पंचासी २९, २  
 पंड्यांस ३४, १  
 पाइक ३२, २  
 पाइणि १७, १  
 पाइली १७, २  
 पाउल ३३, १  
 पाउंछणउ २१, १  
 पाखइ ६२, २  
 पाखखमण ३३, २  
 पाखर १३, १  
 पाखलि ६४, २
- पाचइ ४४, २  
 पाछइ १५, २  
 पाछलि ७५, १  
 पाछिलउ ३१, २, ६४, १  
 पाछिलु ६४, १  
 पाछिलुं ५५, १  
 पाछेवाणु ६६, २  
 पाछेवाणुं (प्र०) ६६, २  
 पाज २३, १  
 पाजणी २६, १  
 पाटउ २३, १. २४, १  
 पाटण टाली } ७५, २  
 किहां वसीइ }  
 पाटलउ ६८, १  
 पाटी ३२, १  
 पाटू २६, २  
 पाटूआली २६, २. ६७, २  
 पाठवइ ४४, १  
 [ पाडइ ] ४८, १  
 पाडउ २५, १  
 पाडिहारू ३१, १  
 पाड्यउ २२, २  
 पाढ ३५, १  
 पाण १७, १  
 पाणी १७, १. ७४, २. ७७, १  
 पाणीनइ छेहि वृक्षु ७५, २  
 पाणीनइ पारि देवालयु ७५, २  
 पाणी भरिउं सरोवर ७२, १  
 पातली १९, १  
 पात्र ७७, १  
 पात्रउ १८, १  
 पात्रांरउ १८, २  
 पाथउ ३४, २  
 पाथर ११, २  
 पादइ ३८, १ ४९, १  
 पादरियउ २५, २  
 पाद्र २२, २  
 पाधरू ६४, १  
 पान १२, १  
 पान्हउ १७, २  
 पान्ही ८, २

पापड २२, २  
 पापीड ७५, २  
 पामइ ४१, २  
 पामिड ५०, १  
 पामिवा वांछइ ८१, २  
 पामिवुं ५४, १  
 पामी विद्या जेहि पुरुषि ७४, २  
 पायइ ४१, १  
 पायकेसरी ३४, १  
 पायठवणउ ३४, १  
 पारउ ११, २  
 पारस पाहाण २२, १  
 पारि ७५, २  
 पारेवउ १४, १  
 पालइ ४१, १  
 पालउ १२, १ ५७, १  
 पालटइ ४३, १  
 पालटउ ६८, १  
 पालटिउ ५६, २. ६८, १  
 पालणउ २५, २  
 पालथी ९, १  
 पालवइ ४३, २  
 पालि २३, १  
 पालिउ ५०, २  
 पालिवुं ५४, १  
 पालुइ ७०, १  
 पावइ ४१, २  
 पावटउ १७, १  
 पाव (ख ?) रिउ ६८, २  
 पाषइ ६२, ४. ७४, १ ७५, १  
 पाषलि (प्र०) ६४, ३  
 पाष (ख) ह ५५, २  
 पासउ ७, २. ८, २. २५, १  
 पासाकेवली २३, २  
 पासि ५६, २  
 पासी १०, २  
 पाहणि पीस्या सातू ७८, १  
 पाहरी ६९, २  
 पाहरीं जागीइ ७१, १  
 पाहरू १६, १  
 पाहाण ११, २

पांख १४, १  
 पांगुरइ ४८, १  
 पांगुरणउ ३२, १  
 पांगुन्यउ ५२, १  
 पांगुरावइ ४८, १  
 पांगुरिवुं ५२, २  
 पांच २८, १. ५७, २  
 पांचमउ ३०, २. ५७, १  
 पांचमि ३१, २  
 पांजरउ २२, २  
 पांडरउ १४, २  
 पांति १४, २  
 पांभडी ३४, २  
 पांसुली ९, १  
 पिण्डखजूर २४, २  
 पितर ८, १  
 पियइ ३७, १  
 पिराणउ ६९, १  
 पिहुलउ ३३, २  
 पिंगाणी २३, २  
 पीई ७५, २  
 पीजहलउ २६, २  
 पीजहलु ६९, १  
 पीटणउ २१, २  
 पीठ १५, १  
 पीठी १६, १  
 पीडइ ३८, १  
 पीठी २२, १  
 पीतरियउ ७, २  
 पीतल ११, २  
 पीत्राणी ६९, १  
 पीत्रीयु ६९, १  
 पीधुं ५०, १  
 पीपल १२, १  
 पीपलरी २६, १  
 पीपलि ७, १  
 पीपलीमूल ३४, २  
 पीपी २६, १  
 पीयइ ४६, २  
 पीलउ १५, २  
 पीलू ३५, १

पील्या २५, १  
 पीवा वांछइ ८१, २  
 पीवूं ५२, २  
 पीसइ ४४, १. ४६, १  
 पीसती २०, २  
 पीस्या ७८, १  
 पीहर १५, १  
 पींगाणउ २३, २  
 पीछ १४, १  
 पीजइ ३७, २  
 पीजणउ १०, २  
 पीजती २०, २  
 पींडार २२, २  
 पींडी ८, २  
 पुकारइ ४४, २  
 पुडउ १६, २. २३, २  
 पुण पुण ५७, १  
 पुत्रसिउं यमइ ७५, २  
 पुत्रि २१, २  
 पुष्पपडली २५, २  
 पुरअहे दीहाडे } ७८, २  
 मिष्टान्न यमता }  
 पुरस ८, २  
 पुरु ५५, २  
 पुरुष ७८, २  
 पुरुषतणउ समूहु ७६, १  
 पुरुषतणुं समवायु ७६, १  
 पुरुषनउं वृंदु ७६, १  
 पुरुषभणी ७३, १  
 पुरुषि ७४, २  
 पुरुषु राजांनीं परि } ७७, २  
 दीसइ }  
 पुरोकउं ६७, २  
 पुहुर ७३, १  
 पुहुलउ ७९, १  
 पुहुंक १९, १  
 पुंआड ३३, १  
 पुंखियउ २४, १  
 पुंजउ (प्र०) ६४, ४  
 पूअरअ ३३, २  
 पूगीफाड २१, २

पूछ १३, १  
 पूछइ ३७, २. ४८, १. ८०, १  
 पूछणहार (प्र०) ६१, ४  
 पूछणहारु ६१, २  
 पूछतउ ६०, २  
 पूछतु (प्र०) ६०, ३  
 पूछिउ ४९, २  
 पूछिउं ६०, १  
 पूछिवउं ६२, १  
 पूछिवा ६१, २  
 पूछिवा वांछइ ८१, १  
 पूछिबुं ५३, २  
 पूछिवूं (प्र०) ६२, २  
 पूछी ६१, १  
 पूछीतउं ६०, २  
 पूछीतूं (प्र०) ६०, ४  
 पूछयुं (प्र०) ६०, २  
 पूजइ ४१, २. ४६, २  
 पूजिवा वांछइ ८१, २  
 पूजिबुं ५३, १  
 पूठउ ८, २  
 पूठि ६३, ४. ७३, २  
 पूठिं ६३, २  
 पूडा २०, १  
 पूर्णी ६७, १  
 पूत ७, २. २४, २  
 पूतली ११, १  
 पूत्रलउ १६, २  
 पूनिम ३१, २. ७६, १  
 पूरइ ३९, १. ४१, २  
 पूरउ ३१, २  
 पूरव दिश ६, १  
 पूरिसइ २१, २  
 पूर्वीयु ७८, १  
 पूलउ १६, २  
 पूंजइ ४०, २  
 पूंजउ ६४, २  
 पूंद ८, २  
 पेलावेलि २६, २  
 पोईस्त १९, १  
 पोडलिया १६, १

पोटली १६, १  
 पोठीउ ६७, २  
 पोठीयउ १३, २  
 पोत्रउ ७, २  
 पोथउ २२, २  
 पोथउं ७३, १  
 पोथां ७५, २  
 पोथी ३२, १  
 पोरवाड २१, २  
 पोरसी ३३, २  
 पोली २०, १. ३३, १  
 पोपणु ७२, १  
 पोष्यवर्गरहिं ७२, १  
 पोस ६, १  
 पोसइ ३९, २  
 पोसहथउ २६, १  
 पोसाल १८, २  
 प्रकासइ ४०, १. ४७, १  
 प्रजूंजिउ ५१, १  
 प्रतिं ७३, २  
 प्रतीठ २३, १  
 प्रधान रहि ७२, १  
 प्रयाणउ ९, २  
 प्रयुंजइ ४८, २  
 प्रयोग ७२, २  
 प्रवर्तइ ७५, १  
 प्रवाली ११, २  
 प्रशस्यु १९, १. १९, २  
 प्रसवइ ४९, १  
 प्रसविउ ५१, २  
 प्रसंसइ ३९, २  
 प्रसाद रा २४, २  
 प्राणीया ७२, २  
 प्राणीयां तु मति-  
 जीवी भला } ७२, २  
 प्रासाद योग्य  
 हितूई ईट } ७७, २  
 प्राहुणउ ३३, २  
 प्रियु ७९, २  
 प्रीणइ ४७, २  
 प्रेयनुं ७९, २

प्रेरइ ४२, २. ४६, २. ८०, २  
 प्रेरिउ ५१, २  
 प्रोथइ ४२, २  
 प्रीह ८, २

फ

फडफडइ ४३, २. ७०, २  
 फरलउ २१, २  
 फरसइ ३९, २  
 फरिस्यउ ५०, १  
 फलइ ३९, १  
 फलहउ १९, २  
 फली १८, १  
 फंदइ ४०, २  
 फागुण ६, १  
 फागुणमास } ७६, १  
 तणी पूनिम }  
 फाटउ १६, २  
 फाडइ ४०, १. ४९, १  
 फाडियउ १४, २  
 फाडिवा वांछइ ८१, २. ८२, १  
 फाडी ६६, २  
 फाड्यउ ५१, २  
 फाल २५, १  
 फालरउ २५, १  
 फिरइ ४६, २  
 फिरक ६७, २  
 फिरिवा वांछइ ८१, १  
 फीटइ ४०, २. ४३, १  
 फीण १२, १  
 फुई ३२, २. ६९, १  
 फुईहाई २६, १. ६९, १  
 फूटइ ३८, १. ४८, २. ७०, २  
 फूटउ ५१, १  
 फूटरउ २६, १  
 फूटी २३, १  
 फूरइ ३९, १  
 फूलपत्री ७२, २  
 फुलिग ३५, १  
 फूकइ ४४, २  
 फेडइ ४२, २  
 फोडी २०, २

फोडइ ३८, १	बापडउ ५६, २. ६८, १	बिहुं ७४, १
फोडउ ७, २	बापसरीषउ ६६, २	बिहुं गमे ७३, २
फोफल ३४, १	बाफ ३३, १	बिहुं परि २७, २. ५६, २
ब	बावीहउ १४, १	बीकानयर ११, १
बइठउ १९, २. ४९, २	बार ११, १. ५७, २	बीज ३१, २
बइरी ९, २	बारइ २८, १	बीजउ ५६, २
बइसइ ४४, १. ४७, २	बारमउ ३०, २	बीजउं ३०, २
बइसई ७५, २	वारघट ३२, १	बीजली १२, १
बकोर १८, १	वारसि ३१, २	बीजाबोल १७, २
बगलउ १४, १	बालइ ४२, १	बीजी भूमि २५, १
बगाई ६७, १	बालउ १२, २	बीजोरउ १२, २
बजरइ ४०, १	बालक ३९, १	बीयउ १७, १
बडबडइ ४०, २	बावन २९, १	बील १२, १
बन्नीस २८, २	बावनउ चंदन २५, २	बीह १६, २
बयालीस २९, १	बावीस २८, २	बीहइ ४१, २. ४६, २
बलइ ४१, २	बासठि २९, १	बीहावइ ४१, २. ४९, १
बलद १३, २. ७८, २	बाहिरल्युं ५५, १	बीहाविउ ५०, २
बलवलीउ ६९, १	बाहिरहुंतउ ५६, १	बीहिल ५०, २
बलहि ६८, २	बाहिरि २७, २	बीहिवा वांछइ ८१, २
बलिउ ५२, १	बांधइ ३८, २. ४८, २	बुद्धि ७४, २
बलिवा वांछइ ८१, १	बांधिउ ५०, २	बुहारी ११, १
बसवसइ ४३, १	बांधीवउ ७३, १	बूझइ ३८, २. ४८, २
बहिणि ८, १	बांभण ३४, २. ७४, २. ७५, २	बूझिउं ५३, २
बहिन ६९, १	बांभणनउ अभावु ७५, १	बूडइ ३८, १
बहिरउ २६, १	बांभणउं घरु ७२, २	बूडउ ७, १
बहुरखउ ३२, १	बांभणना ७२, २	बूव १६, १
बहुलु ७९, २	बांभण पाछलि शिष्य ७५, १	बेडी १०, १
बहेडउ १२, २. १७, २. ३२, २	बांभणायतुं ७७, २	बेल १७, २
बंग ३४, २	बांभणी १३, १	बेहडउं ६६, १
बंधुनउ समूहु ७६, २	बांभणु ७४, २	बेहडूं (प्र०) ६६, १
बाउची १९, १	बि २७, २	बोर ३४, १
बाउल २२, २	बिउणउ ३२, २	बोरि १२, १
बाउलउ २६, २	बिडोत्तर सउ ३०, १	बोलइ १९, १. ४१, १. ७३, २
बाउलु ६९, १	बिमणइ ७७, २	बोलणहार (प्र०) ६१, ४
बाकरउ १३, २	बिमणउं ६७, २	बोलणहारु ६१, २
बाण १९, २	विमातकाना कौ ३१, २	बोलतउ ६०, २
बाणरहिं हितूउ शरकड ७७, १	विमात्र कै ३१, १	बोलतु (प्र०) ६०, २
बाणि ७७, २	विलाडउ ३५, १	बोलिवउं ६२, १
बाणू ३०, १	वि वार (प्र०) ६३, १	बोलिवा ६१, २
बाप ८, १. २६, २. ६६, २	विहत्तरि २९, २	बोलिवा वांछइ ८१, १
बापइ १८, २	बिहु परि (प्र०) ६३, २	बोलिबुं ५३, २

बोलिवूं (प्र०) ६२, १  
 बोली ६१, १  
 बोलीतउं ६०, २  
 बोलीतूं (प्र०) ६०, ४  
 बोल्यउं ६०, १  
 बोल्या ७२, २  
 बोल्युं (प्र०) ६०, १

व्यासणउ ३१, १  
 व्यासी २९, २  
 ब्राह्मण ७२, २  
 ब्राह्मण प्रति ७३, २  
 ब्राह्मण यमिसिं यमिसिं ७८, २  
 ब्राह्मणसिउं जाइ ७५, २  
 ब्राह्मणु शिष्यपाहिं }  
 पोथउं सिखावइ } ७३, १

भ

भइरव ६, २. ३३, २  
 भइसि ७२, १  
 भउजाई ३२, २  
 भक्ति ७३, २  
 भखइ ३९, २  
 भजइ ४९, १  
 भडह (भ) डइ ४४, २  
 भडिथ १७, १  
 भणइ ४२, १. ४८, १. ८०, १  
 भणावइ ४८, १  
 भणाव्यउ ५०, २  
 भणिवा वांछइ ८१, १  
 भणिवुं ५३, १  
 भणी १५, १. ७३, १  
 भण्यउ ५०, २  
 भत्रीजउ ६७, २  
 भथायितु ६७, १  
 भमइ ३९, १  
 भमती ३३, १  
 भमरउ १३, १  
 भमरडउ १६, २  
 भमलि २३, १  
 भमाडइ ४०, १  
 भमिउ ५१, १  
 भमतउ ७३, १

भरइ ३७, १. ४९, १  
 भरणी २५, २  
 भरणु पोषणु ७२, १  
 भरिउ ५०, १. ७२, १  
 भरिउं ५६, २. ७२, १  
 भरिवुं ५३, २  
 भरुअच्छ ११, १  
 भस्यउ १४, २  
 भलई ७१, १  
 भला ७२, २  
 भलिसुं ४१, १  
 भली २४, १  
 भषइ ३९, २  
 भष्य (ख्य) उ ५०, १

भसम १५, २  
 भससूत २५, १  
 भंजवाड २६, २  
 भंडार २०, १  
 भंडारु ६८, २  
 भाई ७, २  
 भाउ बीज १८, २  
 भागउ ४९, २  
 भाजइ ३७, २  
 भाट २१, २  
 भाठ ११, १  
 भाडउ २४, १  
 भाणउ २०, २  
 भाणा योग्य हितूउं }  
 कांसउं } ७७, २

भाणेजउ ७, २  
 भात ७, १  
 भात्रीजउ ७, २  
 भाथडी ३३, १  
 भाद्रवउ ६, १  
 भारउट ३२, १  
 भारी ५६, २  
 भारु ७१, २  
 भालि २३, १  
 भाषइ ३९, २  
 भांखडी १७, २  
 भांगरउ १९, २

भांजइ ३७, २. ४८, १  
 भांजिवुं ५३, १  
 भांड २२, १  
 भांडइ ३७, २  
 भिउडी ८, १  
 भिंगार १५, १

भीखइ ३९, २  
 भीखारी ३३, २  
 भीतरउ ३२, १  
 भीति ३२, १  
 भील १०, २  
 भुइफोड ३५, २  
 भुजाई ६९, १  
 भुलइ ४०, २  
 भुवनि ७४, २  
 भुंजइ ४६, २  
 भुंडउ ७४, १  
 भूइ १०, २  
 भूख ७, १  
 भूखियउ ७, १  
 भूतंतउ प्राणीया भला ७२, २  
 भूहिरउ ३२, २  
 भेटिउ ५१, २  
 भेदइ ४३, १  
 भेदिउ ५१, २  
 भेदिव्युं ५३, १  
 भेलइ ४६, २  
 भोगल २७, १  
 भोलउ ६९, २

म

मइ घरि रहिवउं ७२, १  
 मइलउ १५, २  
 मइं ५५, १. ७८, २  
 मइं रहीइ ७१, १  
 मई १०, १. २३, १  
 मउठ १२, २  
 मउड ९, १  
 मउडइं ५७, १  
 मउणि ११, २  
 मउर १५, १  
 मउरा १८, २



मऊ (प्र०) ६६, ३	म लीधु ३६. ७८, १	माणी २३, १
मकनउ २५, १	म लेइ ३६.	मातउ ३३, २
म करि ३६	म लेसि ३६	मात्रा विना १८, १
म करिसि ३६	मचइ ४८, २	माथइ २५, १
म कीधु ३६. ७८, १	मविउ ५१, १	माथइ भमरउ ८, १
मकोडउ ३१, १	मसउ १९, २. ३४, २	मादल २२, २
मगसिर नषत्र ५, २	मसवाडा ७३, १	मान ७५, १
मजीठ २३, १	मसाण ११, १	मानइ ३८, २. ४२, २. ४८, २.
मजीठ राती साडी ७६, १	मसाहणी ६९, १	मा नइं ३९, १
मडउ ८, १	मसि ७, २	मामउ २६, २
मडि ६७, १	मसि [भा?] जणउ ३४, १	मामी २६, २
मढ ११, १	मस्तक मीढइ के ३१, २	मायइ ४२, १
मढी १६, २	महतउ ९, २	मायउ २२, १
मणमणउ २२, १	महमहइ मालती ४०, १	मारइ ४४, १. ४८, १. ७२, २
मणसिल १५, १	महिषु बाणि आहणइ ७७, २	मारणहार (प्र०) ६१, ४
मणिआर १९, २	महुआल १७, १	मारणहारु ६१, २
मणियउ १८, २	महुरउ १४, २	मारतउ ६०, २
मतवारणउ ११, १	महुलेठी १९, २	मारतु (प्र०) ६०, ३
मतिजीवी ७२, २	महूअउ १२, १	मारिउ ५१, १
मथइ ३८, १	मंगलेवउ १६, १	मारिउं ६०, १
मद १०, १	मंजार ३५, १	मारिवउं ६२, १
म दीधु ३६. ७८, १	मंजूस ११, १	मारिवा ६१, २
म देइ ३६	मंडइ ४७, २	मारिवा चांछइ ८१, १
म देसि ३६	मंत्रइ ३९, १	मारिवूं (प्र०) ६२, १
मनावइ ४२, २. ४८, २	मंत्रासरु ६८, २	मारी ६१, १
मनाविवुं ५३, २. ५४, १	मंथाणउ ११, २	„ (प्र०) „
मनाव्यउ ५०, १	माइ ८, १	मारीतउं ६०, २
मनुष्यनउ समूहु ७६, १	माईय [°हायी] ६९, १	मारीतूं (प्र०) ६०, ४
मनुष्यमाहिब्राह्मण श्रेष्ठ ७२, २	माउलउ ८, १. ६९, १	मारू ३५, १
मयगल ३४, १	मा [उ?] लाही ६९, १	मालती ४०, १
मयण १३, १	माकण १३, १	मालवउ ३४, २
मयणहल २५, २	माखी १३, १	माली १०, १
मरइ ३७, १. ४७, १. ७०, २.	मागइ ३७, २. ४४, २	माषीनउ अभावु ७५, १
मरमर सबद २२, १	मागिउ ५२, १	मासउ १९, १
मरहठ ३४, २	माचइ ४२, १	मासतणी ७६, १
मरावइ ४८, १	माछलउ १४, १	मासमउ दिहाडउ ३१, १
मरिवा चांछइ ८१, २. ८२, १	माछा ७५, २	मासिहाई २६, २
मरीइ ७१, १	माजणउ २२, २	मासी ३२, २. ६९, १
मरूअउ १७, २	माझ १४, २	मास्याही ६९, १
मर्दइ ३८, २. ७०, १	माटी ३४, १	माह ६, १
म लइ ४०, २	माणसामउ ५६, १	माहरउं ६३, २

माहरउं ३३, १  
 माहं २७, २. ५५, १. ६३, ३  
 माहि ५६, २  
 माहिल्युं ५५, १  
 मांकुण ६७, १  
 मांखण ७, १  
 मांचउ ९, २  
 मांचइ री २४, १  
 मांची ३३, २  
 मांजइ ३७, २. ७०, १  
 मांजरि १२, १  
 मांड ७, १  
 मांडइ ३८, १  
 मांडणउ ९, १  
 मांडहिय ६८, १  
 मांडा ३३, १  
 मांडी १५, २  
 मांदउ २४, २  
 मांसु ७७, १  
 मिठाई १९, १  
 मित्राई ९, २  
 मिलइ ७०, १  
 मिलायइ ४०, १  
 मिष्टान्न ७८, २  
 मीचइ ४२, २  
 मीठउ १४, २  
 मीठी १८, २  
 मीठी ( प्र० ) ६६, ३  
 मीजी ९, १  
 मीढइ ३१, २  
 मीढउ १३, २  
 मीढी ६६, २  
 मुखामुखि २६, २  
 मुखास १७, १  
 मुग ७२, २. ७८, १  
 मुगउ ५६, २  
 मुजल १७, १  
 मुडइं ६८, १  
 मु ( माउ ? ) लागि ६९, १  
 मुसइ ३९, २

मुस्यउ ५०, २  
 मुहळण १७, २  
 मुहडउ ८, १  
 मुहपती १८, २  
 मुहषायी ६६, २  
 मुहिया २७, १  
 मुहिआं ( प्र० ) ६२, ४  
 मुहीयां ६२, २  
 मुहुखाई ( प्र० ) ६६, ४  
 मुहूरत ६, १  
 मुंड ८, १  
 मुंडउ २१, २  
 मुंदडी ३२, १  
 मूउ ५१, १  
 मूकइ १९, १. ८०, २  
 [ मूकइ ] ४८, १  
 मूकिवुं ५३, १  
 मूझइ ४०, १  
 मूठउ १८, २  
 मूठि ८, २  
 मूत्रइ ३७, १  
 मूल १०, १  
 मूलउ १३, १  
 मूली १६, २  
 मूस १९, २  
 मूसउ १३, २  
 मूसल ११, १  
 मूंकिउं ५०, २  
 मूंग १२, २  
 मूछ ८, १  
 मूडिउ ५२, १  
 मूंदडी २०, २  
 मूं पाषइ ७४, १  
 मूंसरिषउ २७, २. ६४, १  
 मूंइइ ५५, १  
 मृगतणउं मांसु ७७, १  
 मृगु विंधइ ७७, २  
 मेघु ७८, १  
 मेठी १०, १  
 मेथी रा लाइ २६, १  
 मेराईउ २६, १

मेरायीयुं ६९, १  
 मेलइ ७२, २  
 मेलउ १४, २  
 मेलवइ ४०, १  
 मेलिउ ५१, २  
 मेलिहवा वांछइ ८१, १  
 मेह ६, १  
 मेहरू २७, १  
 मोकलउ ३३, २  
 मोकलत ७८, २  
 मोकलावइ ४४, १  
 मोगर ९, २  
 मोगरउ २३, २  
 मोटउ ६८, १. ७९, १  
 मोडइ ३८, १  
 मोती ११, २  
 मोथ १३, १  
 मोर १४, १  
 मोरसिखा १९, २  
 मोलइ ४२, १  
 मोलीउं ६७, २  
 मोसंधीयुं ६७, २  
 मौ ६६, २

य

यमइ ७५, २  
 यमणुं ६४, १  
 यमता ७८, २  
 यमिउं ६०, १  
 यमिवउं ६२, १  
 यमिवा ६१, २. ७५, २  
 यमिसिं ७८, २  
 यमी ६१, १  
 यमीतउं ६०, २  
 यसउ ६४, १  
 यहां ६३, १  
 यहांनउ ७८, १  
 याचइ ४४, २  
 याण ( प्र० ) ६३, ३  
 यावजीवु ७२, १  
 यिम ६२, २

ये ये लहुडा ते ते } ७५, २	राइणि १९, १	रांधइ ३८, २
यमिवा बससइं } ७५, १	राइतउ ३१, १	रांधउ २४, २
ये ये वडा ते ते } ७५, १	राई ७, १. २४, १	रांधणउ २०, २
मान लहइं } ७५, १	राउ ७२, २	रांधिवउं ५२, २
यो ५५, २	राउत ६८, १	रांध्यउ ७, १
योग्य ७७, १. ७७, २	राउताई ६८, १	रांपी २२, २
योग्यु ७७, २	राउ बांभणना } ७२, २	रिजइ ४०, २
र	वयरि मारउ } ७२, २	रिणउ १५, १
रखवालउ २०, २	राउलउ २३, २	रीछ १३, २
रचइ ३७, १	राउ लोकापाहिं } ७३, १	रीसालू ७, १
रतांजणी १७, २	करसणु करावइ } ७३, १	रुचइ ४९, १
रती १७, १	राक्षसु ७८, १	रुलियउ २५, २
रत्न ७५, २	राख १०, १	रुलीयामणउं ६८, १
रथु ७८, १	राखइ ३९, २	रुलीयायित कीधा } ७४, २
रमइ ३९, १. ४६, २. ८०, २	राखडी १८, २	जीणं बांभण }
रमिउ ४९, २	राचइ ४४, २	हंधिउ ५१, २
रमिवा वांछइ ८१, १	राजगुल ६७, २	रूखउ ३५, १
रमिवुं ५४, २	राजपुत्र ७५, २	रूठउ १८, २
रयताणउ ३४, १	राजभुवनि ७४, २	रूतउ २१, २
रलियामणुं ५७, १	राजवी २१, १	रूपउ ११, २
रलीयामणउ ३२, १	राजा गामु बांभ- } ७७, २	रूपानां पात्र ७७, १
रवऊ २६, १	णायतुं करइ }	रूपु ७८, १
रसोई १९, २	राजान २२, १	रूसइ ३९, २
रसोयि ६८, २	राजानी परि ७७, २	रूं ३२, २
रहइ ४४, २. ८०, १	राजा पाछलि सेना ७५, १	रूंख २१, २
रहतउ ६०, २	राजारउ २३, १	रूंधइ ३८, २. ४९, १
रहाविउ ४९, २	राठऊड २१, १	रोइ ४९, १
रहिउ ४९, २	राडि ९, २	रोइउ ५१, १
रहिउं ५२, २. ६०, १	रातउ २४, २. ७६, १	रोझ १७, १
रहितउं ६०, २	राति २०, २	रोयइ ३८, २
रहितु ( प्र० ) ६०, ३	रातिं ७३, १	रोयिवा वांछइ ८२, १
रहिवउं ६२, १. ७२, १	राती ७६, १	रोहीडउ २२, १
रहिवा थाकिवा, } ८१, १	रान ३३, १	रोहीस १३, १
थाइवा[वांछउ] }	राब १६, १	ल
रहिवूं ( प्र० ) ६२, १	रायतणउ समूहु ७६, १	लउडउ २२, १
रही ६१, १	रावटउ ११, २	लउंकडी १३, २
रहीइ ७१, १	राष ( ख ) इ ४८, २	लउंग ९, १
रहीतूं ( प्र० ) ६०, ४	राषि ( खि ) उ ५०, २	लखइ ३९, २
रहीवा ६१, २	राषि ( खि ) वुं ५४, १	लखमी ६, २
रंग्यउ ५०, २	राह ५, २	लगइ ५६, १. ६२, २
रंजइ ४३, २	रांक २४, १	लगाडइ ७८, १

लगाडिउ ६८, १  
 लज्जालु ७९, २  
 लट्ट १७, १  
 लयेत ७८, २  
 लहइ ३९, १. ७३, २  
 लहई ७५, १  
 लहिवा वांछइ ८१, २  
 लहिवुं ५४, १  
 लहुडइ कु ३१, १  
 लहुडउ ७९, १. ७९, २  
 लहुडा ७५, २. ७८, २  
 लहुडुं ५६, २  
 लाइ ८०, २  
 लाई ५७, १  
 लाकडउं ७७, १  
 लाख ९, २. ३०, २  
 लाखमउ ३१, १  
 लागउ ५०, १  
 लागु ६८, १  
 लाज ३३, २  
 लाजइ ३८, १  
 लाजिवा वांछइ ८१, २  
 लाजीइ ७१, १  
 लाज्यउ ४९, २  
 लाठि ३४, १  
 लाडइ ४२, २  
 लाडू २०, १. २६, १. ७४, २  
 लात १७, १  
 लाघउ १४, २. ५०, १  
 लापसी १५, २  
 लाभइ ४७, १  
 लाल ९, १  
 लालइ ४१, १  
 लालि १६, १  
 लाष रातउ कांबलउ ७६, १  
 लाषिवा वांछइ ८१, १  
 लाहउर ११, १  
 लाहणउ २५, २  
 लांघइ ३७, २  
 लांच ९, २. ७२, १  
 लांप ६९, २

लांबउ ६४, १  
 लि ७०, १  
 लिइ ७१, २. ८०, १  
 लिखइ ३७, २. ४७, २. ८०, २  
 लिखावइ ७३, १  
 लिखिवा वांछइ ८१, १  
 लिखिवुं ५३, २  
 लिधुं ६०, १  
 लिपसणउं ६६, २  
 लिपसणूं ( प्र० ) ६६, ४  
 लियइ ३५. ३७, १  
 लिवरावइ ४७, १  
 लिषा ( खा ) वइ ४७, २  
 लिषि ( खि ) उ ५२, १  
 लीख १३, १  
 लीजइ ३५  
 लीजउ ३५  
 लीजतउ ३६  
 लीजतउं ६०, २  
 लीजतुं ६२, १  
 लीजतूं ( प्र० ) ६०, ३  
 लीजिसिइ ३६  
 लीघउ ३६. ७३, १. ३६, पं० २४  
 लीघउं ६२, १  
 लीधी ५१, १  
 लीधु ७८, १  
 लीधुं ५०, १  
 लीह ३२, २  
 लींडी १७, १  
 लींपइ ३८, २  
 लुकइ ४०, १  
 लुठइ ३८, १  
 लुणइ ४२, २. ४८, २  
 लुणाइ ४४, २  
 लुणावइ ४८, २  
 लुणित ५०, २  
 लुंकाडि ६७, १  
 लुंचइ ३७, २  
 लुंठिउ ५०, २  
 लूटइ ३८, १  
 लूण कयरा ३१, १

लूणिवुं ५४, २  
 लेइ ३५. ४७, १  
 लेइउ ३६  
 लेई ६१, १. ६२, १  
 लेखउ २५, २  
 लेखणि ३४, १  
 लेजे ३५  
 लेटइ ४४, १  
 लेणहार ३६, पं० २२. ६१, ३  
 लेणहारु ६१, २. ६२, २  
 लेणाहरु ३६  
 लेत ७८, २  
 लेतउ ३६  
 लेतु ६०, १  
 लेतुं ६२, १  
 लेव २१, २  
 लेवउं ३६. ६१, २  
 लेवा ३६. ६१, १. ६२, १  
 लेवा वांछइ ८१, १. ८१, २  
 लेवुं ६२, २  
 लेवूं ५२, २. ६१, ४  
 लेसाल १८, २  
 लेसिह ३६  
 लेसूडउ १७, २  
 लेहउ ७, २  
 लोकपाहिं ७३, १  
 लोक विक्रमादित्यु } ७२, २  
 राउ स्मरइ }  
 लोकांरी २४, २  
 लोटइ ४०, २. ४४, १  
 लोटउ २०, १  
 लोपइ ३८, २  
 लोवडी १९, १  
 लोहडउं ७७, २  
 लोहमूं ५७, १  
 लोहार १०, २  
 लोही ८, २  
 ल्हसण १९, २  
 व  
 वइरी ३६  
 वइसाख ६, १

वइंगणु ३३, २	वरता १०, २	वही १७, २
वखाण ३४, १	वर पाछलि गीत } ७५, १	वहीयि ७८, १
वखाणइ ४३, २	गाती स्त्री }	वहू ७, २
वखाणिवुं ५३, १	वरस ६, १	वहूवत् ७९, १
वघारइ ४३, २	वरसइ ३९, २. ४८, २. ८०, १	वंचइ ३७, २. ४७, १
वच्छनाग १३, १	वरसवियारणि ( प्र० ) ६६, ४	वंचिवुं ५४, १
वल्लीयायित ( प्र० ) ६६, ३	वरसात २०, २	वंच्यउ ५०, १
वज २१, १	वरसालउ ६, १	वंछिउं ५०, २
वटवालनुं ६६, १	वरसोला १८, २	वंदिउ ५१, २
वड १२, १. ७३, २	वरहलि ( प्र० ) ६६, ४	वाअइ ४२, २
वडउ ५६, २. ७९, १	वरसीयि ७०, २	वाइ ४८, १
वडपण ७, १	वरांसउ ६८, २	वाइलउ १८, २
वडा २०, १. ७५, १	वरांसिउ ६८, २	वाइवुं ५३, २
वडां ७६, १	वरांसिवयउ २०, १	वाउ १२, १
वडी १७, १. २०, १. २४, १. ३४, २	वरांसीयइ ४३, २	वाउल २३, १
वडी वार लगाडइ ७८, १	वरुआयती कन्या } ७७, २	वाउलि २१, १
वडु ७५, २. ८०, १	संपजइ }	वाग १३, २
वणइ ४२, २	वर्णवइ ३७, १	वागुर १०, २
वणवउ २६, १	वर्तइ ४९, १	वागुरी १०, २
व ( च ? ) णहडीउ ६७, १	वर्तिवउ ५१, २	वागुलि १४, १
वणारिस ३४, १	वर्षशत ३६	वाघ १३, २. १५, २
वणिज १०, १	वर्षाकालनउ मेघु ७८, १	वाघ तणां पद ७७, १
वणी २४, २	वलइ ४२, २	वाचइ ३७, २
वणीमग ७, १	वलउ २२, १	वाचणाहरु ७२, १
वत्सनु समूहु ७६, १	वलतउ २५, २	वाचिवुं ५३, २
वत्सरहिं हितूउ ७७, २	वला २५, १	वाछडउ १८, २
वथूअउ १२, २	वलि २३, २	वाछडा २४, २
वधाअइ ४४, २	वली ६३, १	वाछरू २४, २
वधामणउ २१, २	वली वली ६८, १. ८०, १	वाजइ ४४, २. ४८, १
वधारइ ४९, २	वषा ( खा ) णइ ४८, १. ७०, १	वाजउ ६, २. २५, १
वधावइ ४४, २	वषा ( खा ) णिउ ५१, १	वाजित्र ६, २
वधूवर २४, १	वसइ ७३, २	वाटइ ४४, १
वमइ ३९, १	वसीइ ७५, २	वाटभोजन २४, १
वमिउ ५१, १	वस्तु री २४, २	वाटली २३, २
वयगरणु ६८, २	वस्त्र ७७, १. ७८, २	वाटवालणुं ( प्र० ) ६६, १
वयरि ७२, २	वस्त्रगांठि २४, २	वाटि २३, २
वयरी ७३, १	वहइ ४०, १. ४८, १. ७३, १	वाडि २४, १. ७३, २
वयरी मरीइ ७१, १	वहलि ६६, २	वाडी १२, १. २१, २. ७३, २
वरइ ३७, १. ४७, १	वहिउ ५१, २	वाणही २०, १
वरगडु ६८, २	वहिलउ १५, २. ७९, २	वाणारसी १०, २
वरतर काटिवउ १५, २	वहिवुं ५२, २	

वाणि २४, २	वांटइ ३७, १	वियारियउ २६, २
वात ७३, २. ७८, २	वांदइ ३८, २. ४६, २	विरचइ ३७, १
वातचीत ६, २	वांदणउ ३३, २	विरतउ २४, २
वादलउ २६, १	वांदिवुं ५३, १	विराध्यउ ५१, २
वाघइ ४२, १. ४३, २. ४९, २.	वांस १२, २	विरासिउ ५२, १
७०, २. ७१, १	वांसोली १०, २	विरूयउ १८, २
वाधीउ ५१, २	विभारइ ४३, १	विरोलइ ४०, २
वान १५, १	विकस्यउ १२, १	विलखउ ७, २. ५७, १. ६४, २
वानगी २१, १	विकुर्वइ ४१, १	विलचइ ४९, १
वानी २१, १	विक्रमादित्यु ७२, २	विलंबइ ३९, १
वापरइ ४१, २ ४७, २.	विगूयइ ४२, १	विलोइउ ५१, १
वापरिउ ४९, २	विगोवइ ४२, १	विषे (खे) रिउ ५२, १
वाम ८, २	विघन १५, १	विस् १३, १
वायइ ३७, १	विचारइ ३९, १. ४७, १	विसनररहिं हितूउं } ७७, २
वायिवा वांछइ ८१, २	विचारिउ ५०, १	काष्ठ
वायु ७८, १	विचारिवुं ५४, १	विसनरु ७२, १
वार ७८, १	विचालउ १४, २	विसनरु काष्ठि न ध्रायु ७२, २
वारइ ४३, २. ४६, २. ४८, १	विचि ७४, १. ७५, २	विसहर १४, १
७०, १	विचालुं ५६, २	विसंडुल ३४, १
वारिवुं ५३, १	विज्जाहरी ६६, २	विसाहइ ४७, १
वाल १२, २	विट्टालइ ४१, १	विसाहिउ ५०, १
वालरकाकडी २५, २	विडलूण १०, २	विसाहिवुं ५४, १
वालहली ३३, १	विढइ ४२, १	विसिमिसि ५६, १
वाली ९, १	विढवइ ४०, २	विस्वरइ ४०, २
वावइ ४३, २. ७०, १	विणइ ८०, २	विसोआ १६, २
वावइ ४७, २	विणसइ ३९, २	विहडइ ४२, २
वावि ६७, १	विणा ५५, २	विहथि ८, २
वाव्यां ७३, २	वीणिवा वांछइ ८२, २	विहरइ ४८, २
वासइ ४२, २ ७३, २.	विदाणउ ६९, २	विहरउ ६८, १
वासउ २०, २	विदारिउ ५२, १	विहसइ ४६, २
[ वासिउ ] ५०, २	विदिस ६, १	विहसिउ ५१, १
वाहइ ४८, १	विदेशि ७३, १	विहाइ ४४, १
वाहर २५, २	विद्या ७४, २	विहाणउ २६, १
वाहरू १६, १. २५, २.	विन्यानी ७, १	विहूणउ १५, १
वांकउ १५, १. ६४, १	विपराविबुं ५४, २	विंधइ ७७, २
वांकु ( प्र० ) ६४, १	विप्र ७४, २	विहचइ ४३, १
वांछइ ३७, २. ४६, २. ८१, १.	विमासइ ४१, २. ४७, १	वीकइ ४३, १. ७०, १
८१, २. ८२, १. ८२, २	विमासउ ५०, १	वीखरइ ४१, २
वांछिवुं ५४, २	विमासिबउ ३४, २	वीच १५, २
वांस गाइ १३, २	विमासिवुं ५३, २	वीछू १३, १
उ० र० १५		

वीक्षणउ ९, २  
 वीझाइ १८, २  
 वीझायइ ४२, १  
 वीझावइ ४२, १  
 वीठ ९, १  
 वीणि ६८, १  
 वीधइ ३८, २  
 वीध्यउ १४, २  
 वीनति १५, २  
 वीनवइ ४१, २. ४८, १.  
 वीनचिबुं ५३, २  
 वीनव्यउ ५०, २  
 वीवाहइ ४१, २  
 वीवाहपगरण २०, १  
 वीस २८, २  
 वीसमइ ४३, १  
 वीसमउ ३०, २. ५७, १  
 वीसमी ३१, १  
 वीसरइ ४०, १  
 वीसरिउं ५१, २  
 वीससइ ४४, १. ४६, २  
 वीट १५, १. २०, २  
 वीटइ ४३, १  
 वीटणउ २१, १  
 वीट्यउ १४, २  
 वुहरउ ३२, २  
 वूठउ ५१, १  
 वूसट ( प्र० ) ६६, २  
 वृक्ष कन्हलि घर ७५, १  
 वृक्ष सामहुं आभउं ७३, २  
 वृक्षु ७४, २. ७५, १  
 वृद्धु ७९, २  
 वृषभनउ समूहु ७६, १  
 वृद्धु ७६, १  
 वेउल ३३, १  
 वेगउ १६, १  
 वेगड ३२, २  
 वेगडि ६६, २  
 वेगडी ( प्र० ) ६६, ३  
 वेगलउ ७९, २

वेचइ ४७, १  
 वेचावइ ४७, १  
 वेचिबुं ५४, १  
 वेच्यउ ५०, १  
 वेझ ९, २  
 वेठि २३, २  
 वेठिमी २२, २  
 वेद ७२, १  
 वेयइ ३८, २  
 वेरा १२, १  
 वेलि १२, १  
 वेलू ३५, १  
 वेस ९, १  
 वेसर ( प्र० ) ६६, १  
 वेसरु ६६, २  
 वेसवार ७, १  
 वेसावाडउ २०, २  
 वेहणउ ३४, १  
 वैद्य ७४, २  
 वैष्णवु रातिं च्यारइ } ७३, १  
 पुहुर जागइ }  
 व्यहु परि ६३, १  
 व्याऊ ७, २  
 व्याकरणु ७७, १  
 व्यारीउ ७३, १  
 व्यासनउं ग्रामु ७२, २  
 व्रणरउ २४, १  
 श  
 शपइ ७०, २  
 शब्दु ७८, १  
 शमिउ ५१, २  
 शरकड ७७, १  
 शरत्कालनउ तिडकउ ७८, १  
 शलाट्टु ६७, १  
 शापइ ४८, २  
 शाख ७२, १  
 शिष्य ७५, १  
 शिष्यपार्हि ७३, १  
 शोचइ ४९, १

शोभइ ४९, १  
 शोभिउ ५१, २  
 श्राद्धतणइ ७२, २  
 श्रीगरणु ६८, २  
 श्रीवच्छ ६, २  
 श्रीवासुदेव दैत्य मारइ ७२, २  
 श्रेष्ठ ७२, २  
 श्लाघइ ४७, १  
 [ श्लाघिउ ] ५२, १  
 श्लाघिबुं ५३, १  
 श्लोक ७२, २

. ष

ष ( ख ) ईइ ४९, १  
 ष ( ख ) मइ ४६, १  
 षा ( खा ) इ ७७, १  
 षा ( खा ) णीकणउं ६७, २  
 षा ( खा ) धुं ५०, १  
 षा ( खा ) वउं १२, २  
 षा ( खा ) सइ ४६, १  
 षां ( खां ) ड योग्य } ७७, २  
 हितूई सेलडी }  
 षां ( खां ) ड्या ७८, १  
 षि ( खि ) सइ ८०, २  
 षि ( खि ) सरहिडी ( प्र० ) ६६, १  
 षी ( खी ) लउ ७३, १  
 षी ( खी ) ला योग्य } ७७, १  
 हितूउं लाकडउं }  
 षीं ( खीं ) ष नही ( प्र० ) ६४, ३  
 षूं ( खूं ) दइ ४६, १  
 षे ( खे ) डइ ४७, २

स

सइतालीस २९, १  
 सइत्रीस २८, २  
 सउ ३०, १. ७१, २  
 सउगडउ ११, १  
 सउडि ३२, २. ६६, २  
 सउण १४, १  
 सउणी १६, २  
 सउमउ ३१, १  
 सउ वार ( प्र० ) ६३, १

- सकइ ४३, २  
सकुं ६२, २  
सगउ ८, १  
सगलइ २७, १  
सघलइ ( प्र० ) ६३, २  
सघले ६३, १  
सज्झाय ६, २  
सज्जउ १५, २  
स ( सु ) णउं ६८, १  
सतर २८, १. २७, २  
सतरमउ ३०, २  
सतसठि २९, २  
सतहत्तरि २९, २  
सताणू ३०, १  
सत्तरि २९, २  
सत्तावन २९, १  
सत्तावीस २८, २  
सत्यासी २९, २  
सदा ५६, १  
सदाचार बांभणु } ७४, २  
जीणइं गामि }
- सदहइ ४०, १  
सदहियउ १५, १  
सनीचर ५, २  
सन्यासी ३४, २  
सपइ ४३, २  
सभा ७६, १  
समघात १५, २  
समरइ ४१, २  
समवायु ७६, १  
समा ७७, १  
समाणइ ४०, २  
समारइ ४०, १  
समारिवउ १८, १  
समि कियउ २५, २  
समी ७७, १  
समीपि ७५, १  
समुद्रमाहि रत्न० ७५, २  
समुं ७७, १  
समूह ७६, १. ७७, १
- समेटइ ४३, १  
सयणाचार ८, १  
सयर ८, १  
सयरइ २३, २  
सरइ ४४, २  
सरजइ ३८, १  
सरतकाल ६, १  
सरलउ ६७, २  
सरवइ ४३, १  
सरसउ पाटण ११, १  
सरसती ६, २  
सरसवेल २०, २  
सरस्वती ७५, १  
सराध ९, २  
सरिसव १२, २  
सरीखउ २६, २  
सरीषउ ६४, १. ६६, २.  
सरीषउं गोत्र जेहनउं ७५, १  
सरीषउं नामु जेहनउं ७४, १  
सरीषु ( प्र० ) ६४, १  
सरोवर ७२, १  
सर्जइ ४७, १  
सर्व परि ५६, २  
सर्वोसरु ६८, १  
सलाह १५, २  
सवइवार २७, १  
सवईवार ६३, १  
सवाडूउ ६८, २  
सवार ६७, १  
सविहुं गमा ७३, २  
ससइ ४४, १. ४६, २.  
ससूग २०, २  
सहइ ४३, २. ७०, २.  
सहस ३०, २  
सहसमउ ३१, १  
सहायीयांनउ समूह ७६, २  
सहिउ ५१, २  
संकइ ३७, २  
संकुचइ ३७, २  
संक्षेपइ ४७, २
- संखाहोली ३५, २  
संचकार १०, १  
संचकारु ७८, १  
संतोषिउ ५१, १  
संथारउ १८, २  
संद १७, २  
संदिसइ ४८, १  
संदिसवुं ५३, २  
संदेसउ १८, २  
संधियउ १९, २  
संधूखइ ४२, १  
संधूखण २३, २  
संधूख्यउ १६, १  
संपजइ ३८, २. ७७, २  
संपन्नउ ५०, १  
संवाहइ ४१, १  
संभलावइ ४७, १  
संभारतउ ७२, २  
संभालइ ४१, १  
संवरइ ४०, १  
साइणि ३५, २  
साकर १८, २  
साकर सिउं दूध पीइं ७५, २  
साकुली ३३, १  
साखी १०, १  
साग २४, १  
सागडी ३२, २  
साच ६, २  
साचउर ११, १  
साजउ ५०, १  
साजी १०, २  
साठि २९, १  
साठी १२, २  
साडी ९, १. ७६, १  
साढापांच ३२, १  
सात २८, १. ५७, २  
सातपरिया १७, २  
सातमउ ३०, २. ५७, १  
सात मसवाडानइ० ७३, १  
सातमि ३१, २



सातू १९, २. ७८, १	सांकली २०, २	सीघउ ७, १
साथ २२, २	सांखडि २०, १	सीप १५, २
साथरउ ३३, १	सांचइ ४२, १	सीयालउ २०, १
साथलि ८, २	सांजउ १८, १	सीर २२, २
साथियउ २५, १	सांझ ३१, २	सीरख ३२, २
सादूल १३, २	सांझणउं ७८, १	सीरवी १७, १
साध ५, १	सांड १३, २	सीरष ६७, १
साध ( थ ? ) ६९, २	सांडसउ १९, २. ३२, २	सीरामण ३२, २
साधइ ३८, २	सांधइ ४१, १	सीरामणु ६६, २
साधुपणूं ५७, १	सांन २४, १	सीलउ १८, २
साधुसंघाडउ २०, १	सांप्रत १५, १	सिली ३२, १
सापरउ २४, २	सांबलउ ३३, २	सीवइ ३९, २. ४९, १
सापु भणी ७३, १	सांभरइ ४१, १	सीविवउ १९, २
साभरमती २२, १	सांभलइ ४७, १	सीव्यउ ५१, १
सामउ १२, २	सांभलिवा वांछइ ८१, १	सीह १३, २
सामलउ १४, २	सांभलीयि ७८, १	सीहदार ११, १
सामहु ६३, २	सांभलेव्युं ५२, २	सीहरी २५, १
सामहुं ७३, २	सांभल्यउ ५०, १	सींग १३, २
सामाई ३१, १	सिघ २४, १	सींगउ १६, २
सामुहु ५६, १	सिढिल १५, १	सींगडी १६, २
साम्हउ ३१, २	सिणमिणइ ४२, २	सींचइ ३७, २. ४८, २
सासु ७३, २	सिमक्रियउ २५, २	सींघव १०, २
सार १६, १	सिमथउ ८, १	सींभ ३४, २
सारद ६, २	सिलापट २४, १	सु ३५, २. ५६, १
सारी १४, १	सिलावटउ १७, १	सुआसणी ७, २
सारीखउ १४, २	सिरघू १९, १	सुई १०, १
साल १६, २	सिरीस २६, १	सुईउ १०, १
सालउ ८, १	सिसलउ १३, २	सुकिवा वांछइ ८१, २
सालणउ ३२, १	सिंगार १५, १	सुखिहिं ७३, १
सालवाहन ३४, १	सिंघाण ११, २	सुण ६८, १
सालवी २३, २	सिंचइ ८०, २	सुणइ ४२, १
साली ८, १	सीअल १७, १	सुभट ७४, २
सावण ६, १	सीकारा १९, १	सुमिणउ १५, १
सास १४, २	सीख २४, २. ३४, २	सुरंग ११, १
सासतउ १४, २	सीखइ ३९, २	सुवर्णनां आभरण ७७, १
सासू ८, १. ६९, १	सीख्यउ ७, १	सुषमाअरउ ६, १
साहइ ४१, १. ७८, १	सीचिवा वांछइ ८१, १	सुसइ ३९, २
सांकडउ १४, २	सीझइ ३८, २	सुसरउ ८, १
साहरइ ४०, १	सीथ २२, २	सुहगुरु ५, १
सांकलउ १५, १	सीदाअइ ४३, १	सुहायइ ४२, १

सुंक ९, २  
सुंघिवा वांछइ ८१, २  
सुंचल ३४, २  
सूअइ ४२, २  
सूअर १३, २  
सूआ २५, १  
सूआडि ६९, २  
सूआर १९, २  
सूइ ४९, २  
सूकइ ४३, १. ४९, १. ८०, २  
सूकउ ५१, २  
सूग २४, १  
सूगडांग ६, २  
सूगामणउ ३१, २  
सूगामणउं ६४, २  
सूजइ ४४, १  
सूजवइ ४४, १  
सूझइ ३८, २ ४६, १  
सूझवइ ४६, १  
सूडउ १४, १  
सूणहर ३३, १  
सूणहरउं ६७, २  
सूतउ २०, १. ४९, २  
सूत्रहार (सूथार) १०, २  
सूत्रु पढइ जाणइ ७७, १  
सूपडउ २०, १  
सूयिवा वांछइ ८१, २  
सूली १६, २  
सूहव ६४, २  
सूरिज ५, २  
सूंआलउ १४, २  
सूंखडी १९, १  
सूंघइ ४१, २. ४७, १  
सूंघवुं ५२, २  
सूंघयउ ५०, १  
सूंड १३, १  
सूंवरी वडी ३४, २  
सूंहाली १८, १  
सेई २१, २

सेकिवा वांछइ ८१, २  
सेजगंडूआ २५, १  
सेठि ७, २  
सेत्रुंजउ ११, २  
सेरी १७, १  
सेना ७५, १  
सेल १६, २  
सेलडी ७७, २  
सेवइ ३९, २  
सेवंती ३३, १  
सेस २३, १  
सेहरउ ९, १  
सेई २४, २  
सेचइ ३७, २  
सेनउ २५, १  
सेनागेरू ११, २  
सेनारउ १८, २  
सेनाररी १९, २  
सेभइ ३९, १  
सेरठी ११, २  
सेल २८, १. ५७, २  
सेलमउ ३०, २  
सेलंकी २१, २  
सेवनगिरि ११, २  
सेवा ३५, २  
सेहामणउ ३२, १  
सेहिलउं ६८, १  
सेहिलुं ५७, १  
सेवइ ४७, १  
सेविउ ५०, २  
सेविवा वांछइ ८२, १  
सेवी ७५, १  
सेवीतणउ समूहु ७६, १  
सेवीनी सभा ७६, १  
सेवीनुं घनु ७६, १  
सेथिरु ७९, २  
सेपर्दइ ४६, १  
सेरइ ७२, २  
सेमारिवा वांछइ ८२, २  
सेयाल १३, २  
सेवस्थपणउ ६, २

ह  
हकारिउ ५०, २  
हगइ ३८, २. ४९, १  
हडहडइ ४३, १  
हणइ ३८, २  
हणिउ ५२, १  
हणिवुं ५३, १  
हथसाल ६८, २  
हथिणाउर ११, १  
हथीयार २६, २  
हरइ ३७, १. ७२, २  
हरडइ १२, २  
हरषइ ३९, २  
हरपी(ष)इ ४९, १  
हराविउ ६९, २  
हरिणनउं चांबडउं ७७, १  
हरियाल ११, २  
हरी २४, १  
हलद ३३, २  
हर्षयउ ५०, १  
हलद्रूआं वडां ७६, १  
हलरी ईस १०, १  
हलुअउ १५, २  
हवइ १८, २. ३५. ३७, १  
हवडां ६२, २  
हवडांनुं ६२, २  
हडवडांनुं (प्र०) ६२, ३  
हवं ६३, २  
हसइ ४३, २. ४८, २. ८०, १  
हसावइ ४८, २  
हसिउ ५१, १  
हसिवा वांछइ ८१, १  
हा (प्र०) ६३, ४  
हाक १७, २  
हाकइ ४०, २. ४४, २  
हाटडी २५, १  
हाड ९, १  
हाडफूटि २५, २  
हाथ ८, २. ३४, २

हाथी १३, १. २५, १	हीलइ ३९, १	हुउ ४९, २
हाथी गुलगुलायइ ४१, १	हीसइ ३९, २	हेजु करइ ४८, १
हाथीयांनउ समूहु ७६, २	हींग ७, २	हेठइ १५, २
हालइ ३९, १	हींगलू ११, २	हेठलि हेठलि नगरु ७३, २
हा वलि ६३, २	हींगवणि २३, १	हेठि ६४, १
हासी १७, २	हींडइ ४३, २	हेठिलुं ५६, १
हांडी १९, २	हींडइं ७५, २	हेडाऊ १६, १
हिडकी ७, २	हींडि २२, २	हेरइ ४१, १
हितूई ७७, २	हींडिया २३, २	हेरू ९, २
हितूउ ७७, १. ७७, २	हींडोलइ ३७, १	हेवउ १९, १
हितूउं ७७, १. ७७, २	हु ७३, १	हैमंतनु वायु ७८, १
हिमालउ ११, २	हुइ ४७, २. १७, २. ८०, १	होउ ६३, २. ८२, २
हियाविउं २६, १	हुइवा वांछइ ८१, १	होठ ८, १
हिवडां २७, १	हुईइ ७१, १	होमइ ७०, १
हिवडांनुं २७, १	हुडुक २३, २	होमिउ ५०, २
हिविडां ५५, २	हुयिवउं ७९, २	[होमिउ] ५१, २
हीअउ ३२, २	हुयिवुं ७९, २	होमिवुं ५४, २
हीकइ ३७, २	हुं ३५, २. ५५, १. ७८, २	होली १८, २
हीम १२, १	हुं छउ ३४, २	हस्वु ७९, २
हीरउ ३५, १	हुंतउ ५६, २	

